thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

वैदिक संसार

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष -४ | अंक- ३ | मासिक-हिन्दी | जनवरी, २०१५ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४४

आजाद हिन्द फौज
का गठन कर सशस्त्र क्रान्ति
तथा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा
व जय हिन्द जैसे क्रान्तिकारी उद्घोषों के माध्यम से देश को
परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त करवाने वाले महानायक, नेता शब्द को
सच्चे अर्थों में सार्थक करने वाले एक मात्र नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के
जन्म दिवस 23 जनवरी पर दिवंगत् महान् आत्मा को कोटि-कोटि श्रद्धासुमन
तथा 66 वें गणतन्त्र दिवस पर समस्त राष्ट्रनिष्ठों को लख-लख बधाईयाँ ...

thearyasamaj.org

उपरोक्त चित्र तथा ईश्वर के सौ नाम, त्रैतवाद, यज्ञ विज्ञान, ब्रह्म चक्र, तैतीस प्रकार के देवता, श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्णचन्द्र जी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एवं स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी आदि के चित्र बड़े आकार में फ्लेक्स पर बने हुए उपलब्ध है

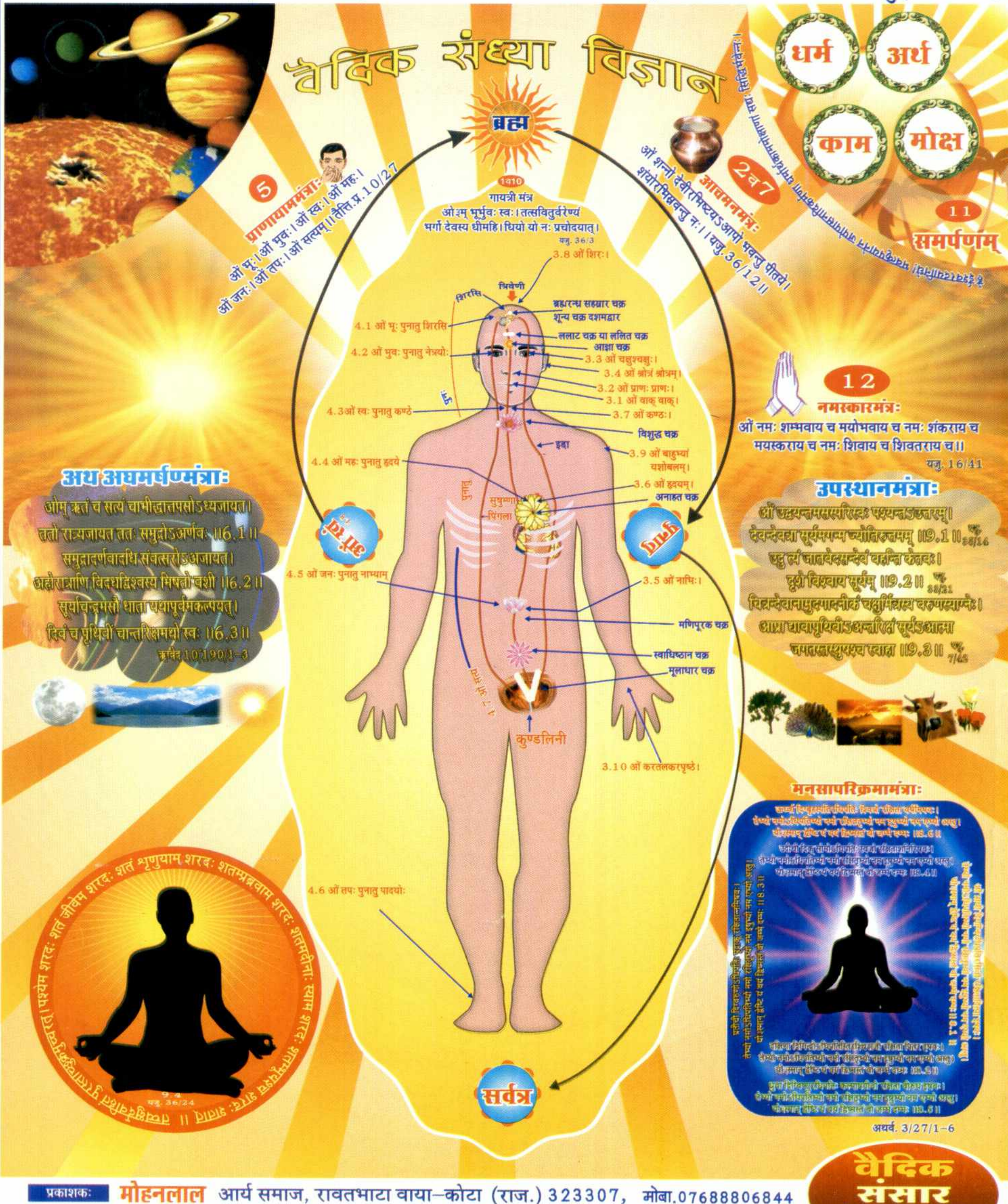

प्रकाशकः **मोहनलाल** आर्य समाज, रावतभाटा वाया–कोटा (राज.) 323307, मोबा.07688806844

कल्पना चित्रणः **ओम प्रकाश आर्य** आर्य समाज, रावतभाटा वाया–कोटा (राज.) मोबा. 09462313797

वैदिक संसार से सम्पर्क करें

thearyasamaj.org

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आर.एन.आई. - एम.पी.एच.आई.एन. २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष- ४, अंक- ०३
अवधि- मासिक, भाषा हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ जनवरी २०१५
प्रकाशन आर्ष तिथि : फाल्गुन, शुक्लपक्ष, षष्ठी
सृष्टि संवत् : १,९७,२९,४९,११६
कलि संवत् : ५,११६
विक्रम संवत् : २०७१, दयानन्दाब्द : १९१

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इंदौर - ०९४२५०६९४९१

संपादक — गजेश शास्त्री — ०९९९३७६५०३१
सह सम्पादक — नितिन शर्मा — ०९४२५९५५१९१

शब्द संयोजन एवं साज सज्जा - कु. भाग्यश्री शर्मा

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश
ई.मेल.-vaidiksansar@gmail.com

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति - २५/-
वार्षिक सहयोग - २५०/- (१२ प्रति)
त्रैवार्षिक सहयोग - ६००/- (३६ प्रति)
आजीवन सहयोग - २,१००/- (१५ वर्ष)
आधार स्तंभ - ११,०००/- (न्यूनतम)
विशिष्ट सहयोग - २५,०००/-
अन्य सहयोग - स्वेच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इंदौर
करंट खाता क्रमांक - ३२८५९५९२४७९
आई.एफ.एस. कोड क्र.-एस.बी.आई.एन.०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अंधकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज - वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ क्र.
कौन कहता है! यह धरा तथा यहाँ के निवासी.....	संपादकीय	०४
वेद मंत्र, भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०५
हमारी महान् विभूतियाँ -वैदिक ऋषिका सरस्वती	शिवनारायण उपाध्याय	०७
- स्वामी दया. और विज्ञान	शिवनारायण उपाध्याय	०८
ऋग्वेद में वृतानुष्ठान	म. चैतन्य मुनि	११
गायत्री मन्त्र एवं जीने की कला	सुरेशचन्द्र दीक्षित	१३
वैदिक संसार की आवश्यक सूचनाएं.....	वैदिक संसार	१४
वेद मन्त्र में सुन्दर मानव शरीर की परिकल्पना.....	आ. भगवानदेव वेदा.	१५
वेद शास्त्रों में ईश्वर-जीव का स्वरूप	कृपालसिंह वर्मा	१७
धर्म परिवर्तन या घर वापसी	नरसिंह सोनी 'आर्य'	१८
मानव स्वास्थ्य के लिए घातक डिस्पोजल	पृथ्वीवल्लभ देव सोलंकी	१८
विश्व संगठन के आधार - मैत्री और समता	प्रो. उमाकान्त उपाध्याय	१९
बच्चों का चरित्र निर्माण क्यों और कैसे ?	नवनीत निगम	२१
जन्मपत्री तथा भविष्यवाणियाँ	पं. मनसाराम वैदिक तोप	२३
अंध विश्वासों से भरा पुलिंदा - गरुड़ पुराण	श्रीमती सुशीला वर्मा	२५
हमारी जंग है - सदाचार बनाम भ्रष्टाचार	सुभाषचन्दर यादव	२७
मानव जीवन को सफल बनाने के स्वर्णिम सूत्र	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	२९
आज का प्रत्येक नेता दुःशासन नजर आता है	डॉ. लक्ष्मी निधि	२९
संविधान लागू होने की ६५वीं वर्षगाँठ......	शैलेन्द्र जौहरी	३०
मौहल्ला	सुभाषनारायण भालेराव	३०
सुरेन्द्र द्वारा नरेन्द्र का राज्याभिषेक	देवनारायण भारद्वाज	३१
हिन्दू वंशज यजदी जमात मिटने के कगार पर	चन्द्रशेखर लोखण्डे	३३
सबसे बड़ी राष्ट्रभक्ति याद करो उन बलिदानियों.....	गोविन्दराम आर्य	३४
लूट का अनोखा अंदाज	चन्द्रगोपाल खले	३५
जांगिड समाज के ताम्रपत्र धारी स्वतन्त्रता सेनानी...	नरेन्द्र कुमार शर्मा	३६
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियाँ	संकलित	३७
आर्य जगत् की विविध गतिविधियाँ	संकलित	३८
.....गतिविधियों का वैदिक संसार साक्षी बना	वैदिक संसार	३९
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियाँ	संकलित	४०
शोक सूचना	संकलित	४२

thearyasamaj.org

संपादकीय

कौन कहता है कि यह धरा तथा यहाँ के निवासी निर्धन है?

जी हाँ श्रीमान! भारत देश की बात हो अथवा भारतवासियों की ये न तो कभी निर्धन थे, न वर्तमान में हैं और भविष्य का पता नहीं। फिर ऐसा क्यूँ सुनाई देता है कि यहाँ के लोग अशिक्षित जंगलों में बसने वाले लोग थे वे ठीक से वस्त्र पहनना भी नहीं जानते थे? उन्होंने विदेशियों से रहन-सहन, खान-पान का ढंग सीखा उसमें भी अंग्रेजों के हम पर बड़े उपकार हैं तथा अंग्रेज़ों के जाने के ६६ वर्षों के बाद भी आए दिन समाचार पत्रों में भुखमरी, बच्चों को बेचे जाने की घटनाओं, बच्चों को चुराने की बढ़ती घटनाओं, बाल एवं महिला उत्पीड़न-शोषण की बेतहाशा घटनाओं, न्याय पाने की राह में जटिलता, देरी व व्यय की अधिकता के कारण न्याय को अन्याय में परिवर्तित हो जाने तथा मनुष्य जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन आदि के विषय में व्यथित करने वाले समाचार आए दिन इस देश की दुर्दशा तथा देशवासियों की बदहाली को उजागर करते प्रकाशित होते रहते हैं। हमारे पास हमारे बच्चों को पढ़ाने के लिये पर्याप्त स्कूल नहीं हैं। कहीं पर खुले मैदान में पेड़ के नीचे पाठशालाऐं संचालित हो रही है तो कहीं एक झोपड़ी में मिडिल तथा हाईस्कूल दोनों लग रहे हैं जिसमें २०० बच्चे तक पढ़ते हैं। तो कहीं जर्जर भवनों की छतें अथवा प्लास्टर नौनिहालों पर गिरते रहते हैं। लगभग सभी स्थानों पर शिक्षकों का अभाव है। जो हैं उन पर शिक्षा के इतर कार्यों और नेतागीरी का इतना बोझ है कि अध्यापन की सेवा भावना ने दम तोड़ दिया है। उनमें मात्र यह भावना घर कर गई है कि जैसे-तैसे अपनी नौकरी पूरी करो और अपना जीवन यापन करो। लड़के-लड़की प्रकृति जन्य भिन्न-भिन्न स्वभाव के होने के तथा स्कूलों में लड़कियों के लिये पृथक् मूत्रालय-शौचालय नहीं होने के बावजूद लड़के-लड़कियाँ साथ-साथ पढ़ने को विवश हैं जिसका परिणाम लड़कियाँ या तो बीच में पढ़ाई छोड़ देती है या फिर कुछ अपवाद छोड़कर राधा-कृष्ण को आदर्श केन्द्र में रखकर रासलीलाएं शुरू हो जाती है तथा मूल लक्ष्य पीछे छूट जाता है। कहीं बच्चे अपने गाँव में स्कूल नहीं होने से कई-कई किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाते हैं तो कई बार बच्चों को बीच रास्ते में पड़ने वाले नदी-नालों को तैरकर स्कूल जाने के भी समाचार आते रहते हैं। और भी ऐसा बहुत कुछ है जो इस देश की शिक्षा की बदहाली की स्थिति पर लिखा जा सकता है ऐसे ही कुछ कारणों से हमारे राजनेता, अधिकारी, उद्योगपति आदि अभिजात्य वर्ग देश की नहीं अपनी चिन्ता करता है क्योंकि उसे तो उसके बच्चों को विदेश पढ़ने या देश में खुले विदेशी महंगे स्कूलों में पढ़ने जो भेजना है। शासकीय स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ने भेजना हीनता का बोध नागरिकों में पैदा करता है गरीबी रेखा के नीचे के कार्डधारी भी अपने बच्चों को निजी महंगे स्कूलों में प्रवेश दिलवाने में गर्व महसूस करते हैं।

मनुष्य जीवन के आवश्यक अंग शिक्षा तथा चिकित्सा में चिकित्सा की स्थिति भी लगभग शिक्षा जैसी ही बदतर है। निम्न आय वर्ग का व्यक्ति ही नहीं मध्यम दर्जे का व्यक्ति भी कोई रोग होने पर सीधा फरियाद लेकर उस तथाकथित पत्थर के जड़ ईश्वर के पास पहुँचता है जो ना सुनता है ना कुछ कर सकता है क्योंकि उसे भी किसी मनुष्य ने बनाया है और उसकी तमाम साज-सम्हाल, सुरक्षा आदि कोई न कोई मनुष्य के करे बगैर नहीं होती है। वैसे यह भी है कि उस जड़ ईश्वर के पास मनुष्य मात्र फरियाद ही करता है विश्वास नहीं! रोगों से मुक्ति हेतु वह ईश्वर व चिकित्सकों से ज्यादा विश्वास बाबाओं, ओझाओं पर करता है तभी तो रामपाल, निर्मल जैसे बाबाओं की दुकानों पर मेला लगा रहता है। मेला तो प्रतिदिन शासकीय चिकित्सालयों पर भी लगा रहता है किन्तु वहाँ की स्थिति भी लगभग सभी जानते हैं वहाँ उपचार करवाने से ज्यादा धक्के खाने पड़ते हैं। औषधि निर्माता-विक्रेता, पैथालाजी केन्द्रों और चिकित्सकों की साँठ-गाँठ किसी से छुपी नहीं है उपचार के नाम पर शिविरों की दशा सर्वविदित ही है जिसमें अनेक लोग अपना जीवन गवाँ चुके हैं या स्थायी अपंगता को अपना चुके हैं। शासकीय चिकित्सालयों में मिलने वाली नि:शुल्क औषधियों की गुणवत्ता पर छत्तीसगढ़ के नसबन्दी शिविर में हुई महिलाओं की मौतों और उसके बाद समाचार पत्रों में औषधियों में चूहामार विष मिले होने के समाचार प्रकाशित होने जैसी घटनाओं के बाद भारतदेश में मानव जीवन कितना सस्ता है सर्वविदित है शिक्षा और चिकित्सा के साथ मनुष्य जीवन की महती आवश्यकता है परिवहन। बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में परिवहन के लिये आवश्यक साधनों का नितांत अभाव है। आवश्यकता होने पर बस-रेल नहीं हैं, हैं तो जगह नहीं है, रेल-बसों में मनुष्य-मनुष्य कम पशु से भी निम्नस्तर दृष्टिगोचर होता है दूरस्थ अंचलों में आज भी यातायात के साधनों के अभाव में शिक्षा नहीं पहुँच पा रही है तथा रोगी मनुष्य समय पर उपचार न मिलने के कारण तड़प-तड़प कर दम तोड़ देता है। शिक्षा, चिकित्सा और परिवहन की सुगम रास्ते से बेहतर पूर्ति के अभाव में मनुष्य येन-केन प्रकारेण पूर्ति के उपाय खोजता है। और जब मनुष्य को उसकी आवश्यकताएं खरीदने से ही प्राप्त हों तो वह क्यों अपनी सेवाऐं अथवा योगदान मुफ्त में किसी के लिये देगा? इस प्रकार उसमें छीन-झपट की प्रवृत्ति जन्म लेगी परिणाम स्वार्थी व्यक्ति का निर्माण होता है जो अपने और अपने परिवार के भविष्य की चिन्ता में आवश्यकता से अधिक संग्रह की प्रवृत्ति का परिग्रही बनता है। जब व्यक्ति स्वार्थी और परिग्रही बनता है तो फिर उसके लिये सत्य-अहिंसा मायने नहीं रखते वह तो एक ही बात जानता है कि धन ही धर्म है वह तो यहाँ तक कहने लग जाता है कि धन के बगैर धर्म भी नहीं होता उसके अन्दर एक घातक प्रवृत्ति जन्म लेती है कैसे भी हो धन जुटाया जावे धन है तो धर्म है, धन है तो प्रतिष्ठा है, धन है तो परिवार का उज्ज्वल भविष्य है, धन है तो चिन्ता मुक्त जीवन है, धन है तो सुख-चैन है।

यहीं से व्यक्ति में लोभ, मोह जैसे मानव पतनकारी दुर्गुण जीवात्मा को जकड़ लेते हैं तथा जहाँ लोभ-मोह अपना स्थान सुरक्षित कर लेते हैं वहाँ उसके कुटुम्ब-कबीले के काम-क्रोध जैसे दुर्गुणों का स्थायी प्रवेश मनुष्य जीवन में होता है और लोभ, मोह, काम, क्रोध जैसे दुर्गुणों में जकड़ा हुआ व्यक्ति भ्रष्टाचारी तथा माफिया बनता है। वह श्रेय मार्ग से भटक प्रेय मार्ग का पथिक बन त्यागवादी के स्थान पर भोगवादी बन जाता है। वर्तमान में भारत देश के वाशिन्दे कुछ अपवादों को छोड़ इस दशा की भेंट चढ़ चुके हैं। पृथिवि के किसी भाग की निर्धारित सीमाओं के अन्दर का भू-भाग देश कहलाता है। वह प्राकृतिक संसाधनों और जलवायु से निर्धन-सम्पन्न प्राकृतिक रूप से ही होता ही है किन्तु उस भू-भाग पर निवास करने वाले मनुष्यों के व्यवहार से वह सर्वाधिक प्रभावित होकर निर्धन-सम्पन्न बनता है। भारत

thearyasamaj.org

देश की बात करें तो प्राकृतिक संसाधन और उत्तम जलवायु का होने से प्राकृतिक रूप से तो यह देश निर्धन है ही नहीं। तथा यहाँ के निवासी भी संख्या में कम नहीं, ज्ञान, कला-कौशल, पुरुषार्थ में किसी से कम नहीं फिर हम निर्धन कैसे हो सकते हैं? अगर आज भारत अथवा भारतीयों की पहचान विश्व समुदाय में निर्धन देश अथवा निर्धन देशवासी की हो रही है तो कुछ कारण तो जरूर हैं आइये विचार करें कि वे कारण क्या हैं?

यह बात और है कि हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और होते हैं। प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता, व्यापक क्षेत्रफल, जनसंख्या में विश्व के दूसरे पायदान पर, हमारे प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी कहते हैं दुनिया की सबसे बड़ी वर्क फोर्स अर्थात् कामगार सेना हमारे पास है, मानव जाति का प्राचीन गौरवशाली इतिहास तथा सांस्कृतिक धरोहरों में हम सबसे आगे, भारतीय दर्शन को विश्वगुरूता का पद प्राप्त, प्राणीमात्र हितैषी तथा विश्व को मार्गदर्शन देने वाले, सेवाभावी, कर्तव्यनिष्ठ, देशभक्त, धर्म-धुरन्धर महापुरुषों की ऐतिहासिक गौरवशाली श्रृंखला हमारे पास होने से यह धरा विश्व समुदाय में हाथी के समान ही है प्रारम्भ में हमने जो चर्चा की वह हाथी के दिखने वाले दाँत तो हो सकते हैं किंतु प्रत्येक विषय के दो पहलू होते हैं आईये हम दूसरे पहलू पर विचार करे।

किसी भी देश का निर्माण भौगोलिक सीमाओं से होता है किंतु राष्ट्र का निर्माण भौगोलिक सीमाओं से परे राष्ट्रीय मूल्यों से होता है। राष्ट्रीय मूल्यों की जड़ों को मजबूती प्रदान करने में उस राष्ट्र की संस्कृति-शिक्षा का अहम् योगदान होता है। जिसे वर्तमान में हम भारतीय दर्शन अथवा संस्कृति कहते हैं यह वैदिक काल से सुसम्पन्न और सुदृढ़ रहा है। ऋषि दयानन्द के कथनानुसार ब्रह्म से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त वैदिक धर्म का सर्वोत्कृष्ट इतिहास रहा है जिन्होंने त्यागमय जीवन व्यतीत करते हुए वेद की ऋचाओं के आधार बनकर गूढ़ अन्वेषण कर मानव जाति को अनुपम उपहार दिये। ब्रह्मा, विश्वकर्मा, गौतम, कणाद, कपिल, पाणिनि, पतंजलि, वराहमिहिर, मनु, जैमिनी आदि अनेक ऋषि-महर्षियों की लम्बी श्रृंखला का गौरवशाली इतिहास उस समय का है जब यह भू-भाग आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था और आर्य चक्रवर्ती सम्राट् होते थे। चक्रवर्ती सम्राटों की श्रृंखला में अन्तिम सम्राट् महाराजा युधिष्ठिर हुए हैं। महाभारत काल तक आर्यावर्त देश और वैदिक सभ्यता के इतर किसी अन्य देश तथा सभ्यता का अस्तित्व ही नहींथा। करीब दस लाख वर्ष पूर्व रामकाल में पुष्पक विमान जैसे विमान होने का परिचय वाल्मीकि रामायण से प्राप्त होता है। रामसेतु उस काल का सर्वोत्कृष्ट वैज्ञानिक निर्माण है जो लाखों वर्षों बाद भी समुद्र के पानी में आज भी सुरक्षित है। महाभारत काल की बात करें तो संजय द्वारा धृतराष्ट्र को युद्ध का आँखों देखा वर्णन युद्ध स्थल से दूर राजमहल में बताना इंटरनेट-दूरसंचार जैसी ही तो कोई तकनीक रही होगी। १८ अक्षोहिणी अर्थात् करीब ५० लाख के लगभग की संख्या के सम्पूर्ण भू-भाग के भाग लेने वाले वीरों का मात्र १८ दिनों में वीर गति को प्राप्त होना यह विचार करने को विवश करता है कि उनके पास वे कौन से आयुध थे? जिनसे इतने कम समय में इतने अधिक लोग मौत के मुँह में समा गये। कहीं आग्नेयास्त्र कहे जाने वाले वे हथियार मिसाईल जैसे ही हथियार तो नहीं? युधिष्ठिर द्वारा निर्मित महल जिसमें जल विहिन स्थान पर भी जल तथा द्वार विहिन स्थान पर द्वार नजर आता था।

दुर्योधन द्वारा शत्रुभाव रखते हुए अपने ही भाईयों को मार डालने हेतु लाक्षागृह (लाख का महल) बनवाया और उसके षड़यंत्र की जानकारी मिलने पर उस आग की लपटों से घिरे महल से सुरक्षित बाहर निकल जाना आदि हजारों वर्ष पूर्व घटित घटनाओं से उस काल के लोगों में विलक्षण वैज्ञानिक ज्ञान का परिचय प्राप्त होता है। इस उत्कृष्ट ज्ञान-विज्ञान के होते हुए कहीं से कहीं तक इस भू-भाग को तथा यहाँ के निवासियों को निर्धन कैसे कहाँ जा सकता है? ऐसे ही कुछ कारणों से भारत सोने की चिड़िया प्रसिद्ध था। इस गौरवशाली युग का पराभव हुआ महाभारत युद्ध के पूर्व से गुरुकुलों में रहकर वेद-शास्त्रों की शिक्षा ग्रहण करने वालो के वैदिक मर्यादाओं के विपरीत आचरणों से। देवव्रत ने वैदिक मर्यादा विरुद्ध अपने पिता शान्तनु के विवाह करवाने हेतु आजीवन ब्रह्मचारी रहने की भीष्म प्रतिज्ञा की और भीष्म पितामह नाम पाया। दुष्कपटी मामा शकुनी की स्वार्थी-कपटी दुर्भावनाओं के जाल में फंसकर दुर्योधन ने सत्ता लोभ का शिकार होकर वैदिक मर्यादा विरुद्ध अपने भाइयों से द्रोह किया। महाराजा युधिष्ठिर ने धर्मराज जैसे उपाधि के बावजूद वैदिक मर्यादा विरुद्ध जुआ खेलने जैसा पतनगामी खेल खेला। आचार्य द्रोण जैसे वैदिक विद्या वेत्ता गुरुकुल छोड़ वैदिक मर्यादा विरुद्ध धृतराष्ट्र के दरबार की हाजिरी बजाने लगे धृतराष्ट्र जैसे आँख के ही नहीं अक्ल के अंधों के कारण वैदिक मर्यादाओं के विरुद्ध पुत्र मोह में जकड़े शासकों के समुचित निष्पक्ष निर्णय नहीं कर पाने के कारण वैदिक मर्यादाओं के विपरीत स्वार्थों, कुटिलताओं दुर्गुणों और दुर्भावनाओं के टकराव का परिणाम मानव मात्र के हितकारी वैदिक धर्म के पतन का कारण महाभारत जैसा महाविनाशकारी युद्ध होना है। जिसे भीष्म पितामह, श्री कृष्ण, नीति वेत्ता विदुर, धर्मराज युधिष्ठिर, आचार्य द्रोण, धृतराष्ट्र जैसे महापुरुष इस युद्ध को रोकने में सक्षम होते हुए भी नहीं रोक सके। वैदिक मर्यादाओं और आर्यों के पतन में महाभारत की प्रमुख भूमिका है। इसके पश्चात् ही

वेद मंत्र एवं भावार्थ

ओ३म् उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब।
गोदा इद्रेवतो मदः ।। ऋग्वेद १/४/२

भावार्थ - जिस प्रकार सब जीव सूर्य के प्रकाश में अपने-अपने कर्म करने को प्रवृत्त होते हैं, उस प्रकार रात्रि में सुख से नहीं हो सकते। - **महर्षि दयानन्द सरस्वती**

वैदिक संसार के उद्देश्य

* महान् योगी संन्यासी, महर्षि, अखंड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, नवजागरण के सूत्रधार, अछूत एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खंडन-मंडन के प्रणेता, अंधविश्वास नाशक, पाखंड खंडनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, सत्यार्थ प्रकाश एवं सद्साहित्य प्रकाशक, दयालु, दिव्य दयानंद के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
* वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धांतों, ऋषि दयानंद प्रणीत संदेशों को प्रकाशित करना।
* आमजन में व्याप्त अशिक्षा, धर्मान्धता, अंधविश्वास, पाखंड, कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
* आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, संदेशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
* आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

thearyasamaj.org

परिवर्तनशील वर्ग व्यवस्था समाप्त होकर इसके स्थान पर जन्मगत् जाति व्यवस्था ने ले लिया। जब ब्राह्मण के घर में जन्म लेने मात्र से पुत्र ब्राह्मण नहीं होकर योग्यता अर्जित करने पर योग्यतानुसार समावर्तन संस्कार द्वारा गुरु द्वारा शिष्य का वर्ण निर्धारण कर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बनता था तो बताओ छूआ-छूत और शोषण उत्पीड़न कैसे? जब बालक-बालिका ७ वर्ष पश्चात् उपनयन व वेदारम्भ संस्कार द्वारा निःशुल्क विद्या अर्जन हेतु गुरुकुल भेज दिया जाता हो तो धन-सम्पत्ति का संग्रहण किसके लिये और क्यों करें? समावर्तन संस्कार पश्चात् न्यून से न्यून २५ वर्ष पश्चात् समान गुण-कर्म-स्वभाव अर्थात् समान वर्ण के युवक-युवति का विवाह संस्कार होता हो तो जातिप्रथा, दहेज प्रथा कहाँ से आयी? मानवमात्र की इस गौरवशाली इतिहास और संस्कृति सभ्यता को पुष्ट करने के प्रमाणों की १००० वर्ष के परतंत्रता काल में महीनों जलने वाली होलियाँ जलाई गई। इन्हें नष्ट और विकृत करने का पुरजोर प्रयास किया गया। जिसके अभाव में मतान्ध, हठी, दुराग्रही, स्वार्थी, अविद्यादि दोषों में जकड़े मनुष्य मानव जाति के ज्ञान-विज्ञान के परचम फहराने वाले उस स्वर्णिम युग, वैदिक दर्शन तथा उत्कृष्ट इतिहास को कपोल कल्पित बताने का दुःसाहस करते हैं तथा अन्य विधर्मी अनार्य आक्रांताओं की श्रेणी में रखकर आर्यों को भी बाहर से आया हुआ लुटेरा और आक्रांता कहने तथा दुष्प्रचारित करने का दुष्कृत्य करते हैं। महाभारत युद्ध के पश्चात् वैदिक धर्म मर्यादाओं के अभाव में उपजे मत-पन्थों, जातिवादी उच्च निम्न वर्ग के भेदभाव कुरीतियों और कुप्रथाओं, बहु ईश्वरवाद, उपासना पद्धति, आहार, पहनावा के अनैक्यवाद को आधार बनाकर अंग्रेजों द्वारा सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत बनाने तथा अपने विरुद्ध बिगुल बजाने वालों की शक्ति को छिन्न-भिन्न कर आपस में उलझाने के लिये फूट डालो और राज करो की नीति के अंतर्गत यहाँ के निवासियों में आर्यों को बाहर से आने का झूठ प्रचारित किया और इतिहास में प्रक्षिप्त किया। जिसे देश की स्वतंत्रता के पश्चात् भी सत्ताधारी कांग्रेस ने इस झूठ के कलंक को इतिहास तथा इस धरा से मिटाने का कोई प्रयास नहीं किया उल्टे अंग्रेजों की नीति पर चलते हुए वोट बैंक की राजनीति करते हुए कांग्रेस ने भारतीय समाज को बाँटने वाला जातिगत आरक्षण लागू कर राष्ट्र के लिये घातक जातिवाद की विष बेल को खाद-पानी दिया तथा उत्कृष्ट मानव जीवन दर्शन की संस्कृति को स्थापित करने हेतु शिक्षा में कोई स्थान देने का कोई प्रयास नहीं किया उल्टे देश की स्वतंत्रता के अनेक वर्षों बाद मानव मात्र की धर्म-संस्कृति की प्राण सब भाषाओं की जननी संस्कृत को तीन अनिवार्य भाषाओं की सूची से बाहर कर विदेशी जर्मन, अंग्रेजी भाषाओं को राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ अनिवार्य भाषाओं में स्थान दिया। कांग्रेस को मानव मात्र हितकारी इस धरा की मूल संस्कृति से कहीं अधिक अनार्य विधर्मी विदेशी मतों के हितों की अधिक चिन्ता रही। उन्हें अल्पसंख्यक की श्रेणी-सुविधाओं से उपकृत कर अतिथियों की तरह मान-सम्मान दिया गया। स्पष्ट है कि धर्म-संस्कृति राष्ट्र हितों से ज्यादा वोट बैंक का ध्यान रखा जाकर देश को रसातल में पहुँचाया गया। इन्हीं कारणों के चलते ६६ वर्षों की स्वतंत्रता के बाद इस धरा के वासी मतवाद, जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, वर्गवाद, आर्थिकवाद के चलते अंदर ही अंदर इतने विभक्त हैं कि ऐसा प्रतीत नहीं होता कि अनेकता में एकता के उद्घोष करने वाले कभी एक हो पायेंगे।

अत्यन्त दुर्भाग्य है कि सामान्यजन ही नहीं शिक्षित कहे जाने वाले उच्च पदों को सुशोभित करने वाले अधिकारी-राजनेता भी इस अनैक्यवाद की मानसिक व्याधि में जकड़े हुए हैं। सवर्णों को आर्य और निवासियों से पृथक बाहर से आया हुआ विदेशी बताकर समाज को बांटने का कार्य करते हैं और विधर्मी मतों को अपनी जड़ें जमाने में सहयोग करते हैं हमारा उनसे प्रश्न है कि इस्लाम अरब क्षेत्र से उत्पन्न होकर इस धरा पर आया ईसाई मत यूरोप के अंग्रेजों के माध्यम से इस धरा पर आया, अगर आर्य बाहर से आये तो बाहर के किस स्थान से यहाँ आये? उनकी मूल भाषा संस्कृत थी या नहीं और संस्कृत थी तो यहाँ के निवासियों की मूल भाषा क्या थी? करीब १० लाख वर्ष पूर्व जन्मे राम और उनके पूर्व के ऋषि-मुनियों के जन्मे स्थान कहाँ के थष्ट? क्या ये सब इस धरा से कहीं और जन्म थे? जब आश्रम व्यवस्थाएं लागु थी अर्थात् ७ वर्ष तक का बालक अपने माता-पिता के संरक्षण में रहने के उपरांत ब्रह्मचर्य आश्रम लगभग २५ वर्ष आयु तक गुरु के आश्रम में भोजन-वस्त्र, पुस्तकें, उपचार आदि की चिन्ता से माता-पिता तथा बालक भी मुक्त, विद्याअर्जन उपरांत गृहस्थाश्रम में प्रवेश ग्रहस्थाश्रम सभी आश्रमों में ज्येष्ठ और श्रेष्ठ है क्योंकि मात्र स्वयं पति-पत्नि और संतान का पेट भरने की जिम्मेदारी ही नहीं वरन गुरुकुलों के संचालन वानप्रस्थियों, संन्यासियों के चिन्तामुक्त अपने कार्य को संचालित करने की जिम्मेदारी गृहस्थियों की होती थी। इसके पश्चात् अर्थात् पुत्र का पुत्र होने के बाद गृहस्थ आश्रम में जो लोभ-मोह-काम-क्रोध उत्पन्न हुआ था उससे छुटकारा पाने हेतु वसुधैव कुटुम्बकं की भावना को हृदयंगम् कर वन को प्रस्थान करने वाला वानप्रस्थ आश्रम होता था जिसमें मनुष्य स्वयं की चिन्ता से मुक्त वसुधा भर के प्राणियों की सेवार्थ अपना जीवन समर्पित कर देता था। वानप्रस्थ आश्रम का निर्वाह करते हुए इतना वैराग्य भाव विकसित हो जावे कि आत्मा और परमात्मा का संबंध ही शेष रहे अर्थात् मैं मात्र एक आत्मा हूँ मेरा सम्बन्ध एक मात्र मेरे परम् पिता परमात्मा से है इस संसार का पिता मेरा परमात्मा होने से सम्पूर्ण संसार मेरा तथा मैं इस सम्पूर्ण संसार का हूँ और मेरे परमपिता परमात्मा की समस्त सन्तान मेरे बन्धु हैं मैं उनका और वे मेरे हैं। और इस संसार से प्रस्थान कर आगामी जीवन यात्रा की तैयारी में ही शेष जीवन व्यतीत करना संन्यास आश्रम कहलाता था। यह जीवन दर्शन भारतीय दर्शन और श्रेय मार्ग कहलाता था जो इहलोक के साथ परलोक को भी प्रगतिगामी बनाता था। यही मार्ग मानव की शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति का पथ था जिसे महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के ६ठे नियम में आर्य समाज के लक्ष्य के रूप में इस प्रकार स्पष्ट किया है **''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।''** महर्षि का यह लक्ष्य संसार की उन्नति का लक्ष्य था न कि व्यक्ति विशेष अथवा समुदाय विशेष अथवा भोगोलिक सीमा क्षेत्र विशेष से जुड़े लोगों के लिये उन्होंने आर्य समाज के नौवें नियम में संसार के प्रत्येक मनुष्य को निर्देशित किया है कि **''प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।''**

इतने उत्कृष्ट जीवन दर्शन की धरा और उस दर्शन से जुड़े लोग कैसे लोभी-लुटेरे, मोही-स्वार्थी, कामी-भोगी, क्रोधी- दुराग्रही तथा निर्धन हो सकते हैं? अगर है तो उसके कुछ कारण हो सकते हैं यथा- आज कुछ अपवाद छोड़कर अधिसंख्य व्यक्ति प्रेय मार्ग के पथिक हैं श्रेय मार्ग के नहीं! इसी कारण उसके लिये धर्म प्रथम स्थान पर न होकर धन प्रथम

thearyasamaj.org

स्थान पर है। वह ज्ञान का भक्त नहीं धन का भक्त है। ईश्वर के दिशा निर्देशों के अनुरूप तंपस्वी अर्थात संघर्षशील नहीं बल्कि ईश्वर को अपने आदेशानुसार चलाने वाले प्रतीत होते हैं। सर पर छत नहीं है, बच्चे नंगे घुम रहे हैं, घर के चूहे भूखे मर रहे हैं किंतु बींड़ी-सिगरेट, शराब, गाँजा, भांग, मांसाहार आदि के लिये कोई कमी नहीं है। बच्चों कि लिये शिक्षा, धर्मपत्नी के लिये पैसे नहीं है किन्तु तथाकथित तीर्थ यात्राओं, मेले-ठेले, तथाकथित ढोंगी बाबाओं की झूठी कृपा दृष्टि के लिये पैसा है काम-धन्धा छोड़कर बाबाओं को भेंट चढ़ा रहे हैं सो अलग।

आज देश का अधिसंख्य व्यक्ति मानवतावादी आचरण में नहीं धार्मिक दिखने की और दौड़ रहा है। चोटी, तिलक, माला, कण्ठी तथा गेरूए वस्त्र धारण कर दूसरों से जबरन चंदा वसूली कर भण्डारे धार्मिक आयोजन कर, ढोल-नगाड़े, डी.जे. बजाकर दूसरों की शान्ति भंग कर वह समझ रहा है इस दुनियाँ में उससे बड़ा धार्मिक व्यक्ति कोई नहीं है। ईश्वर की कृपा वाली पंक्ति में वह अपने आपको प्रथम स्थान पर समझ रहा है। मुस्लिम आक्रांताओं के द्वारा मन्दिरों को ध्वस्त किये जाने, उन मन्दिरों के खजानों को लूटे जाने के इतिहास से उसने कोई सबक नहीं लिया आज देश में स्कूल अस्पताल हों या न हों लोगों को सर छुपाने की जगह हो न हो, सर्द रातों में ठंड से ठिठुर कर लोग मर रहे हो तो उनकी बला से किन्तु भव्य विशाल मन्दिरों की बाढ़ देश में आयी हुई है। हमारे महामहिम जी ने हाल ही में वृन्दावन में ४०० करोड़ रुपये से निर्मित होने वाले चंद्रोदय मन्दिर की आधार शिला रखी है जो विश्व में सबसे ऊँचा ७० फुट का मंदिर होगा। हमारी सरकारों का समाज को दीमक की तरह चाट रहे तथाकथित बाबाओं को नकेल कसने की हिम्मत तो नहीं पड़ती उल्टे उनके चेले-चेलियों की वोट कृपा के लिये विशाल भूखण्डों का अल्प मूल्य पर आवंटन करते तथा बाबाओं के चरणों में दण्डवत करते हमारे राजनेता यत्र-तत्र सर्वज्ञ दृष्टि गोचर होते हैं।

धूर्तों के गठजोड़ों और सत्तासीनों की दृढ़ इच्छा शक्ति के अभाव में ही जातिवाद, वर्गवाद, भाषावाद, पूंजीवाद तथा पशुवाद फल-फूल रहा है तथा राष्ट्रवाद कहीं खो गया है। दीनता के दास बने हुए हैं।

सार रूप में यह धरा और यहाँ के निवासी किसी भी रूप में निर्धन नहीं हैं अगर हैं तो आत्मिक बल के दरिद्र हैं और आत्मिक बल ऋषि के बताये मार्ग **'वेदों की ओर लौटो'** के बगैर संभव नहीं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है प्रभो तुम ही दयानन्द जैसी कोई दिव्यात्मा को भेजो जो इस तथाकथित दीन-हीन दशा को दूर कर सकें। ●

वैदिक ऋषिका सरस्वती

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

सरस्वती को ब्रह्मा की पुत्री माना जाता है। इसे विद्या की देवी के रूप में भी समाज में माना जाता है। सरस्वती का ऋग्वेद और यजुर्वेद दोनों में नाम पाया जाता है। यजुर्वेद अध्याय २८ के मंत्र संख्या २४, २५ व २६ की वे दृष्टि हैं। तीनों मंत्रों में अलग-अलग विषय है।

होता यक्षत्समिधानं महद्यशः सुसिद्धं वरेण्यमग्निमिन्द्रंवयोधसम्।
गायत्री छन्दं इन्द्रियं त्रयविं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज।।

- यजु. २८/२४

पदार्थ :- हे **(होतः)** विद्यादि ग्रहण करने वाले जन। आप जैसे **(होता)** दाता पुरुष **(अग्निम्)** अग्नि के तुल्य **(समिधानम्)** सम्यक् प्रकाशमान **(सुसमिद्धम्)** सुन्दर शोभायमान **(वरेण्यम्)** ग्रहण करने योग्य **(महत्)** बड़ा **(यशः)** कीर्ति **(वयोधसम्)** अभीष्ट अवस्था के धारक **(इन्द्रम्)** उत्तम ऐश्वर्य करने वाले योग **(गायत्रीम्)** सत्य अर्थों का प्रकाश करने वाली गायत्री **(छन्दः)** स्वतंत्रता **(इन्द्रियम्)** धन अथवा श्रोत्रादि इन्द्रियां **(त्र्यविम्)** तीन प्रकार से रक्षा करने वाली **(गाम्)** पृथ्वी और **(वयः)** जीवन को **(दधत्)** धारण करता हुआ **(यक्षत्)** संग करे और **(आज्यस्य)** विज्ञान के रस को **(वेतु)** प्राप्त होवे वैसे आप भी **(यज)** समागम कीजिए।

भावार्थ :- इस मंत्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो पुरुष समाज को सत्य विद्या का दान करते हैं वे अतुल कीर्ति प्राप्त करते हैं।

होता यक्षत्तनूनपातमुद्भिदं यं गर्भ मदितिर्दधे शुचिमिन्द्र वयोधसम्।
उष्णिहं छन्द इन्द्रियं दित्यवाहं गां त्रयी दधद्वेत्वार्त्यस्य होतर्यज।।

- यजु. २८/२५

पदार्थ :- हे **(होतः)** ज्ञान के यज्ञ के कर्ता। जैसे **(होता)** शुभ गुणों का ग्रहण करने वाला जन **(तनूनपातम्)** शरीरादि के रक्षक **(उद्भिदम्)** शरीर का भेदन कर निकलने वाले **(गर्भम्)** गर्भ को जैसे **(अदितिः)** माता धारण करती है वैसे **(यम्)** जिसको **(दधे)** धारण करता है **(वयोधसम्)** अवस्था के वर्धक **(शुचिम्)** पवित्र **(इन्द्रम्)** सूर्य को **(यक्षत्)** हवन का पदार्थ पहुँचता है। **(आज्यस्य)** विज्ञान सम्बन्धी **(उष्णिहम्)** उष्णिक छन्द में कहे हुए **(छन्दः)** बलकारी **(इन्द्रियम्)** श्रोत्रादि इन्द्रियों और **(दित्यवाहम्)** खण्डितों को पहुँचाने वाले **(गाम्)** वाणी और **(वयः)** सुन्दर पक्षियों को **(दधत्)** धारण करता हुआ **(वेतु)** प्राप्त होवे वैसे इन सबको आप **(यज)** संगत कीजिए।

भावार्थ :- इस मंत्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। हे मनुष्यों! जैसे माता गर्भ और उत्पन्न हुए बालक की रक्षा करती है। वैसे आप लोग शरीर और इन्द्रियों की रक्षा करो।

होता यक्षदिडेन्यमीडितं वृत्रहन्तममिडाभिरीड्यं सह सोममिन्द्रं वयो धसम्।
अनुष्टुमं छन्द इन्द्रियं पञ्चाविं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज।।

- यजु. २८/२६

पदार्थ :- हे **(होतः)** यज्ञ करने वाले जन। जैसे **(होता)** शुभ गुणों का ग्रहीता पुरुष **(वृत्रहन्तमम्)** मेघ को काटने वाले सूर्य को जैसे वैसे **(इडाभिः)** अच्छी शिक्षित वाणियों से **(ईडेन्यम्)** स्तुति करने योग्य **(ईडितम्)** प्रशंसित **(सहः)** बल **(ईड्यम्)** प्रशंसा के योग्य **(सोमम्)** सोमादि ओषधियां और **(वयो धसम्)** मनोहर वाणियों के धारक **(इन्द्रम्)** जीवात्मा को **(यक्षत्)** संगत करे और **(इन्द्रियम्)** श्रोत्रादि **(अनुष्टुभम्)** अनुकूल थांमने वाली **(छन्दः)** स्वतन्त्रता से **(पञ्चाविम्)** पांच प्राणों की रक्षा करने वाली **(गाम्)** पृथ्वी और **(आज्यस्य)** जानने योग्य जगत् के बीच **(वयः)** अभीष्ट वस्तु को **(दधत्)** धारण करता हुआ **(वेतु)** प्राप्त होवे वैसे आप इन सबको **(यज)** संगत कीजिए। ●

thearyasamaj.org

गतांक से आगे....

स्वामी दयानन्द और विज्ञान

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

अब हम स्वामी दयानन्द द्वारा गृह निर्माण के विषय में वर्णित विचारों का अध्ययन करते हैं। स्वामी जी ने इस विषय पर संस्कार विधि में मुख्य रूप से लिखा है। उन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा पारस्कर गृह्य सूत्र से सामग्री लेकर गृह निर्माण कला को वैज्ञानिक मान्यता अनुरूप रखने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। उनके अनुसार गृह निर्माण करते समय सबसे प्रथम कार्य उसके लिए भूमिका चयन करना है। वेदों में कहा गया है कि मकान ऊँची भूमि का चयन करना है। वेदों में कहा गया है कि मकान ऊँची भूमि पर बनाया जावे जहाँ पर वह दीर्घ काल तक सुरक्षित रह सके। यह स्थान श्मशान, अस्पताल तथा भीड़भाड़ वाले स्थान से दूर हो जिससे कि रोगाणुओं से बचे रहकर शान्त वातावरण में शान्ति से रहा जा सके।

दूसरा मकान का प्लाट बड़ा हो तथा उसके ४०% भाग पर निर्माण करवाया जावे तथा शेष भाग रिक्त छोड़ दिया जावे, जिससे मकान में रहने वालों को शुद्ध हवा, प्रकाश और धूप मिलती रहे।

तीसरे मकान में कमरे इतने बड़े हों कि उनमें बोलने से शब्द की प्रतिध्वनि सुनाई दे। साथ ही कमरों की ऊँचाई भी अधिक होवे। मकान में एक बैठक गृह स्वामी तथा अतिथियों के लिए, एक बड़ा कमरा बच्चों के लिए, एक कमरा स्वाध्याय के लिए, दो कमरे महिलाओं के सोने बैठने के लिए, एक भण्डार गृह सामान रखने के लिए, एक रसोई घर आदि हों। साथ ही एक देवालय भी हो जिसमें यज्ञशाला भी बनी हो। वेदों में संगीत कक्ष का भी वर्णन मिलता है। सभी निर्मित कमरे आदि इस प्रकार हों कि उनमें हवा एवं प्रकाश प्रचुरता से पहुँचता रहे।

चौथे मकान प्रतिमान युक्त तथा परिमाणयुक्त भी हो। स्वामीजी ने अथर्ववेद के आधार पर मकान परिमित, सममित बनाने को कहा है। जिसे आजकल सीमेट्री कहते हैं उसका ध्यान रखा जाना आवश्यक है। मकान की लम्बाई दोनों तरफ एक हो तथा चौड़ाई भी आगे पीछे एक ही हो। दीवारें पृथ्वी की सतह पर लम्बवत् खड़ी हों। सभी प्रकार कमरे चौरस हों। दरवाजे आमने-सामने तथा एक ही ऊँचाई के हों। खिड़कियां एक ही ऊँचाई पर तथा बराबर लम्बाई चौड़ाई की हों।

पाँचवे छतें ऊँची हों। हर दरवाजे और खिड़की पर पांचवे छते ऊँची हो। हर दरवाजे और खिड़की पर मजबूत किवाड़ लगाये जावें जिनमें सांकल कुन्दों की व्यवस्था हो। मकान चोरों के लिए अलंघ्य हो। उसके दरवाजे आदि इस प्रकार के हो कि उनमें से सरीसृप अन्दर प्रवेश नहीं कर सकें। मकान का सम्मुख भाग सबसे सुन्दर तथा कलापूर्ण होवे।

अब हम स्वामी दयानन्द द्वारा प्रयुक्त मन्त्रों द्वारा इस विषय पर विचार करते हैं। शाला हेतु स्थान चयन कर लेने बाद कहते हैं

इहैव ध्रुवां निमिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठति घृतमुक्षमाणा।
तांत्वा शाले सर्ववीराः सुवीरां अरिष्टवीराः उप संचरेम।।

– अथर्व. ३.२.१

(**इह एव**) यहाँ पर ही (**ध्रुवाम्**) ठहराऊँ (**शालाम्**) शाला को (**निमिनोमि**) जमा कर बनाता हूँ। वह (**घृतम्**) घी (**अक्षमाणा**) सींचती हुई (**क्षेमे**) लब्ध वस्तु की रक्षा में (**तिष्ठति**) ठहरी रहे। (**शाले**) हे शाला। (**ताम् त्वा**) उस तुझमें (**उप**) आकर (**सर्ववीराः**) सब वीर पुरुष वाले (**सुवीरा**) अच्छे अच्छे पराक्रमी पुरुष वाले और (**अरिष्ट वीराः**) नीरोग पुरुषों वाले (**संचरेम**) हम चलते फिरते रहें।

गृह निर्माण के स्थान पर फिर शिलान्यास करते हैं-

ओ३म् स्योनं ध्रुवं प्रजायै धारयामितेऽश्मानं देव्याः पृथिव्या उपस्थे।
तमातिष्ठानुमाद्या सुवर्चा दीर्घं च आयुः सविता दधातु।।

– अथर्व १४.१.४७

पदार्थ-हे भूमिमातः! (**ते**) तुझ (**देव्याः**) दिव्य (**पृथिव्याः उपस्थे**) पृथ्वी की गोद में (**स्योनं**) सुख देने वाली (**ध्रुवं अश्मानं**) इस अचल शिला को (**प्रजायै**) वृद्धि के लिए (**धारयामि**) रखता हूँ। (**अनुमाद्या सुवर्चाः**) मुझ द्वारा हर्षित वा स्तुति करने योग्य वर्चस्विनी तू (**तम् आतिष्ट**) इस शिला को ठहराये रख। (**सविता**) संसार की हर वस्तु का प्रसव करने वाला भगवान् (**ते आयुः**) हे शिला। तेरी आयु को (**दीर्घ कृणोतु**) दीर्घ करे। दृढ़ शिला से यह शाला दीर्घ काल तक बनी रहे।

गृह निर्माण में सीमेट्री का ध्यान रखा जावे, इस पर वे वेद का निम्न मन्त्र प्रस्तुत करते हैं।

उपमितां प्रतिमितामथो परिमितामुत।
शालाया विश्ववाराया नद्धानि विन्वृतामसि।। अथर्व ९.३.१

पदार्थ-(**विश्ववाराय**) सब ओर द्वारों वाली (**शालायः**) शाला की (**उपमिताम्**) सराहने योग्य (**प्रतिमिताम्**) प्रतिमानयुक्त जिसकी आमने सामने की दीवारें, द्वार, खिड़कियां आदि सब एक माप में हों (**अथो**) और भी (**परिमिताम्**) परिमाणयुक्त चारों ओर से माप कर चौरस की हुई बनावट को (**उत**) और (**नद्धानि**) बन्धनों, चिनाई, काष्ट आदि के मेलों को (**विचृतामसि**) हम अच्छे प्रकार ग्रंथित करते हैं।

भावार्थ-भवन प्रशंसा योग्य, प्रतिमान युक्त तथा परिमाण युक्त होना चाहिये। दीवारें पृथ्वी पर लम्बवत् हों तथा हर कमरे के कोने आदि सही हो।

इसी विषय पर आगे वेद में कहा गया है-

आयमाम सं बबई ग्रन्थीश्चकार ते दृढ़ान।
परूंषि विद्वांछस्तेवेन्द्रेण विचृतामसि।। अथर्व. ९.३.३

पदार्थ-उस शिल्पी ने (**ते**) तेरी (**ग्रन्थिन**) गांठों को (**आयमाम**) फैलाया है। (**सम् बबई**) मिलाया है (**दृढ़ान्**) दृढ़ (**चकार**) किया है (**परूंषि**) जोड़ों को (**विद्वान्**) विद्वान् (शास्ता इव) चीर फाड़ करने वाले वैद्य के समान हम लोग (**इन्द्रेण**) ऐश्वर्य के साथ (**वि**) विशेष करके (**चृतामसि**) बांधते हैं।

भावार्थ-मकान में छत के पास, दीवारों के कोनों खिड़कियों और दरवाजों आदि के बन्धन ठीक होने चाहियें। ऐसा होने से मकान की

thearyasamaj.org

आयु भी बढ़ जाती है।

गृह निर्माण में नवीनतम शैली पर भी ध्यान दिया जावे।

प्र पूर्वजे पितरा नव्यसीभिर्गीभिः कृणुध्वं सदने ऋतस्य।
आनो द्यावा पृथिवी दैव्येन जनेनयातं महिवां वरूथम्।

– ऋ. ७.५३.२

पदार्थ–हे शिल्पीजनो! तुम (**नव्यसीभिः**) अति नवीन (**गीर्भिः**) सुशिक्षित वाणियों से (**ऋतस्य**) सत्य वा जल के सम्बन्ध में (**सदने**) स्वास्थ्य जिनमें स्थिर होते हैं वे (**पूर्वजे**) आगे से उत्पन्न हुए (**पितरा**) माता पिता के समान वर्तमान (**द्यावापृथिवी**) भूमि और विद्युत (**दैव्येन**) विद्वानों से बनाये विद्वान् (**जनेन**) प्रसिद्ध जन से (**वाम**) तुम दोनों के (**महि**) बड़े (**वरूथम्**) श्रेष्ठ घर को (**आयातम्**) प्राप्त हो वैसे इनको (**नः**) हमको (**कृणुध्वं**) सिद्ध करो।

भावार्थ–इस मन्त्र में वाचक लुप्तोपमालंकार है। हे स्त्री-पुरुषो! तुम पदार्थ विद्या से पृथ्वी आदि का विज्ञान करके सुन्दर घर बना कर वहाँ मनुष्यों के सुख की उन्नति करो।

गृह निर्माण में यह ध्यान रहे कि हमें गृह पक्षियों के घोसलों की तरह छोटे-छोटे कमरों से युक्त प्रकाश रहित अस्वास्थ्यकर नहीं निर्माण करना है–

वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान्स्व वेशो अनमीवो भवानः।
यस्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शंनोभव द्विपदे शं चतुष्पदे।

– ऋ. ७.५४.१

पदार्थ–हे (**वास्तोः**) निवास करने वाले घर के (**पते**) स्वामी गृहस्थ जन आप (**नः**) हमारे घर में (**स्वावेशः**) सुख में हैं सब ओर से प्रवेश जिसको ऐसे और (**अनमीवः**) निरोग (**भवः**) हूजिये। (**तत्**) उसको (**नः**) हमारे (**.प्रतिजुषस्व**) प्रति सेवो आप (**नः**) हम लोगों के (**द्विपदे**) मनुष्य आदि जीव (**शम्**) सुख करने वाले और (**चतुष्पदे**) गौ आदि पशु के लिए (**शम्**) सुख करने वाले (**भव**) हूजिये।

भावार्थ–जो मनुष्य सब ओर द्वार और बहुत अवकाश (रिक्त स्थान) वाले घर को बनाकर उसमें बसते हैं और रोग रहित होकर अपने तथा औरों के लिए सुख देते हैं वे सबको मंगल देने वाले होते हैं।

अगले मन्त्र में इसी विषय को प्रसारित किया गया है।

वास्तोस्पते प्रतरणोनएधि गपस्फानोगोभिरश्वेभिरिन्दो।
अजरासस्तेसख्येस्याम पितैव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व।।

– ऋ. ७.५४.२

पदार्थ–हे (**इन्द्रो**) आनन्द देने वाले (**वास्तोष्पते**) घर के रक्षक आप (**गोभिः**) गौआदि से (**अश्वेभिः**) घोड़े आदि से (**गयस्फान**) घर की वृद्धि करने (**प्रतरणः**) उत्तमता से दुःख से तारने और (**नः**) हमारे सुख करने वाले (**एधि**) हूजिये। जिन (**ते**) आपके (**सख्ये**) मित्रपन में हम लोग (**अजरासः**) शरीर जीर्ण करने वाली वृद्धावस्था से रहित (**स्याम्**) होवें। सो आप (**नः**) हम लोगों को (**पुत्रान्**) पुत्रों को जैसे (**पितेव**) पिता वैसे (**प्रति जुषस्व**) प्रीति से सेवो।

भावार्थ–इस मंत्र में उपमालंकार है। मनुष्य घर उत्तम बना कर गौ, घोड़े आदि पशुओं से शोभित कर, शुद्ध कर प्रजा के बढ़ाने वाले होकर अक्षय मित्रपन सब में अच्छे प्रकार सिद्ध कराय जैसे पिता पुत्रों की रक्षा करता है वैसी ही सबकी रक्षा करे।

अगला मंत्र भी इस विषय को आगे बढ़ा रहा है। ऋग्वेद मंडल ७ का सूक्त ७५वां सम्पूर्ण ही गृह निर्माण विषय की ही चर्चा कर रहा है।

अमीवह्वा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन्।
सखा सुशेव एधि नः।। ऋ. 7.55.1

पदार्थ–हे (**वास्तोष्पते**) घर के स्वामी जिस घर में (**विश्वा**) सब (**रूपाणि**) रूप (**आविशन्**) प्रवेश करते हैं वहाँ (**नः**) हम लोगों के लिए (**अमीवहा**) रोग हरने वाले (**सखा**) मित्र (**सुशेवः**) सुन्दर सुख वाले होते हुए (**एधि**) प्रसिद्ध हूजिये।

भावार्थ–हे मनुष्यो! तुम सर्व प्रकार उत्तम घरों को बनाकर सुखी होओ। मकान इस प्रकार के होने चाहियें जिनमें हम सदा निरोग बने रहें। हमारा सम्पूर्ण शरीर सुन्दर दिखाई दे।

यदर्जुन सारमेय दत्तः पिशंग यच्छसे।
वीव भ्राजन्त ऋष्टय उपसक्तेषु बप्सतो निषु स्वप।। ऋ. ७.५५.२

पदार्थ–हे (**अर्जुन**) अच्छे रूप युक्त (**सारमेय**) सार वस्तुओं की उत्पत्ति करने वाले (**पिशङ्**) पीले पीले (**यत्**) जो आप (**वीव**) पक्षी के समान (**दतः**) दांतों को (**यच्छसे**) नियम से रखते हो। वह जो (**सक्तेषु**) प्राप्त उत्तम घरों में (**वप्सतः**) भाषण करते हुए (**ऋष्टयः**) पहुँचाने वाले (**उप भ्राजन्ते**) समीप प्रकाशित होते हैं, उनमें आप (**निषुस्वप**) निरन्तर अच्छे प्रकार सोओ।

भावार्थ–इस मन्त्र में उपमालंकार है। हे मनुष्यो! जहाँ आरोग्यपन से तुम्हारे दन्त आदि अच्छे प्रकार शोभते हैं वहाँ ही निवास करो और वहीं शयन आदि व्यवहार करो। मकान ऐसे विस्तृत होने चाहिएं जिसमें हमारी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इस विषय में वेद का कथन है–

सस्तु माता सस्तु पिता सस्तुश्वा सस्तु विश्पतिः।
स सन्तु सर्वे ज्ञातयः यस्त्वयम मितो जनः।। ऋ. ७.५५.५

पदार्थ–जो मनुष्य जैसे मेरे घर में मेरी (**माता**) माता (**अमितः**) सब ओर से (**सस्तु**) सोवे (**पिता**) पिता (**सस्तु**) सोवे (**श्वा**) कुत्ता (**सस्तु**) सोवे (**विश्पतिः**) प्रजापति (**सस्तु**) सोवे (**सर्वे**) सब (**ज्ञातयः**) सब सम्बन्धी सब ओर से (**ससन्तु**) सोवें (**अयम्**) यह (**जनः**) उत्तम विद्वान् सोवे वैसे तुम्हारे घर में भी सोवें।

भावार्थ–इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। मनुष्यों को ऐसे घर रचने चाहिये जिनमें सबके सर्वव्यवहारों के करने को अलग-अलग शाला और घर होवें। घर ऐसे होने चाहिए कि बाहर के व्यक्ति अन्दर के व्यक्तियों को न देख सकें और न अन्दर के व्यक्ति बाहर के व्यक्तियों को देख सकें।

य आस्तेयश्च चरति यश्च पश्यति नोजनः।
तेषां सं हन्मोअक्षणि यथेदं हर्म्य तथा।। ऋ. ७.५५.६

पदार्थ–हे मनुष्यों (**यथा**) जैसे (**इदम्**) यह (**हर्म्य**) मनोहर घर है (**तथा**) वैसे (**यः**) जो (**जनः**) मनुष्य (**नः**) हमारे घर में (**आस्ते**) बैठता है (**यः च**) और जो (चरित) जाता है (यः च) और जो हम लोगों को (**पश्यति**) देखता है (**तेषाम्**) उन सबकी (**अक्षाणि**) इन्द्रियों को हम लोग (**संहन्मः**) संहित न देखने वाले करें वैसे तुम भी आचरण करो। गृहस्थ लोग जिस कमरे में सोवें वहाँ शुद्ध हवा का प्रवेश

thearyasamaj.org

रहे तथा दिन में सूर्य का प्रकाश भी पहुँचे।

सहस्र श्रङ्गो वृषभो समुद्रा दुदाचरत्।
तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि।। ऋ. ७.५५.७

पदार्थ-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**सहस्त्र श्रृङ्ग**) हजारों किरणों वाला (**वृषभः**) वृष्टि कारण सूर्य (**समुद्रात्**) अन्तरिक्ष में जैसे (**तेन**) वैसे उसके साथ (**सहस्येन**) बल में उत्तम घर से (**वयम्**) हम लोग (**जनान्**) मनुष्यों को (**निष्वापयामसि**) निरन्तर सुलावें।

भावार्थ-हे मनुष्यो! जहाँ सूर्य की किरणों का स्पर्श सब ओर से हो और जो बल का अधिक बढ़ाने वाला घर हो उसके शुद्ध होने में सबको सुलावें और हम लोग भी सोवें।

योष्ठेशया वह्येशया नारीर्यास्तल्प शीवरीः।
स्त्रियोयाः पुण्यगन्धास्ताः सर्वाः स्वापयामसि।। ऋ. ७.५५.८

पदार्थ-हे गृहस्थ मनुष्यो! जैसे हम लोग (**याः**) जो (**पोष्ठेशयाः**) अतीव सब प्रकार उत्तम सुखों की प्राप्ति कराने वाले घर में सोती है (**वह्येशयाः**) अथवा जो प्राप्ति कराने वाले घर में सोती है वा जो (**तल्पशीकरीः**) पलंग परसोने वाली उत्तम (**नारीः**) स्त्री (**स्त्रियः**) विवाहित तथा (**पुण्यगन्धा**) जिनका शुद्ध गन्ध हो (**ताः**) उन (**सर्वाः**) सबको हम लोग उत्तम घर में (**स्वापयामसि**) सुलावें वैसे तुम भी उत्तम घर में सुलावो।

भावार्थ-हे गृहस्थो! जिस घर में स्त्री रहे वह घर अतीव उत्तम रखना चाहिये जिससे निज सन्तान उत्तम हो।

यजुर्वेद में कहा गया है कि घर में ऐसे दरवाजे एवं खिड़कियाँ बनानी चाहियें जिससे बिना रुकावट हवा सब जगह पहुँच सके।

एताऽउवः सुभगा विश्वरूपा विपक्षोभिः श्रयमाणाऽ उदातैः।
ऋष्वाः सतीः कवषाः शुम्भमाना द्वारोदेवीः सु प्रायणा भवन्तु।।
- यजु. २९/५

पदार्थ-हे मनुष्यो! जैसे (**वः**) तुम्हारी (**एताः**) ये दीप्ति (**सुभगाः**) सुन्दर ऐश्वर्य दायक (**विश्वरूपाः**) विविध प्रकार के रूपों वाले (**ऋष्वाः**) बड़े ऊँचे चौड़े (**कवषाः**) जिनमें बोलने से शब्द की प्रतिध्वनि हो (**शुम्भमानाः**) सुन्दर शोभायुक्त (**सतीः**) हुए (**देवीः**) रंगो से चिलचिलाते हुए (**उत् आतैः**) उत्तम रीति से निरन्तर जाने के हेतु (**पक्षोभिः**) बायें, दायें भागों से (**श्रवमाणः**) सेवित पक्षियों की पङ्तियों के तुल्य (**सुप्रायणाः**) सुख से जाने के आधार (**द्वारः**) द्वार (**विभवन्तु**) सर्वत्र घरों में हों वैसे (**उ**) ही आप लोग भी बनावें।

भावार्थ-इस मंत्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। मनुष्यों को चाहिये कि ऐसे द्वारों वाले घर बनावें कि जिनसे वायु न रुके। जैसे आकाश में बिना रुकावट के पक्षी सुख पूर्वक उड़ते हैं वैसे उन द्वारों से जावें आवें। मकान की भीतरी एवं बाहरी दीवारें चिलचिलाते रंगों में पुती हुई हों। भवन बड़े ऊँचे, लम्बे चौड़े बनाये जावें। भवन का मुख्य द्वारा अत्यन्त सुन्दर एवं प्रभावशाली होना चाहिये। प्रातः एवं सन्ध्या काल में संगीत हेतु अलग कक्ष तथा वाद्य यन्त्र होना चाहिये।

अन्तरा मित्रा वरुणा चरन्ती मुखं यज्ञनाभिसं विदाने।
उषासा वां सुहिरण्ये सुशिल्पेऽऋतस्य योना विह सादयामि।।
- यजु. २९/६

पदार्थ-हे शिल्प विद्या के दो विद्वानों। जैसे मैं (**अन्तर**) भीतर शरीर में (**मित्रा वरुणा**) प्राण और उदान (**चरन्ति**) प्राप्त हुए (**यज्ञानां**) संगति के योग्य पदार्थों के (**मुखम्**) मुख्य भाग को (**अभि सं विदाने**) सब ओर से सम्यक् ज्ञान के लिए (**सुहिरण्ये**) सुन्दर तेज युक्त (**सुशिल्पे**) सुन्दर कारीगरी जिसमें हो (**उषासा**) प्रातः तथा सायं काल की वेलाओं को (**ऋतस्य**) सत्य के (**योनौ**) निमित्त (**इह**) इस घर में (**सादयामि**) स्थापित करता हूँ वैसे (**वा**) तुम दोनों मेरे लिए स्थापित करो।

भावार्थ-शिल्प विद्या के दो विद्वानों से कहा गया है कि वे ऐसा घर बनावें जिसमें ताजा हवा प्रवेश करती रहे तथा दुर्गन्धित हवा सदैव बाहर निकलती रहे। भवन का मुख्य द्वार अत्यन्त सुन्दर शिल्प कला से पूर्ण मन को मुग्ध करने वाला हो। भवन में अलग से संगीत कक्ष भी वाद्य यन्त्रों से सुसज्जित हो।

मकान इस प्रकार बनाया जावे कि उसमें चोर आदि प्रवेश नहीं कर सके। मकान को खोलने और बन्द करने की व्यवस्था अच्छी होनी चाहिये।

इटस्य ते विचृताम्य पिनद्धमपोर्णुवन्।
वरुणेन समब्जितां मित्रः प्रातर्व्युब्जतु।। अथर्व. ९/३/१८

हे शाला! (**ते**) तेरे (**इटस्य**) द्वार के (**अपनिद्धम्**) बन्धन को (**अपोर्णुवन्**) खोलता हुआ मैं (**विचृतामि**) अच्छे ग्रन्थित करता हूँ। (**वरुणेन**) ढकने वाले अन्धकार (**समुब्जिताम्**) दबाई हुई तुझको (**मित्रः**) सर्व प्रेरक सूर्य (**प्रातः**) प्रातः काल (**वि.उब्जतु**) खोल देवे।

स्वामी दयानन्द ने संस्कार विधि के प्रारम्भ में ही द्विपक्षा, चतुष्पक्षा षट्पक्षा आदि शालाओं के निर्माण के विषय में कहा है तथा उनके नक्शे भी दिये हैं। यही बात अथर्व. ९/३/२१ में कही गई है-

या द्विपक्षा चतुष्पक्षा षट्पक्षा या निमीयते।
अष्टापक्षां दश पक्षां शालां मानस्य पत्नि मग्निर्गर्भ इवाशये।

पदार्थ-(**या**) जो (**द्विपक्षा**) दो पक्ष वाली (जिसके मध्य में एक और पूर्व पश्चिम में एक एक शाला हो) (**चतुष्पक्षा**) चार पक्ष वाली (जिसके मध्य में एक तथा पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में एक एक शाला हो (**षट्पक्षा**) जिसके बीच में बड़ी शाला और दो दो पूर्व एवं पश्चिम में तथा एक एक शाला उत्तर दक्षिण में (**अष्टा पक्षां**) आठ पक्ष वाली (जिसके बीच में एक और चारों ओर पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में दो दो शाला हों) और (**दश पक्षां**) दश पक्ष वाली (जिसके मध्य में दो शाला और पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में दो दो शाला हों) (**उस**) उस (**मानस्य**) सम्मान की (**पत्नीम्**) रक्षा करने वाली (**शाला**) शाला में (**अग्निः**) जठराग्नि और (**गर्भ इव**) गर्भस्थ बालक के समान (**आशये**) मैं ठहरता हूँ।

अपना स्वयं का मकान होने पर समाज में भी प्रतीष्ठा होती है।

मानस्य पत्नि-शरणा स्योना देवी देविभिर्निमतस्यग्रे।।
-अथर्व. ३/१२/१५

पदार्थ-(**मानस्य**) हे प्रतिष्ठा की (**पत्नि**) रक्षा करने वाली (**शरणा**) शरण देने वाली (**स्योना**) सुखदायिनी (**देवी**) प्रकाशयुक्त तू (**देवेत्रिः**) देवता ओंकारा (**निमित्ता**) बनाई हुई (**अग्रे**) हमारे सम्मुख (**असि**) है।

हम देखते हैं कि उपर्युक्त शाला निर्माण विज्ञान के अनुरूप है। ●

thearyasamaj.org

ऋग्वेद में व्रतानुष्ठान्

-महात्मा चैतन्यमुनि
सुन्दर नगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.)-१७४४०१

वेद में परमात्मा से तीन पाशों से मुक्त करने की प्रार्थना की गई है –

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।।

– ऋ. १/२४/१५, यजु. १२/१२

इस मन्त्र में '**अनागसः**' पापों से मुक्त होने तथा '**अदितये**' पूर्ण स्वस्थता एवं मोक्ष हेतु प्रार्थना की गई है। हमारा प्रथम बन्धन है – उत्तम बन्धन अर्थात् ऊपर का बन्धन। कारण शरीर का बन्धन, द्यौ अर्थात् हमारी बुद्धि का बन्धन तथा सत्वगुण का बन्धन। दूसरा मध्यम बन्धन है – राजसिकता का जिससे हमारे मन और प्राण बन्धे हुए हैं यह रज और सूक्ष्म शरीर का बन्धन है जो हमें कर्त्तापन के बन्धन में बाँधता है –रजः कर्मणि भारत। तीसरा अधम बन्धन है – नाभि से नीचे स्थूल शरीर और तामसिकता का बन्धन। उत्तम बन्धन सच्चे ज्ञान के अभाव के कारण होता है, मध्यम-राग-द्वेष, काम-क्रोध आदि के कारण और अधम बन्धन-तामसिकता के कारण तथा शरीर की सीमा में रहकर भोग-भोगने आदि के कारण एवं आलस्य व प्रमादादि के कारण होता है। हमें इन तीनों ही बन्धनों से मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए। इनसे मुक्त होने का मार्ग भी इसी मन्त्र में बता दिया – तव व्रते अर्थात् परमात्मा प्रदत्त व्रतों पर चलने से ही हम बन्धन-मुक्त होकर गुणातीत हो सकते हैं। वेद में अन्यत्र भी प्रार्थना की गई है –

उदुत्तमं मुमुग्धि नो वि पाशं मध्यमं चृत।
अवाधमानि जीवसे।। (ऋ. १/२५/२१)

अर्थात् हे परमात्मन् आप हमारे '**उत्तमं पाशम्, मध्यमं पाशम्**' और '**अधमानि पाशम्**' अर्थात् उत्तम (सत्वगुणी), मध्यम (रजोगुणी) और अधम (तमोगुणी) बन्धनों को '**मुमुग्धि**' छिन्न करने की कृपा करें जिससे हम अपने जीवनों को उत्तम बना सकें। तम, रज एवं सत् के अतिरिक्त और भी अनेक बन्धन है जिनसे व्रति व्यक्ति ही मुक्त हो सकता है –

असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नासि त्रितो गुह्येन व्रतेन।
असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि।।
त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे।
उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा त आहुः परमं जनित्रम्।।
इमा ते वाजिन्नवमार्जनानीमा शफानां सनितुर्निधाना।
अत्रा ते भद्रा रशना अपश्यमृतस्य या अभिरक्षन्ति गोपाः।।
आत्मानं ते मनसारादजानामवो दिवा पतयन्तं पतङ्गम्।
शिरो अपश्यं पथिभिः सुगेभिररेणुभिर्जेहमानं पतत्रि।।

– ऋ. १/१६३/३ से ६

जब व्यक्ति हृदयरूपी गुहा के साथ सम्बद्ध ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करता है तो वह इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का अधिष्ठाता बनता है जिससे मन भी उसके नियन्त्रण में आ जाता है। इस नियमन से वह समस्त दिव्य गुणों से परिपूर्ण हो जाता है। वह बुराईयों का संहार करने में समर्थ होता है तथा उसके शरीर, मन और मस्तिष्क की शक्तियों का विस्तार होता है। इस सोमरक्षण के कारण मस्तिष्करूप द्युलोक परिष्कृत होता है, सोम ज्ञानाग्नि का ईन्धन बनता है और समिद्ध ज्ञानाग्नि से '**ऋग., यजु., साम.**' के साक्षात्कार से प्रकृति, जीव और परमात्मा का ज्ञान होता है। तेरे मस्तिष्करूप द्युलोक में '**प्रकृति, जीव व परमात्मा**' के ज्ञानरूप तीन बन्धन होते हैं। ऋग्वेद के द्वारा तू प्रकृति के ज्ञान को प्राप्त करता है, यजुर्वेद के द्वारा जीव के ज्ञान को तथा साम के द्वारा परमात्मा के ज्ञान को प्राप्त करता है। '**आपोपयाः प्राणः**' प्राण ही '**आपः**' है। इनके विषय में तेरे तीन बन्धन हैं। ये तीन बन्धन ही '**भूः, भुवः, स्वः**', '**प्राण, अपान, व्यान**' या '**स्वास्थ्य, ज्ञान, जितेन्द्रियता**' कहलाते हैं। प्राणसाधना के द्वारा शरीर में तू स्वस्थ बनता है, मस्तिष्क में ज्ञानी तथा मन में जितेन्द्रिय-वृत्ति वाला बनता है। इस अन्तः समुद्र में मोद के साथ रहने वाले हृदयान्तरिक्ष में भी तीन ही बन्धन हैं। तू हृदय में तीन व्रत धारण करता है कि – यहां '**काम**' को प्रविष्ट नहीं होने दूंगा, क्रोध से सदा अनाक्रान्त रहुंगा, लोभ से अभिभूत नहीं होऊंगा और इस प्रकार अपने को नौ बन्धनों में बान्धकर श्रेष्ठ बना हुआ तू प्रभु की अर्चना करता है। प्रभु की वास्तविक पूजा यही है कि व्यक्ति प्रकृति, जीव, परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करे। स्वस्थ ज्ञानी व जितेन्द्रिय बनें। काम, क्रोध और लोभ से ऊपर उठें। यही व्यक्ति के जीवन का सर्वोत्तम विकास है। ये व्रत ही जीवन को परिमार्जित करने वाले हैं। व्रतों से जीवन पवित्र बनता है। ये व्रत ही संविभागपूर्वक खाने वाले तुझ में शान्तियों के स्थापित करने वाले होते हैं। व्रती जीवनवाला व्यक्ति लोभ से ऊपर उठ जाने के कारण सदा सबके साथ बांटकर खाता है, परिणामतः लड़ाई-झगड़े होते ही नहीं और जीवन शान्त बना रहता है। यहां इन व्रतों में ही तेरी कल्याणकर मेखलाओं-कटिबन्धनों को देखता हूँ अर्थात् तू इन पुण्यव्रतों का दृढ़ता से पालन करता है। ये कटिबन्धन-दृढ़ निश्चय तेरे सत्यव्रतों का रक्षण करते हैं और तेरी इन्द्रियों का रक्षण करने वाले होते हैं। व्रत इन्द्रियों को विषयों में फंसने से बचाते हैं। व्रतों द्वारा जीवन को पवित्र करने वाले प्रभु से कहते हैं कि तेरी मननशीलता के द्वारा अपने को तेरे समीप ही जानता हूँ अर्थात् मैं देखता हूँ कि मननशीलता के द्वारा तू मेरे समीप पहुँचता जाता है। इन निचले प्रदेश से आकाश से सूर्य की ओर जाते हुए तुझे जानता हूँ। देवयान मार्ग से जाने वाले इस सूर्यद्वार से ही उस अव्ययात्मा अमृतपुरुष को प्राप्त किया करते हैं। मैं तेरे इस सूर्य की ओर निरन्तर चलने वाले मस्तिष्क को रजोविकार से रहित-रजोगुण से ऊपर उठे हुए सरल मार्गों से गति करते हुए हो देखता हूँ, अर्थात् तू मस्तिष्क में निरन्तर ऊपर उठने की भावना को धारण करता है। तू रजोगुण से ऊपर उठकर सात्विक मार्गों का अतिक्रमण करता है और इसी का परिणाम है कि तू सूर्यद्वार से मेरे समीप पहुँच रहा है। यह व्रती पुरुष निरन्तर ऊपर उठता हुआ प्रभु को प्राप्त करता है। ऋग्वेद १/१२५/७ में भी सुव्रतों का पालन करने के लिए कहा गया है।

ऋग्वेद में अनेक ऐसे मन्त्र है जिनमें व्रत का उल्लेख किया गया है। ऋग्वेद १/७४/१०..... **अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि**.....। मन्त्र में कहा गया है कि संसार में एक-एक वस्तु अद्भुत है। प्रभु की बनाई गई प्रत्येक कृति उसकी विभूति है, परन्तु प्रकृति-निरीक्षण करने वाले को यह विचित्र प्रतीत होता है कि जो ये तारे ऊपर आकाश में रखे हुए है, अरे रात को दिखते थे, ये सब तारे दिन में कहां चले गए? ये जो अब दिख नहीं रहे, यह हुआ क्या? रात को सारे आकाश को इन्होंने आवृत किया हुआ था।

thearyasamaj.org

टिमटिमाते हुए ये तारे उस प्रभु का स्तवन कर रहे थे, ये गए कहां? इस प्रश्न का स्वयं उत्तर देते हुए वह अपने से ही कहता है कि उस सारे ब्रह्माण्ड के नियामक प्रभु के व्रत अहिंसित है। प्रभु के नियमों को कौन तोड़ सकता है? देखो न, यह अत्यन्त चमकता हुआ चान्द रात्रि में फिर आ जाता है। ऋग्वेद १/९२/१२ में उषा का वर्णन करते हुए कहा गया है - .....**अमिनती दैव्यानि व्रतानि**... यह उषा देव सम्बन्धी व्रतों को हिंसित करने वाली नहीं होती। ऋग्वेद १/१४४/१ में कहा गया है कि दानपूर्वक अदन करने वाला व्यक्ति ज्ञान के द्वारा प्रभु के व्रत को प्रकर्षेण प्राप्त होता है, प्रभु प्राप्ति के व्रत को धारण करता है - **एति प्र होता व्रतमस्य माययोर्ध्वा दधानः**। परमात्मा का एक व्रत यह है कि - **अग्निः उशिजाम् अनुव्रतम् विश्वश्रृष्टिः स्वं व्रतं अनु** (१/१२८/१) अर्थात् प्रभु मेधावी पुरुषों के पुण्यकर्मों के अनुसार सम्पूर्ण अभ्युदय व सहाय प्राप्त कराने वाले होते हैं। **'यथाकर्म यथाश्रुतम्'** जिसका जैसा ज्ञान व कर्म होगा उसे वैसा ही फल देते हैं। ऋग्वेद १/६५/२ में संसार यात्रा में लोगों को ऋत के व्रतों का पालन करने के लिए कहा गया है - **ऋतस्य देवा अनुव्रता**.....। ऋग्वेद १/९०/२ में सदा अपने व्रतों का रक्षण करने के लिए कहा गया है-**व्रता रक्षन्ते विश्वाहा**। ऋग्वेद १/१३६/५ के अनुसार व्यक्ति को प्राणापान के व्रत को धारण करना चाहिए और प्रभुस्तवनों के साथ प्राणसाधना के व्रत को अपने जीवन का भूषण बनाना चाहिए।

ऋग्वेद १/१८२/२-३ में व्यक्ति को शुचिव्रता और व्रतानि अनुवर्तते अर्थात् पवित्र तथा पुण्यमय व्रतों का अनुपालन करने के लिए कहा गया है। इसी सम्बन्ध में आगे कहा गया है कि २/५/४ **अस्य ध्रुवा व्रता**.... विद्वान् इस प्रकार के ध्रुव व्रतों के अनुसार अपने व्रतों को बनाता हुआ ऊंचा और ऊंचा उठता चला जाता है। उसी प्रकार जैसे कि वृक्ष पर आरोहण करने वाला निचली शाखा से उपरली शाखा पर चढ़ता चला जाता है। यह पवित्र यज्ञिय जीवन वाला व्यक्ति प्रभु के व्रतों के अनुसार अपने व्रतों को बनाता हुआ इस संसारवृक्ष की सर्वोत्कृष्ट शाखा पर पहुँचकर उससे ऊपर उठ ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है। उस प्रभु के व्रतों अर्थात् नियमों २/८/३ को कभी हिंसित नहीं किया जा सकता है अर्थात् तोड़ा नहीं जा सकता है इसलिए उपासक को भी अपने जीवन में व्रती बनना चाहिए। इसलिए प्रभु के व्रतों के सम्बन्ध में कहा गया है -**तव व्रताय मतिभिर्जरामहे**.... २/२३/६ आपके व्रत के लिए बुद्धिपूर्वक आपका स्तवन करते हैं। आपके गुणों का चिन्तन करते हुए उन गुणों को अपनाने के लिए यत्नशील होते हैं..... **आपके व्रत को व्रतं प्रमिनन्ति**.... २/२४/१२ हिंसित नहीं करते हैं.... हे प्रभो! २/२८/२ हम आपके व्रत में स्थित हुए-हुए अर्थात् निर्द्वेषता व निष्पापता को ही ध्येय बनाते हुए उत्तम सौभाग्य वाले हो। कुछ मन्त्रों में सूर्य को व्रती कहा गया है जिसके व्रतों को इन्द्र, वरुण, मित्र, रूद्र व अर्यमा भी नहीं तोड़ सकते हैं अर्थात् ये सब भी उस सविता की प्रेरणानुसार ही अपने-अपने कार्य करते हैं। जैसे सूर्यादि देव उस प्रभु के व्रत को तोड़ नहीं सकते, उसी प्रकार अदानशील पुरुष भी यज्ञादि उत्तम कर्मों को न करने वाले पुरुष भी उस प्रभु को तोड़ नहीं सकते। इन्हें भी उस प्रभु की व्यवस्था में मर्यादाओं के उल्लंघन का दण्ड भोगना पड़ता है। (२/३८/२-३-९) परमात्मा के इन व्रतों के सम्बन्ध में ऋग्वेद ३/३/९ कहता है -**तस्य व्रतानि भूरिपोषिणो वयमुप भूषेम दम आ सुवृक्तिभिः**। उस अत्यन्त ही पोषण करने वाले प्रभु के व्रतों से सुशोभित होता है। हम प्रभु की तरह न्याय व दया आदि गुणों को अपनाते हैं। उन व्रतों के अनुसार अपना जीवन चलाकर हम -**अनुव्रतम् व्रतपाः दीध्वानाः** ३/४/७ व्रतों का रक्षण करके दीप्त जीवन वाले होते हैं। उस परमात्मा के व्रत अति महान् ३/६/५। इसलिए देव भी उनका अनुकरण करते हैं - **देवा देवानामनु हि व्रता गुः** (३/७/७)। समस्त ब्रह्माण्ड में परमात्मा के ही व्रत कार्य कर रहे हैं -**तव द्यावापृथिवी पर्वततासोऽनु व्रताय निमितेव तस्थुः** (३/३०/४), **व्रतानि देवा न मिनन्ति विश्वे** (३/३२/८) अर्थात् यह सम्पूर्ण द्युलोक व पृथिवीलोक तथा पर्वत भी आपके नियम के लिए-निर्देश पालन के लिए अपने-अपने स्थान पर स्थिर से हुए-हुए अनुकूलता से स्थित है। से सब सूर्यादि देव प्रभु के नियमों का हिंसन नहीं करते हैं। प्रभु की व्यवस्था में चलते हुए ये सूर्यादि देव कभी भी मार्ग का अतिक्रमण नहीं करते हैं, अतः हमें भी उन्हीं नियमों का अनुपालन करना चाहिए.... **परेषु या गुह्येषु व्रतेष** ३/५४/५। इन उत्कृष्ट एवं रहस्यमयी व्रतों में जो स्थितियां हैं वे देवों के जीवन में परिलक्षित होती है। दिव्यगुणों को धारण करने वाले पुरुषों के जीवनों में उनके व्यवहारों को देखकर हम अपने कर्त्तव्यों को जान पाते हैं। उनके अनुसार चलते हुए हम भी उन मार्गों पर ही चल रहे होते हैं, जो कि अन्ततः हमें देव बनाने वाले होते हैं। उनका अनुसरण करते हुए भी गुह्य व्रतों में पहुँच जाते हैं। ये व्रत हमें सब प्रकार की वासनाओं का शिकार होने से बचाते हैं और अन्ततः प्रभु को प्राप्त होते हैं। इसलिए - **वरूणस्य व्रतानि अदब्धानि**.... ३/५४/१८। उस पाप निवारण प्रभु के व्रतों को हम कभी भी हिंसित न करें अर्थात् उनका सदा ही अनुपालन करते रहे....।

परमात्मा के व्रतों का ३/५५/१ **व्रता देवानां नु उप प्रभूषन्** सभी देवगण समीपता से अलंकृत करते हैं इसलिए हमें भी -**मित्रस्य ता वरूणस्य व्रतानि** (३/५५/६)। पाप से रोकने वाले प्रभु के नियमों का अनुपालन करना चाहिए इससे हमारे असुरत्वभाव तिरोहित हो जाते हैं। देवों के ये समस्त व्रत सर्वमुख्य और ध्रुव है - **व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि** (३/५६/१)। इसलिए कहा गया कि -**ते व्रतेन शिक्षति**..... (३/५९/२)। उन व्रतों से शिक्षा ग्रहण करके **आदित्यस्य व्रतमुपक्षियन्तो वयं मित्रस्य समतौ स्याम** (३/५९/३) सूर्य के व्रत को सब स्थानों से अच्छाई के ही ग्रहण के भाव को प्राप्त होते हुए-अपने जीवन का अंग बनाते हुए हम इस सूर्य की कल्याणीमति में हो। परमात्मा स्वयं कहते हैं - **इमानि तुभ्यं स्वसराणि ये मिरे व्रता देवानां मनुषश्च धर्मभिः** (३/६०/६)। हे जीव! तेरे लिए ये आत्मतत्व की ओर ले चलने वाले देवों के व्रत मननशील पुरुष के धर्मों के साथ दिए जाते हैं, **तू व्रतं अनुचरसि, अनुव्रतं वरूणो** (३/६१/३, ४/१३/२) इन व्रतों के अनुकूल होकर गतिवाला बन क्योंकि ये व्रत ही शुचिव्रता (३/६२/१७) पवित्र कर्मों वाले होते हैं। परमात्मा अपने व्रतों के द्वारा - **व्रतानि देवः सविताभि रक्षत**.... (४/५३/४) सब पुण्यकर्मों का रक्षण करते हैं तथा **त्रिभिर्व्रतैरभि नो रक्षति त्मना** (४/५३/५)। परमात्मा सृष्टि का निर्माण, धारण तथा प्रलय यह सब हमारे रक्षण के लिए ही करते हैं.... ऋग्वेद के एक मन्त्र (५/२/८) में कहा गया है कि देवों के व्रतों का पालन करने वाले ज्ञानी पुरुष ने इस बात को कहा है कि परमात्मा के व्रतों का अनुपालन करने से ही प्रभु के साथ पुत्र-पिता का सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। इसीलिए यह कहा गया है (५/६३/७) कि व्रतों का अनुपालन ही हमारी रक्षा करता है। **अध व्रतेव मानुषं स्वर्ण धायि दर्शतम्**। ५/६६/२ परमात्मा ने बल प्राप्ति के

शेष पृष्ठ १४ पर....

thearyasamaj.org

गायत्री मन्त्र एवं जीने की कला

-सुरेशचन्द्र दीक्षित 'पूर्व प्राध्यापक'
माणक भवन, गुमानपुरा, कोटा (राज.)

जीवन में पवित्रता, शालीनता और श्रेष्ठता लाने के लिए आस्तिकता का भाव आवश्यक है। परमपिता परमात्मा की कृपा सब प्राणियों पर बिखरी हुई है। इसलिए वह दीन बन्धु कहलाता है। उसकी दया के दृष्टान्त आपने कई देखे एवं सुने होंगे। परमात्मा कण-कण में समाया हुआ है। उसकी उपस्थिति हर स्थान पर है। उससे कोई नहीं बच सकता। सबको प्रसन्न करने का तरीका, उसकी आज्ञा को अपने जीवन में धारण करना है। परमात्मा का दूसरा रूप रूद्र भी है। यह बड़ा भयंकर रूप है जिसे आदमी या प्राणी समझ ही नहीं सकता और दु:खों को जीवन भर भोगता रहता है। सारे अस्पताल, पागलखाने, मरघट और कारागार इसके उदाहरण है। फिर भी जीव समझने का प्रयत्न नहीं करता। परमात्मा की एक थप्पड़ बड़ी भारी पड़ती है। **ऊँ भूर्भव: स्व:** के मन्त्र की व्याख्या हमें इंसान व सज्जन बनाने कीं ताकत देती है। दुनिया के ढोंग, जप, तप और कृत्रिम ध्यान से ईश्वर प्रसन्न नहीं होता जब तक तुम उसकी आज्ञापालन में न जुटो। यह मानों कि ईश्वर सर्वव्यापी है, तो तुम उसको हर स्थान पर साक्षी मानते रहोगे साथ ही ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त करोगे। इसे ही ब्रह्म विद्या तथा आस्तिकता कहते हैं।

अगला चरण गायत्री मन्त्र का **तत्** का तात्पर्य वह से है। इसका विपरित यह होता है। यह का तात्पर्य प्रत्यक्ष से हैं। वह का तात्पर्य परोक्ष से है। वर्तमान में जो हो रहा है उसे आप देख रहे हो और भुगत रहे हो परन्तु परोक्ष यानी तत् से आप अनभिज्ञ हो। **तत्** को समझना ही दिव्य दृष्टि या तीसरी आँख है। तत् के द्वारा मृत्यु के बाद जीवन या जो कल्पना से परे हैं उसको समझना व आत्मसात करना है। चारों वेदों और उपनिषदों में ईश्वर के महत्व व भावी जीवन को अच्छे कर्मों से सुन्दर बनाने तथा ईश्वरीय मार्ग पर चलने की प्रार्थना की गई है।

गायत्री मन्त्र का अगला चरण **सवितु** आता है। सवितु का तात्पर्य सूर्य से है जिससे हमें गर्मी व प्रकाश मिलता है गर्मी का मतलब है कि हम आजीवन सक्रीय रहें। तेजस्वी बनकर हमारा और प्राणीमात्र का कल्याण करें तथा प्रकाश युक्त होकर स्वयं भी प्रकाशित हो तथा दूसरों को भी प्रकाश की डगर पर चलना सिखायें। अगर बड़ा प्रकाश पुंज न बन सके तो छोटा दीपक या तारा तो बने जिससे राही कुछ प्रकाश की उपस्थिति में राह तो चल सकें। हमारी जिन्दगी एक उदाहरण बन सके। एक गरीब व्यक्ति नित्य प्रति एक दीपक चौराहे पर रख दिया करता था जिससे राहगीरों को रास्ता दिखाई दें। एक सेठ एक घी का दीपक मन्दिर में जलाने जाता था। यहां कई ट्यूबलाईट व सर्चलाईट पहिले से लगी थी। दोनों मरने के बाद चित्रगुप्त के दरबार में पहुँचे। दीपक जलाने वाले को स्वर्ग व सेठ को नर्क मिला। सेठ के विरोध करने पर चित्रगुप्त जी ने निर्णय दिया कि गरीब व्यक्ति जैसे-तैसे तेल इकट्ठा कर राहगीरों को उपकारार्थ रास्ता दिखाता था जिसमें उसका कोई स्वार्थ नहीं था और सेठ अहंकारवश तथा स्वार्थवश कई लाईटों के जलते हुए भी घी का दिया जलाता था। वहां प्रकाश की आवश्यकता ही नहीं थी।

गायत्री मन्त्र का अगला चरण **वरेण्यं** है जिसका तात्पर्य सही विकल्प को चुनना या वरण करना है। झूठ, सच, ईमानदारी-बेईमानी का मिश्रण आपको हर स्थान पर मिलेगा। आपको विवेक व दक्षता के आधार पर सही पक्ष को वरण कर अपने जीवन को उन्नत करना है औरों को वरण करने योग्य ज्ञान देना है।

भर्गो का मतलब है भून डालना। हमारे व समाज के अंदर जो कल्मश, कशाय अंधविश्वास, कुरीतियां या अवांछनीय तत्वों का समावेश है, उन्हें हम भून डाले या जलादें जिससे ये हमें या समाज को बदतर अवस्था में न ले जावे। हमें किसी भी प्रकार संवर्धन की स्थिति को प्राप्त करना है। डॉक्टर बीमारी को दूर कर व्यक्ति को निरोग करता है। ईश्वर की आज्ञा में चलने वाला हमेशा सबके कल्याण का संवर्धन ही करेगा।

देवस्य का तात्पर्य दिव्यता से है। आपको देवी संपदा युक्त होना है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कई दैवी सम्पदाओं के उदाहरण देकर सत्य की लड़ाई के लिए तैयार किया। आपको ईश्वर ने तन, मन, धन की दिव्यता दी है। अगर आप इनमें से तीनों या किसी एक से किसी की रक्षा कर सकें तो यह आपकी दिव्यता ही होगी। दिव्यता विवेक व प्रकाश का समुच्य है। इसका प्रभाव जहां भी होगा वहां दिव्यता प्रकाशित होगी। तभी तो हम मनीषियों व आदर्श पुरुषों के जीवन व कार्यों का स्मरण करते हैं, इससे हमारा आभामण्डल विशाल बनता है जिसके प्रकाश में और भी प्रकाशित होते हैं।

धीमही का मतलब धारण करने से है जो भी बात हम दिव्यता की सुने, उसका मनन करें, चिन्तन करें तथा उसे कार्यशैली का अंग बनाऐं। हम आध्यात्मिकता को धारण करें। ऋषि युग में ब्रह्मचारी तैयार किये जाते थे। जो हर दिव्यता को ग्रहण करते थे और आत्मसात करते थे। इस प्रकार प्रज्ञावान होकर समाज में अपना अलग-अलग योगदान करते थे। बुराईयों को पचाकर व बाहर निकालकर अच्छाइयों को ग्रहण करना धीमही कहलाता है। ब्रह्मचर्य ब्रह्म को चरता था यानी अपनी शक्ति आध्यात्म को समझकर समाजसेवा में लगाता था।

धियो यो नः प्रचोदयात् में न शब्द आया है जिसका मतलब है हम सब। हमें अपने मतलब के लिए कोई कार्य न कर सबके लिए नि:स्वार्थ प्रेम, सहयोग व लाभ की दृष्टि से कार्य करना है यहां पर सवितु अर्थात् ऋग्वेद, वरेण्यम् अर्थात् यजुर्वेद, भर्गो अर्थात् अथर्ववेद, देवस्य अर्थात् सामवेद यह चारों वेदों का सार है। इस तरह **धियो यो नः प्रचोदयात्** द्वारा ईश्वर से यह प्रार्थना की गई है कि हमारी बुद्धि ठीक रखे। बुद्धि को सही राह पर चलाने के लिए मन, बुद्धि और इंद्रियों को वश में करना होगा। भगवान आप हमें सुख न दें क्योंकि सुख मिलने से हम निकम्मे हो जायेंगे। हमारी अग्नि परीक्षा होती रहे ताकि हम विघ्नों से बचकर निकलें व तपकर समृद्धि की ओर बढ़े जब हम पाप की ओर बढ़े तो आप हमारा हाथ खींच लेना और किनारे पर फैंक देना। हमें पुरुषार्थी बनाकर ताकतवर बनाना ताकि हम सन्मार्ग पर चलें।

गायत्री मन्त्र का जाप करने के लिए मन को बांधना होगा। सुखासन लगाकर बैंठे व भृकुटी पर ध्यान करें। जाप मन से करें। जाप में शब्द सुनाई न पड़े। बार-बार जाप करने से आप अपने आप को परमात्मा को समर्पित करते हो। ऐसा करने से जाप की प्रबलता बढ़ेगी। जाप से अर्थ हो। मनुष्य शरीर बार-बार नहीं मिलता गायत्री मंत्र का जाप सभी, पुरुष एवं बालकों को संस्कारित करें। ●

thearyasamaj.org

पृ. १२ का शेष ऋग्वेद में व्रतानुष्ठान.....

लिए ही मनुष्य के लिए हितकर कर्मों की तरह सूर्य के समान दर्शनीय सुन्दर ज्ञान हमारे में धारण किया है..... **व्रता पदेव सश्चिरे पान्ति मर्त्यंरिषः** (५/६७/३), ...**व्रतं रक्षमाणावजुर्यम्** (५/६९/१) जैसे गतिशीलताओं को सब पुण्यकर्म व्याप्त करते हैं, उसी प्रकार ये वरुण, मित्र, अर्यमा मनुष्य को शत्रु से रक्षित करते हैं, आपके व्रत के अनुसार अर्थात् जितना-जितना हम स्नेह व निर्द्वेषता का व्रत धारण करते हैं उतना-उतना आप अजीर्णता-अक्षीणता का हमारे में रक्षण करते हो। इसलिए आगे प्रार्थना की गई है -

व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मणा यातयज्जना।
नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये।। ५/७२/२

हे मित्र और वरूण, स्नेह व निर्द्वेषता के भावों! आप पुण्य कर्मों से निश्चित कल्याण करने वाले हो। स्नेह के होने पर हम अशुभ हिंसादि कर्मों में प्रवृत्त नहीं होते। आप धारणात्मक कर्मों के हेतु से ही लोगों को कर्मों में प्रवृत्त करते हो। सो सोम के रक्षण के लिए हमारे वासनाशून्य हृदयों में आसीन होवो।

उस परमपिता परमात्मा के जो भी व्रत अर्थात् नियमादि है उन्हीं का अनुपालन करके हम भी सुक्रतु बनकर अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। वह प्रभु -

स जायमान परमे व्योमनि व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत।
व्यन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुर्वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत्।। ६/८/२

वह सब व्रतों अर्थात् नियमों का रक्षक अग्रेणी प्रभु इस परम आकाश में, अनन्त विस्तृत आकाश में सब लोक-लोकान्तरों को जन्म देता हुआ (माता प्रजाता) की तरह यह प्रयोग है। इन सूर्य विद्युत अग्नि आदि देवों के व्रतों का रक्षण करते हैं। प्रभु के भय से ही सब देव अपने-अपने व्रत का पालन कर रहे हैं। वह शोभनकर्मा शोभन-प्रज्ञ सर्वहितकर प्रभु ही इस अन्तरिक्षलोक को विशेष निर्माण करते हैं... वे ही अपनी महिमा से मोक्ष-सुख का स्पर्श करते हैं अर्थात् वे ही मोक्ष का भी धारण करते हैं।.... **तूर्वन्तो दस्युमायवो व्रतैः सीक्षन्तो अव्रतम्** (६/१४/३) । ये उपासना में चलने वाले मनुष्य दास्यव वृत्तियों को, विनाशक वृत्तियों को हिंसित करते हैं और नियमित पुण्यकर्मों के द्वारा व्रतशून्यता के भाव को पराभूत करने की कामना वाले होते हैं। आगे कहा गया है -

समान ऊर्वे अधि संगतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते।
ते देवानां न मिनन्ति व्रतान्यमर्धन्तो वसुभिर्यादमानाः।। ७/७६/५

जो पुरुष एक समान समूह या वर्ग में अध्यक्ष (परमात्मा) के अधीन मिलकर सम्यक् ज्ञान और परिचय करते हैं वे परस्पर नाश की चेष्टा नहीं करते। वे विद्वानों के व्रतों अर्थात् कार्यों का नाश नहीं करते। वे धनों द्वारा यत्नवान् होते हुए हिसा न करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं। इसलिए प्रार्थना की गई है -

पूषन्तव व्रते व्यं न रिष्येम कदा चन।
स्तोतारस्त इह स्मसि।। ६/५४/९

हे पोषक प्रभो! आपकी प्राप्ति के साधन भूत **'जप-तप-ध्यान'** आदि कर्मों में लगे हुए हम कभी भी वासना व्याघ्रों से हिंसित न किए जाएं। इन कर्मों में लगे हुए हम कभी विषयों के शिकार न हो। हे प्रभो! इस जीवन में हम आपके स्तवन करने वाले हो। प्रभु स्तवन करते हुए वैसे ही बनने का प्रयत्न करें।●

'वैदिक संसार' प्रकाशन की आवश्यक सूचनाएं एवं रचनाकार महानुभावों से विशेष विनम्र अनुरोध

१. **वैदिक संसार** में प्रकाशित प्रकाशन सामग्री के लिए **'वैदिक संसार'** का सहमत होना आवश्यक नहीं है, यह लेखकों के अपने दृष्टिकोण एवं प्राप्त जानकारी अनुसार है।
२. **'वैदिक संसार'** से संबंधित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा।
३. **'वैदिक संसार'** आपका अपना समाचार पत्र है। विज्ञापन, सदस्यताा शुल्क एवं सहयोग निधि (स्वैच्छिक दान) एवं प्रकाशन सामग्री से सहयोग करने की कृपा करें।
४. वैवाहिक आवश्यकताएँ, प्रतिभा समाचार, लेख, कविताएँ, अन्य समाचार, सूचनाएँ एवं शोक समाचार निःशुल्क प्रकाशित किए जाते हैं। कृपया प्रकाशन सामग्री स्पष्ट लिखी हुई, हस्ताक्षर युक्त, पूर्ण डाक पते एवं मोबाइल नं. सहित भेजें।
५. प्रकाशन सामग्री की श्रेष्ठ गुणवत्ता एवं समाचार पत्र में स्थान उपलब्धता पर ही प्रकाशन संभव हो सकेगा।
६. वेद विरुद्ध, सृष्टि नियम विरुद्ध, भूत-प्रेतादि, चमत्कारी, भविष्यफल आदि कपोल-कल्पित, कथा-कहानियों का प्रकाशन नहीं किया जावेगा।
७. वेद सम्मत, ज्ञानवर्धक, मार्गदर्शक, प्रेरणास्पद, सत्य आधारित रचनाओं/समाचारों का स्वागत है। रचनाएँ संक्षिप्त (तीन पृष्ठों से अधिक नहीं) तथा मौलिक हों। दो मास में एक रचना के अनुपात से अधिक रचनाएँ न भेजें एवं किसी भी दशा में रचना को एक से अधिक बार न भेंजे।
८. रचनाकार विद्वान्, महानुभाव प्रथम बार अपना चित्र भेजने का कष्ट अवश्य करें।
९. **'वैदिक संसार'** में प्रकाशित किसी सामग्री पर किसी महानुभाव को कोई शंका, जिज्ञासा, शिकायत होने पर संबंधित लेखक से सीधे सम्पर्क करें तथा हमें भी अवगत करवाये एवं कोई सुझाव हो तो हमें पत्र द्वारा अवश्य अवगत करवाएँ, हमें आपके पत्रों, रचनाओं एवं आर्थिक सहयोग की प्रतीक्षा है।
१०. पत्रों के अतिरिक्त अनेक स्नेहीजनों के द्वारा दूरभाष पर मौखिक समर्थन, बधाई तथा हर्ष के संदेश सतत् प्राप्त होते हैं, समस्त स्नेहीजनों का **'वैदिक संसार'** परिवार हार्दिक आभार व्यक्त करता है।
११. **'वैदिक संसार'** स्वास्थ्य संबंधी एवं महिलाओं, बच्चों से संबंधित, स्वास्थ्य रक्षक-वर्धक, हितकारी, ज्ञानवर्धक, रुचिकर, उत्साहवर्धक, प्रेरणादायी सामग्री भी प्रकाशित करता है। अतः विद्वान् महानुभाव संबंधित सामग्री भेजने का कष्ट करें। प्रकाशन सामग्री के ऊपर निर्देशित करने का कष्ट करें कि सामग्री किस परिशिष्ट से संबंधित है।
१२. महापुरुषों की जन्मतिथि/पुण्यतिथि तथा वैदिक पर्वों से संबंधित आलेख कम से कम दो माह पूर्व भेजने का कष्ट करें।
१३. अस्वीकृत रचनाएं लौटाना संभव नहीं होगा। - **संपादक**

thearyasamaj.org

वेद मन्त्र में सुन्दर मानव-शरीर की परिकल्पना एवं विशेषताओं का दिग्दर्शन

-आचार्य भगवानदेव वेदालंकार
बुद्ध बाजार, विकास नगर, नई दिल्ली-५९
चलभाष-९२५०९०६२०१

सबसे पहले हमें यह जानना आवश्यक है कि इस मानव-जीवन का लक्ष्य क्या है ? जीवात्मा का चरम लक्ष्य प्रभु का सान्निध्य और मोक्ष प्राप्ति है। यह मानव-शरीर आत्म दर्शन और परमात्म दर्शन के लिए मिला है। जब तक जीव अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक वह भिन्न-भिन्न योनियों के आवागमन के अनन्त चक्कर काटता रहता है वेद में सुन्दर दिशा निर्देश है जिस पर चलकर हम अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं -

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां
पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्यः कोशः स्वर्गः
ज्योतिषावृतः।।
-अथर्व. १०/२/३१

प्रस्तुत मन्त्र में मानव-जीवन का सुन्दर वर्णन है। यह मानव-शरीर कैसा है ? इसकी क्या विशेषतायें हैं ? इसमें कौन-सी शक्ति विद्यमान है ? उस शक्ति को जानकर हम उस परम प्रभु के आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

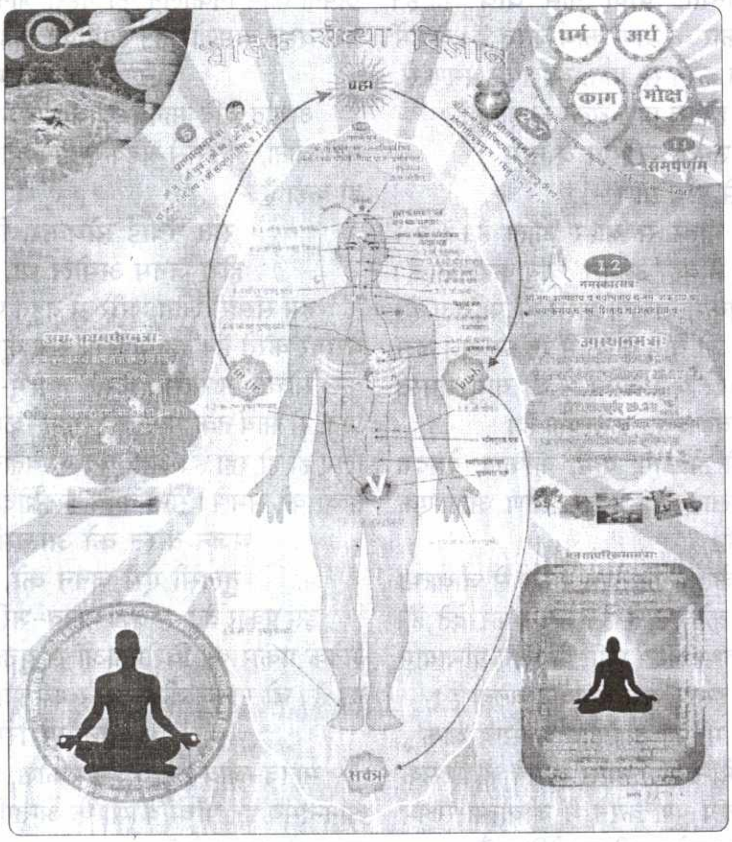

यह मानव-शरीर कैसा है ? (अष्टचक्रा) - इस मानव-शरीर को अधिकतर विद्वानों ने आठ चक्रों वाला माना है। लेकिन वे आठ चक्र कौन-कौन से हैं इस विषय में विद्वानों के अलग-अगल मत है। तन्त्र-योग के आधार पर चक्रों का जो वर्णन है उसको वैदिक मान्यता प्राप्त नहीं है जो इस प्रकार है-

१. मूलाधार चक्र - जो गुदा के समीप है।
२. स्वाधिष्ठान चक्र - जो मूलाधार से चार अंगुल ऊपर है।
३. मणिपूरक चक्र - जो ठीक नाभि स्थान में है।
४. सूर्य चक्र - पेट के ऊपर, हृदय धड़कन के पीछे है।
५. मनश्चक्र - आमाशय से ऊपर है।
६. अनाहत चक्र - हृदय स्थान में है।
७. विशुद्धि चक्र - कण्ठ में है।
८. आज्ञा चक्र - दोनों आँखों के मध्य में है।

इन चक्रों के स्थान पर महर्षि दयानन्द जी, स्वामी सत्यपति जी महाराज तथा आयुर्वेद के आचार्य शरीर की जो आठ धातुयें हैं जिनसे शरीर का विधिवत् संचालन होता है वे आठ चक्र कहलाती हैं जैसे - **रसो रक्तं ततो मांसं देहे मेदोऽस्थि देहिनाम्। मज्जा वीर्यं रजोऽपिवा त्वक् चैव धारकं मतम्।।** अर्थात् (१) रस, (२) रक्त, (३) मांस, (४) मेद, (५) अस्थि, (६) मज्जा, (७) वीर्यम् (पुरुषों के शरीर में शक्ति का प्रतीक) रज (स्त्रियों के शरीर में), (८) त्वक् (त्वचा) ये आठ तत्व शरीर को यथावत् धारण करते हैं। शरीर में इन धातुओं के यथावत् रहने से शरीर निरोग तथा स्वस्थ रहता है। ये तत्व जीवन लक्ष्य प्राप्त कराने में अत्यन्त सहायक बनते हैं।

शरीर में नौ द्वारों का महत्व

(नवद्वारा) - शरीर की इस अयोध्या रूपी नगरी में नौ द्वार है - दो नेत्र, दो कान, दो नासिका, एक मुख, एक गुदा और एक मूत्रेन्द्रिय। यह शरीर प्रभु की रचना का अद्भुत नमूना है जिसके नौ द्वार खुले हुए हैं, ऐसी जेल में जीवात्मा निवास करता है। लेकिन प्रभु-आज्ञा के बिना निकल नहीं पाता है। जबकि सांसारिक जेल के अन्दर बन्द कैदियों को कारागार का एक भी द्वार खुला मिल जाये तो आसानी से बाहर जा सकते हैं। किसी कवि ने सुन्दर चित्रण किया है -

नौ द्वारे का पींजरा,
तामें पंछी पौन।
रहिबे में आश्चर्य है,
गये अचम्भा कौन।।

अर्थात् मानव-शरीर नौ द्वार वाला एक पींजरा है जिसमें जीवात्मा रूपी पक्षी निवास कर रहा है। यह आश्चर्य की बात है जिसके निकल जाने का तो कोई आश्चर्य नहीं है।

फिर भी ज्ञानी पुरुष जानते हैं कि जीवात्मा शरीर व्यवस्था और निर्णय के अनुसार ही जीवात्मा शरीर से बाहर निकलता है। कर्मों का फल भोग पूरा करने के लिये एक निश्चित अवधि तक उसको यहाँ रहना ही पड़ता है।

यह मानव शरीर कैसी नगरी है ? (देवानां पूः अयोध्या) - परमपिता परमात्मा ने इस सुन्दर मानव-शरीर को मानो देवताओं की अजेय नगरी बनाया है जिसमें जीवात्मा, परमात्मा, दस इन्द्रियाँ, प्राण, अन्तःकरण चतुष्टय आदि सब देवता निवास करते हैं।

यह मानव देह केवल मात्र माँस पिण्ड ही नहीं है जिसकी उपेक्षा की जाये क्योंकि जीवात्मा इसी में रहकर ब्रह्म का साक्षात्कार करने का लक्ष्य बनाता है। तप करता है। किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हानि-लाभ, सर्दी, वर्षा, गर्मी, भूख-प्यास सहन करता है।

thearyasamaj.org

इस वैदिक अयोध्या नगरी में कौन रहता है? (तस्यां हिरण्ययः कोशः) - इस मानव शरीर में सम्पूर्ण पदार्थों का प्रकाशक, इन्द्रियों का स्वामी (कोशः) शक्ति पुञ्ज, चेतन जीवात्मा निवास करता है जो केवल एक कोश का ही नहीं अपितु पाँच कोशों का स्वामी है। जिस प्रकार तलवार म्यान रूपी कोश में सुरक्षित रहती है उसी प्रकार जीवात्मा रूपी राजा भी पाँच कोशों के बीच में सुरक्षित रहता है -

१. अन्नमय कोश - जो त्वचा से लेकर अस्थि पर्यन्त मिट्टी के समान स्थूलमय भाग है। अन्नमय कोश कहलाता है। इसका मजबूत होना, स्वस्थ होना आवश्यक है। पौष्टिक पदार्थों के सेवन से शरीर लक्ष्य तक साथ देता है। स्वस्थ रहता है।

२. प्राणमय कोश - यहाँ सामान्यतः '**प्राण**' नाम '**वायु**' का है। हमारे शरीर में मुख्य रूप से पाँच प्रकार के प्राण कार्य करते हैं। ये हमें जीवन शक्ति प्रदान करते हैं। प्राणायाम करने से, प्रातः काल के भ्रमण से, व्यायाम आदि क्रियाओं को करने से हमारा प्राण बलवान होता है।

प्राणों का स्वरूप और उनके लक्षण व नाम

उदाहरण के रूप में मुख्य रूप से पाँच प्राण -

(१) प्राण वायु - जो वायु भीतर से बाहर आता है। **(२) अपान**-जो वायु बाहर से भीतर आता है वह '**अपान**' वायु कहलाता है। **(३) समान** - जो वायु नाभि से होकर, सम्पूर्ण शरीर में पहुँचता है। '**समान**' कहलाता है। **(४) उदान** - जो वायु कण्ठ में रहकर अन्न जल को खींचता है। '**उदान**' कहलाता है। **(५) व्यान** - जो वायु समस्त शरीर में चेष्टा आदि क्रिया करता है। वह व्यान कहलाता है।

इसके अतिरिक्त स्थानादि भेद से ही नाग, कूर्म, कृकिल, देवदत्त तथा धनञ्जय ये पाँच उप प्राण कहलाते हैं। ये दस प्राण और एक जीवात्मा मिलकर ११ रूद्र कहलाते हैं।

शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में ऐसा संकेत है कि जब शरीर से जीवात्मा और प्राण निकलते हैं तो वे प्राणियों को रुलाते हैं। बैचेन कर देते हैं। इसलिए व्यक्ति को मजबूति के लिए तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्राणायाम जैसी यौगिक क्रियाऐं करनी चाहिये। इससे प्राण बलवान् बनता है।

३. मनोमय कोश - इस कोश में मन अहंकार के साथ वाक, पाद, पाणि, वायु और उपस्थ ये कर्मेन्द्रियाँ निवास करती हैं जिसके माध्यम से शरीर के समस्त क्रियाकलाप पूर्ण करने में जीवात्मा सक्षम होता है। विचारशीलता की दिशा में इस कोश की उपयोगिता है।

४. विज्ञानमय कोश - इसमें बुद्धि, चित्त के साथ चक्षु, श्रोत्र, जिह्वा, नासिका तथा त्वचा ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं जिससे जीवात्मा ज्ञानादि व्यवहार करता है। रूप, रस, गन्ध, स्पर्श तथा शब्द की अनुभूति होना, किसी विषय का याद होना तथा बुद्धि से निश्चय करना, ये सभी क्रियाऐं विज्ञानमय कोश के अन्तर्गत आती है।

५. आनन्दमय कोश - इसमें प्रीति, प्रसन्नता, आनन्द का न्यूनाधिक होना जैसी अनुभूति होती है। जीवात्मा इसी आनन्दमय कोश की सहायता से आन्तरिक हर्ष, आमोद-प्रमोद की अनुभूति प्राप्त करता है।

इस प्रकार जीवात्मा इन कोशों के ठीक प्रकार से कार्य करने के कारण अपने चरम लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है।

जीवात्मा का क्या सौभाग्य है - (स्वर्गः ज्योतिषा आवृतः अस्ति) इस मानव शरीर में सबसे अधिक सौभाग्य की यह बात है कि यह जीवात्मा **(स्वर्गः)** सुख स्वरूप, आनन्द स्वर्ग स्वरूप परमात्मा के **(ज्योतिषा)** आनन्दरूपी प्रकाश से **(आवृतः)** घिरा हुआ है।

अतः मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि सर्वेश्वर प्रभु मेरे निकट ही हैं। मेरे समस्त क्रिया-कलापों को देख रहे हैं। इसलिये इस जीवन में मैं कभी अशुभ कार्य नहीं करुँगा।

कुछ लोगों को सांसारिक ज्ञान अधिक है किन्तु आध्यात्मिक ज्ञान ना के बराबर है -

आज का इन्सान संसार की चीजों, भोग पदार्थों के विषय में बहुत कुछ जानता है। इसको चालाकी, दुनियादारी, तिकड़म, हेराफेरी तथा अपना काम निकालने की गहरी जानकारी है। मगर उनका आध्यात्मिक पक्ष बहुत कमजोर है। उपनिषद् कहती है कि -

'न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः'

अर्थात् यदि मानव-जीवन पाकर भी अपने को और परमात्मा को नहीं जाना, तो इससे बढ़कर हानि और कुछ नहीं है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है -

रात गँवाई सोयकर, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय।।

हम संसारी लोग शरीर से बहुत प्यार करते हैं। आत्मा से प्यार ना के बराबर करते हैं। देह के लिए सब कुछ करते हैं परन्तु आत्मा के लिए न कुछ सोचते, न सत्संग करते, न प्रभु-भक्ति करते, न स्वाध्याय करते हैं। प्रातः से सायं तक भागदौड़, काम-काज, धन-संग्रह आदि सभी शरीर के लिए ही हो रहा है। अतः वेद के बताये मानव-जीवन के लक्ष्य-प्राप्ति के तत्वों को समझे। सन्त कवि तुलसीदास जी के शब्दों में -

भजन करन को आलसी, भोजन को तैयार।
तुलसी ऐसे जनन को, बार-बार धिक्कार।।

इस प्रकार वेद-मन्त्र में मानव-शरीर की बनावट की अत्यन्त वैज्ञानिक, अनेक प्रकार की विशेषताओं से युक्त, शरीर की सुन्दर परिकल्पना की गई है। जो मानव जीवन के लक्ष्य प्राप्ति में सहायक है।

तीनों शरीरों का महत्व -

मानव-जीवन में अन्नमय कोश, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय इन पाँचों कोशों के अन्तर्गत रहते जीवात्मा के शरीर भी तीन प्रकार के माने गये हैं-

१. स्थूल (भौतिक) शरीर - अंगों, उपांगों सहित दृश्यमान जिस शरीर की अनुभूति सबको हो रही है और जिससे चलना, फिरना, उठना, बैठना, खाना-पीना आदि समस्त क्रियायें और व्यवहार हम कर रहे हैं तथा जिससे सुख-दुःख की प्रतीति हो रही है वह स्थूल शरीर कहलाता है। तुलसीदास जी के शब्दों में यह स्थूल शरीर पाँच तत्वों से मिलकर बना है -

पञ्च तत्व ये रचा शरीरा। क्षिति जल पावक गगन समीरा।।

२. सूक्ष्म शरीर - इसी स्थूल शरीर के अन्तर्गत पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि ये सत्रह तत्व जो सक्रिय हैं। उसको सूक्ष्म शरीर कहा जाता है। यह अभौतिक शरीर मुक्ति में भी जीवात्मा के साथ रहता है क्योंकि मुक्ति में जीव इसी सूक्ष्म शरीर के

thearyasamaj.org

माध्यम से सुख का उपयोग करता है।

३. कारण शरीर – जिसमें सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निद्रा होती है वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है।

४. तुरीय शरीर – तीनों शरीरों के अतिरिक्त चौथा तुरीय शरीर होता है। जिसमें जीव समाधि से परमात्मा के आनन्द स्वरूप में मग्न होता है। इसी समाधि जन्म शुद्ध शरीर का पराक्रम मुक्ति में यथावत् सहायक रहता है।

इन तीन शरीरों की तरह जीवात्मा की तीन अवस्थायें भी मानी गई हैं

१) जाग्रत अवस्था – इस अवस्था में जीवात्मा को शरीर द्वारा किये गये सम्पूर्ण क्रिया-कलापों की जानकारी रहती है।

२) स्वप्नावस्था – इस अवस्था में सम्पूर्ण इन्द्रियाँ, क्रिया-कलापों में रत रहने के कारण, जब थकान के कारण विश्रान्ति की ओर अग्रसर होती है तो जीवात्मा मन की सक्रियता के कारण, पुरातन संस्कारों के आधार पर विविध प्रकार के दृश्यों का अनुभव करता रहता है। यद्यपि निन्द्रावस्था में नेत्रादि इन्द्रियाँ पूर्णतया निष्क्रिय रहती है। मात्र केवल मन ही सजग और सक्रिय रहता है।

३) सुषुप्ति अवस्था – इस अवस्था में गाढ़ निद्रा के कारण जीवात्मा एक अनिर्वचनीय सुख की अनुभूति करता है।

यह सुख का अनुभव परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त होता है। इसलिये दार्शनिकों का कथन है कि –

''समाधि सुषुप्ति मोक्षेषु ब्रह्मरूपता'' – साँख्य दर्शन ५/११६

अर्थात् मोक्ष चाहने वाला जीवात्मा समाधि, सुषुप्ति और मोक्षावस्था में ब्रह्मरूपता (समानता) का अनुभव करता है।

आचार्य प्रणव शास्त्री जी द्वारा रचित गीत की पंक्तियाँ सुन्दर मानव-जीवन से सम्बन्धित हैं –

''अयोध्या नाम की नगरी, जनक ने क्या बसाई है?
बड़े ही पुण्य कर्मों के फलों से भेंट पाई है।। १।।
नगर यों तो हजारों ही दृष्टि में आये।
घिरे अन्धकार से सोइ, न मून को इसलिये आये।
प्रकाशित कर सके आंगन, न ऐसी किरण आई है।। २।।
यहाँ आहार, निद्रा, भीति, मैथुन का खजाना है।
परस्पर गोष्ठियाँ चर्चा न होता मुस्कराना है।
नहीं सुख-दुःख द्वन्द्वों की मिलती दवाई है।। ३।।
विगत जन्मों के कर्मों का यहाँ फल भोगना होता।
न अग्रिम सुखलताओं के सुजन कुछ बीज है बोता।
प्रबल परतन्त्रता का पाश ही तो दुःखदाई है।। ४।।
यहाँ तो आठ चक्रों का बना है पूर्ण परकोटा।
यहाँ सब देवता रहते न कोई भी बड़ा छोटा।
सुनहरी कोश में कुटिया अलौकिक क्या सजाई है।। ५।।
'प्रणव' से नित्य मिलते हैं जो आत्माराम बैठे हैं।
सुहाने स्वर्ग के पथ में निरन्तर नित्य पैठे हैं।
महत्ता मान-मर्यादा इसी की सबने गाई है।। ६।।
अयोध्या नाम की नगरी, जनक ने क्या बसाई है।
बड़े ही पुण्य कर्मों के फलों से भेंट पाई है।। ●

वेद शास्त्रों में
ईश्वर-जीव का स्वरूप

– कृपालसिंह वर्मा
२५३, शिवलोक, कंकरखेड़ा
मेरठ (उ.प्र.)-९९२७८८७७८८

१. तीन अनादि सत्ताए हैं – ईश्वर, जीव, प्रकृति ईश्वर का स्वरूप सत्, चित्, आनन्द है। जीव का स्वरूप सत्, चित है तथा प्रकृति का स्वरूप सत् है।

२. ईश्वर सत् है अर्थात् ईश्वर की सत्ता में क्या प्रमाण है? सृष्टी की रचना ज्ञानपूर्वक है। संसार की छोटी से छोटी रचना में भी विज्ञान छिपा हुआ है। प्रकृति के विज्ञान की नित्य नई नई खोजें हो रही है लेकिन प्रकृति के विज्ञान का आज तक किसी ने पार नहीं पाया। **''ध्यान लगाकर जो तुम देखो सृष्टि की चतुराई को, बात बात में पाओगे उस ईश्वर की सुघड़ायी को।''** सृष्टी की रचना करने में बड़े भारी विज्ञान का प्रयोग हुआ है। इसलिए इस अनन्त विज्ञान को धारण करने वाले उस वैज्ञानिक को तो मानना ही पड़ेगा। यदि ज्ञान है तो ज्ञानी अवश्य है। यदि गुण है तो गुणी अवश्य होता है।

यदि कोई कहे कि परमात्मा नहीं है तो उसका कथन युक्ति एवं प्रमाण से विरूद्ध है।

३. ईश्वर चेतन है, जड़ नहीं – क्योंकि ज्ञान चेतन का गुण होता है जड़ का नहीं। ज्ञान का प्रयोग चेतन करता है जड़ नहीं। क्या तुम इस बात को जानते हो ये प्रश्न चेतन से पूछा जाता है जड़ पत्थर से नहीं।

४. परमात्मा दयालु है – ईश्वर जीवों को सुख देने के लिए ही सृष्टी की रचना करता है। सृष्टी रचना के साथ ही परमात्मा ने पवित्र ऋषियों के हृदय में वेदों का प्रकाश किया। अग्नि, वायु आदित्य तथा अंगिरा ऋषियों के मन में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद को प्रकाशित किया। क्या कर्तव्य है? क्या अकर्तव्य है? क्या धर्म है क्या अधर्म है? क्या सत्य है? क्या असत्य है? सब कुछ वेदों में लिखा है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है। क्योंकि **''धर्म जिज्ञासा नाम् प्रमाणां परमं प्रति''** ऋग्वेद में भूलोक का, यजुर्वेद में अन्तरिक्ष लोक का तथा सामवेद में द्यौ लोक का विज्ञान है। आध्यात्मिक अर्थात् Spritual Knowledge, आधिदैविक अर्थात् Scientific Knowledge, आधिभौतिक अर्थात् Social Knowledge, तीनों विद्याएं वेदों में हैं। परमात्मा की परम दयालुता देखिए कि आत्माओं को कर्म करने को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की है। आप कुछ भी कर सकते हैं। परमात्मा अधर्म से बचने को केवल प्रेरणा करता है। परमात्मा को प्रेरणा को मानने अथवा न मानने में हम पूर्ण रूप से स्वतन्त्र है। लेकिन कर्म-फल देने की व्यवस्था परमात्मा ने अपने पास रखी है।

जीवात्मा पुण्य कर्म का फल भोगने में स्वतन्त्र है परन्तु पाप कर्म का फल भोगने में परतन्त्रता है। हम पापकर्मों के जाल में जकड़े हुए ही स्वतन्त्र रूप से कार्य करते हैं। परमात्मा ने सृष्टी की रचना इस प्रकार की

शेष पृष्ठ २० पर....

thearyasamaj.org

धर्मपरिवर्तन या घर वापसी

- नरसिंह सोनी 'आर्य'
कोषाध्यक्ष-आर्य समाज, डागा सेठिया मौहल्ला,
बीकानेर (राज.), चलभाष -९२५२६१८२६४

आगरा में पिछले दिनों हुवे कथित धर्मपरिवर्तन पर संसद तक काफी विरोध हुआ। धर्म परिवर्तन करने वालों ने कहा कि यह तो घर वापसी है। हमने कोई गलत नहीं किया है। फार्म भरकर उनकी मर्जी से परिवर्तन हुआ है जोर-जबरदस्ती से नहीं हुआ है। तरूण सागर जी मुनि कहते हैं की धर्मपरिवर्तन नहीं हृदय परिवर्तन होना चाहिये। इसकी वास्तविकता यह है कि जिन लोगों का जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कुछ काल पहले करवा दिया गया था, वो अगर वापस अपने धर्म में आना चाहते हैं तो आ सकते हैं। इसमें कोई गलत नहीं है। सबको अपने विचारों के अनुकूल परिवर्तन करने का हक है। देखिये डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर हिन्दू से बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए थे-अकेले नहीं करीब एक लाख अनुयायियों सहित। आर्य समाज में पहली पंक्ति के नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भी घर वापसी का काम बखूबी किया था। आज भी कई मुस्लिम धर्म के नेता वैदिक धर्म में दीक्षित होकर आर्य समाज का प्रचार कर रहे हैं। उनमें एक स्वामी सत्यपति जी महाराज है, जो रोजड़ (अहमदाबाद) में दर्शन महाविद्यालय चला रहे हैं। ये मुस्लिम धोबी परिवार से हैं। एक है नवाब सत्तादी के पौत्र-आनन्द सुमन। जो आर्य वैदिक धर्म में दीक्षित होकर प्रचार का कार्य कर रहे हैं। ऐसे और भी बहुत से विद्वान है जो वैदिक धर्म में दीक्षित होकर प्रचार का कार्य कर रहे हैं-धर्म परिवर्तन करा कर। इतिहास साक्षी है भारत ने यानि आर्य (हिन्दू) जाति ने अपने धर्म के प्रचार के लिए कभी किसी के साथ जबरदस्ती नहीं की। हाँ एक समय याद आता है-सम्राट अशोक के समय में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए विद्वान जापान और चीन गये थे। और वहां बौद्ध धर्म का प्रचार किया थां। वहां पर आज भी बौद्ध धर्म के अनुयायी है। लेकिन मुस्लिम लुटेरों व शासकों ने जबरदस्ती तलवार के जोर से उनका धर्म परिवर्तन करा कर मुस्लिम बनाया। अगर ऐसे लोग घर वापसी चाहते हैं तो उनका स्वागत होना चाहिये न कि विरोध। सभी को अपने विचारों की स्वतंत्रता है। तभी तो अलग-अलग धर्मों के लोग शादी (विवाह) के बन्धन में बन्ध जाते हैं-धर्म परिवर्तन कराके या वैसे भी।

वास्तव में धर्म क्या है? पाठ-पूजा मन्दिर-मस्जिद-नमाज-संध्या-चर्च-गुरूद्वारा-धोती-टोपी-माला-तिलक आदि धारण करने का नाम ही धर्म नहीं है। धर्म का अर्थ है-धारण करना। अपने जीवन में-व्यवहार में दूसरों की सेवा करना, अपने व्यवहार से किसी को दुःख नहीं पहुँचाना, सबकी उन्नति में प्रसन्न रहना। जैसे अग्नि का धर्म है-ताप देना-प्रकाश देना और जल का धर्म है-शीतलता-वायु का धर्म है सुखा देना-जीवों में प्राण वायु देना आदि। ऐसे ही धर्म शब्द व्यापक है, वास्तव में धर्म तो सबका एक ही है। हमने इसको अलग-अलग शब्दों में बांध रक्खा है। इनको धर्म नहीं पंथ कहना चाहिये। वास्तव में आज से करीब पांच हजार साल पहले एक ही धर्म था, वैदिक धर्म। जो मनुष्य की उत्पत्ति व वेदों के काल से चला आ रहा है। इसके बाद से ही अलग-अलग धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ। इन अलग-अलग धर्मों की मनुष्य व प्राणीमात्र को सुख पहुँचाने वाली बातों को ही व्यवहार में लानी चाहिये। तभी मनुष्य मात्र में सुख-शान्ति व समृद्धि का संचार होता रहेगा। अगर ऐसा नहीं होता है तो विनाश अवश्यम्भावी है।

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्तव्य के मानी बनो।।
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्र मभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

हो विचार समान सबके चित्त-मन सब एक हों। ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों। ●

एक सार्थक संदेश

मानव स्वास्थ्य के लिए घातक डिस्पोजल

- पृथ्वी वल्लभदेव सोलंकी
२५, सतीमार्ग, गोंदाचौकी, उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-०९८२६५९२९७४

आजकल हमारे समाज के वैवाहिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक आयोजनों में भोजन, अल्पाहार और जलपान के लिए डिस्पोजल पात्रों का उपयोग निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। ये बाजार में सभी जगह न्यूनतम मूल्य में उपलब्ध हो जाते हैं।

बाजार जाने से पहले जनसामान्य घर से कपड़े की थैली लेकर जाता था, मगर अब हर दुकानदार ग्राहक को उसके द्वारा खरीदे गए सामान को प्लास्टिक की थैली में पैक कर देता है। बाजार में शुद्ध पानी, दूध, तेल, घी जैसे अनेक पदार्थों के पेक आसानी से मिलते हैं। इनका उपयोग करने के उपरान्त में प्लास्टिक की थैलियाँ, डिब्बे और बोतलें हम प्रायः फैंक देते हैं।

इन डिस्पोजल के प्रतिदिन बढ़ते उपयोग से पर्यावरण, मानव जीवन को अत्यन्त हानि हो रही है। कार्यक्रमों में डिस्पोजल में परोसे स्वादिष्ट व्यंजन के साथ प्लास्टिक के विषाणु मानव शरीर में पहुँचकर बिमारियों को निमंत्रण दे रहे हैं। सड़क, गटरों एवं नालियों में फेंके गए ये डिस्पोजल जमा होकर परेशानी का कारण बन रहे हैं, तो खेतों में ये भूमि की उर्वराशक्ति को नष्ट करने का काम करते हैं, इन्हें जलाने से वायुमण्डल प्रदूषित होता है। इन कारणों से डिस्पोजल को त्यागना ही न्यायोचित्त है।

वर्तमान में विदेशों से प्रतिदिन पैपर वैस्ट से लदे जहाज हमारे देश की बन्दरगाह पर आते हैं और उनसे बनते हैं डिस्पोजल आयटम। डिस्पोजल निर्माता यह भी नहीं देखता है कि पैपरवेस्ट किन-किन मानव जीवन के लिए घातक तत्वों के मिश्रण से बना है। बस उसे तो उन्हें डिस्पोजल की शक्ल देकर अपना व्यवसाय करना है।

वर्तमान में हमारे समाज के लिए चिन्तनीय विषय है कि ये उत्पाद प्रकृति, समाज और देश के लिए कितने घातक है। हमें समाज में जागृति फैलाकर उन्हें प्रतिबन्धित करने का संकल्प समाज के हित में पारित करना होगा। ●

thearyasamaj.org

विश्व संगठन के वैदिक आधार – मैत्री और समता

स्मृति शेष-प्रो. उमाकान्त उपाध्याय
पी-३०, कालिन्दी, कोलकाता
चलभाष-९४३२३०१६०२

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है। डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त-''**योग्यतम की जीत**''। योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वही संसार में टिकता है। उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी मछली का राज होता है। जंगल में शेर आदि निर्बल जानवरों को खाकर जंगल पर राज करते हैं। शेर जंगल का राजा कहा ही जाता है। यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है।

पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लग सकता है किन्तु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता। मनुष्य विवेकवान, विचारशील प्राणी है। मनुष्य के लिए उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य स्नेह, प्रेम, श्रद्धा। मनुष्य अपने स्वभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है। सत्य परोपकार दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है-''**अश्रद्धा मनृत्यु दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।**''

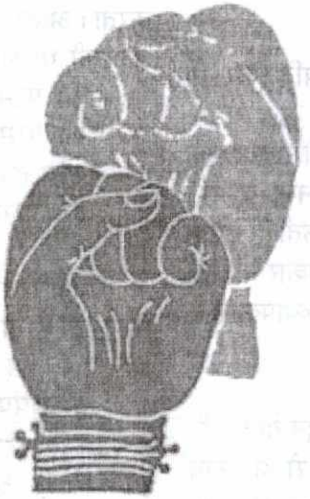

अर्थात् परमेश्वर ने संसार में असत्य, क्रूरता, दुष्टता इत्यादि को देखा और सत्य, करूणा, सज्जनता इत्यादि दोनों तरह के कार्यों को पाया। वेद का मन्त्र यह कहता है कि परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में सत्य, करूणा, दया, आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य, आदि मानवीय गुण है और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार है।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्विन के सिद्धान्त '**योग्यतम की जीत**' के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरों का शोषण कर रहे हैं, अतः मार्क्स के वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया। किन्तु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है। यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है। जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता।

यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आधार ''**उपनिवेशवाद**'' को बनाया। इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में अपने देशों के उपनिवेश बनाये। उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों में मिलजुल कर रहने की भावना का थोड़ा सा उदय हुआ। इसका सुफल निकला संसार के राष्ट्रों ने लीग आफ नेशन्स का संगठन किया किन्तु इस राष्ट्र संघ का आधार मैत्री और समता नहीं था। इसका फल यह हुआ कुछ ही वर्षों में राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्वयुद्ध का दूसरा नरसंहार का, अत्यन्त हृदयविदीर्ण करने वाला हिरोशिमा, नागासाकी का एटम बम की विनाश लीला और हिटलर के गैस चेम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संसार में शान्ति बनी रहे इसके निमित्त ''**संयुक्त राष्ट्र संघ**'' (यू. एन. ओ.) का संगठन किया। विश्वयुद्ध के कारणों का इतिहास कुछ अधिक सुस्पष्ट रूप से सामने था। अतः थोड़ी अधिक सूझ-बूझ, मैत्री और समता दिखायी पड़ती है। संयुक्त राष्ट्र संघ का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना। साधारण समिति, सुरक्षा परिषद, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गयी। यह सभी संगठने थोड़े अधिक मैत्री और समानता के आधार पर बने हैं किन्तु सब जगत कुछ राष्ट्रों की महिमा संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है। अमेरिका अपनी दादागिरी बनाये रखना चाहता है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, चीन का विशेषाधिकार-वीटो-संगठन को निर्बल बना रहा है। यह राष्ट्र अपने स्वार्थ को अन्य देशों से बढ़कर मानते हैं। यह संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डालर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है। संसार की अन्य मुद्रायें, रूपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं है। विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनिमय दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं। जबकि विनिमय का आधार ''**क्रय शक्ति की समानता**''। (पर्चेजिंग पावर पैरिटी) होना चाहिये। यह असमानता की भावना और सुरक्षा परिषद आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलताएँ हैं। ये निर्बलताएँ विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती है।

वैदिक आदर्शों के आधार पर समानता और सबका कल्याण, सारे विश्व का कल्याण काम्य है-

''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुखः भाग् भवेत्।।''

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतंत्र का बहुमत नहीं था। वहाँ ऋषि सर्वसुख, सर्वकल्याण की भावना को प्रश्रय देते हैं।

वेद की दृष्टि में भूतमात्र से, प्राणिमात्र से मित्रता की कामना की गयी है-

''मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।''

अर्थात् हम प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणी मात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें।

thearyasamaj.org

इस वैदिक सूत्र में केवल मनुष्य के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझा गया है। पशु-पक्षी संसार के सभी जीव-जन्तुओं को मैत्री की भावना से देखने की कामना है। यही मैत्री की भावना सभी राष्ट्रों में व्याप्त होकर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व संगठनों का आधार बने।

संसार के राष्ट्रों के संगठन का आधार राष्ट्रों में समता की भावना है। यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, बलशाली राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणाः- वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया है - "**ऋग्वेद का मण्डल-मणि-सूत्र।**" ऋग्वेद में दस मण्डल है। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला मिलती है। यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व शासन और विश्व नागरिक की अवधारणा को पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्ट्रों में समानता है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का तीसरा मन्त्र विशेष रूप से समानता का उद्घोष करता है -

"ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी,
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः।
सामनेन वो हविषा जुहोमि।।"

मन्त्र का संक्षेप में भाव यह है कि सभी राष्ट्रों में समान विचार हो और संगठन की समितियों में समानता हो। सबके मन व चित्त में समानता हो। सभी राष्ट्रों में चिन्तन और विचार की समानता हो और सारे राष्ट्रों का प्रास्तव्य समानता के आधार पर हो।

यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है। ●

पृ. १७ का शेष वेद शास्त्रों में.....

है कि जीवात्माओं को अधिक से अधिक सुख मिले। यदि फिर भी हम दुःखी है तो वह हमारे पाप कर्मों का फल है।

५. ईश्वर की सर्वव्यापकता् - वेद शास्त्रों में ईश्वर को सर्वव्यापक बताया है। क्योंकि सर्वव्यापक चैतन शक्ति ही इस अनन्त ब्रह्मांड की रचना कर सकती है तथा इसका संचालन कर सकती है। एक देश में रहने वाली कोई साकार शक्ति नहीं। जिसका आकार सीमित है उसकी शक्ति भी सीमित होती है। इसलिए ईश्वर सर्वव्यापक है।

क्या निराकार है?

६. परमात्मा को कैसे देखते हैं?

संसार में अनेक वस्तुएं निराकार है जिन्हें हम प्रतिदिन देखते हैं। वे है भूख, प्यास, सुख एवं दुःख। इनको मन की आँखों से ही देखते है तन की आँखों से नहीं। इसी प्रकार ज्ञानस्वरूप, आनन्दस्वरूप, शक्ति स्वरूप परमात्मा को भी मन की आँखों से ही देखा जाता है। यदि हम एकाग्र चित्त से परमात्पा का ध्यान करें तो हृदय में ज्ञान, आनन्द तथा शक्ति का संचार होने लगता है। जब हम परमात्मा की उपासना करते हैं तो मन आनन्द स्वरूप तथा जब प्रकृति की उपासना करते हैं तो मन सुख दुःख स्वरूप हो जाता है।

७. परमात्मा सर्वशक्तिमान तथा सर्वज्ञ है -परमात्मा बिना किसी की सहायता के सृष्टि का निर्माण करता है। इसलिए वह सर्वशक्तिमान है। वह सर्वज्ञ है क्योंकि सृष्टि निर्माण में किंचित मात्र भी त्रुटी नहीं होती सूर्य, चन्द्रमा का उदय-अस्त होना तथा ऋतुओं का बदलना आदि अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। परमात्मा सृष्टि की सर्वोत्तम रूप में ही रचना करता है। सर्वोत्तम कभी नहीं बदलता इसलिए प्रत्येक बार सृष्टि की रचना एक साथ होती है।

"सूर्य चन्द्रमऔ धाता यथा पूर्वम कल्पयत्।"

८. **स पर्यायात् शुक्रमकापमं अवर्सा अस्त्राविरम्**
शुद्धं पापऽविद्धम्, कवि मनिषि, स्वस्तू
परिकूः यथातथ्य अर्थाम् त्पदधात् शाखितेभ्य समाभ्यः

९. जीवात्मा का स्वरूप-

आत्मा सत् तथा चेतन है। आत्मा की सत्ता से कोई इंकार नहीं करता। आत्मा चेतन है अर्थात् सुख, दुःख का अनुभव करती है तथा ज्ञान की धारणा करती है। लेकिन परमात्मा से कुछ भिन्नताएं हैं।

(१) परमात्मा सर्वज्ञ है जबकि आत्मा अल्पज्ञ है।

(२) परमात्मा सर्वव्यापक है जबकि आत्मा परिच्छिन्न है अर्थात् एक देशीय है।

(३) परमात्मा सर्वशक्तिमान है जबकि आत्मा अल्पशक्तिमान है।

(४) परमात्मा सदैव आनन्द स्वरूप है जबकि आत्मा जब संसार से जुड़ता है तो सुख दुख स्वरूप तथा जब परमात्मा से जुड़ता है तो आनन्द स्वरूप हो जाता है।

द्वा सुपर्णा सुपुत्र सखाया, समानं वृक्षं परिण्वाजते.. ●

श्री दयानंद शिक्षण केन्द्र का भव्य उदघाटन समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज की गतिविधियों को अधिक सक्रियता प्रदान करने के लिए श्री दयानन्द शिक्षण केन्द्र पिपलिया मण्डी सतत् कार्य कर रहा है। इसी कड़ी में इस संस्थान के नवीन भवन का **उद्घाटन समारोह डॉ. सोमदेव शास्त्री मुम्बई के मुख्य आतिथ्य में** सम्पन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि इस संस्थान द्वारा लगभग ५०० विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया जाता है। व सभी छात्र-छात्राओं को महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के संस्कारों से परिपोषित किया जा रहा है। संस्थान के संचालक दयानन्द पाटीदार ने अपने स्वागत भाषण में संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. श्री सोमदेव शास्त्री ने सभी युवाओं, को जीवन में अन्धविश्वास से दूर रहने महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताए हुए मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। आपके सरल, सुबोध प्रवचन सुनकर सभी युवा छात्र-छात्राएं बहुत प्रभावित हुए। कार्यक्रम के विशेष अतिथि श्री रामचंद्र 'करूण' रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद श्री शिवनारायण पाटीदार ने की। कार्यक्रम का संचालन इस केन्द्र के मार्गदर्शक वीरेन्द्र सिंह शक्तावत ने किया। इस कार्यक्रम में अंचल से लगभग १५०० सदस्य उपस्थित थे। सभी का सहभोज भी हुआ। **-वीरेन्द्र सिंह शक्तावत**

thearyasamaj.org

साभार - वातायन

बच्चों का चरित्र निर्माण क्यों और कैसे?

- **नवनीत निगम,** उपदेशक
लखनऊ (उ.प्र.)
चलभाष-०९९१९८३१५३०

वर्तमान में यह विचारधारा अत्यन्त तीव्र गति से बलवती हो रही है कि परिवार, समाज व राष्ट्र को विश्व स्पर्धा में शीर्षस्थ करने हेतु मात्र अधिकाधिक पूंजी (धन) निर्माण, विकास व संग्रह की प्रथम व अन्तिम आवश्यकता है। परिणामत: लगभग प्रत्येक व्यक्ति येन-केन प्रकारेण बहुत ही अल्प समय में केवल अधिकाधिक धनोपार्जन के उपायों पर ही अपने मस्तिष्क को केन्द्रित किए हुए हैं। इससे अलग हटकर किसी अन्य विषय पर विचार करना उसे उबाऊ जान पड़ता है और उसे लगता है कि ऐसा करके वह अपने समय व ऊर्जा को अनावश्यक नष्ट कर रहा है।

सम्भवत: यही कारण है कि पाश्चात्य संस्कृति द्वारा पोषित, विकसित व रक्षित, पूंजी निर्माण की पताका फहराता, उदारता का नकाब ओढ़े, जनकल्याण का नारा बुलन्द करता हुआ, एक अखण्ड साम्राज्य की स्थापना को आतुर, जनजागरण के संकल्प को साकार करता हुआ एक आभामयी व्यक्तित्व का पिशाच रूपी संक्रामक रोग सम्राट, समाज व राष्ट्र ही नहीं वरन् समस्त विश्व को भ्रष्टाचार नामी महामारी से संक्रमित करता, समस्त अबाल, वृद्ध, वनिता को अपने सबल व सुदृढ़ बाहुपाश में समेटता, अपनी शक्ति और विजय पर गर्व से सिर ऊँचा किए '**भारतीय संस्कृति**' को मुँह चिढ़ाता व अहंकार से अट्टाहस करता हिंसा, अपराध व अनाचार रूपी राज्यों की सीमाओं का निरन्तर विस्तार करता हुआ अबाध गति से आगे बढ़ता चला जा रहा है। इसी के साथ यह कहने में भी संशय न होगा कि आज पूंजी निर्माण की पताका तले फूलने-फलने के उद्देश्य ने विद्या व शिक्षा को मात्र रोजी-रोटी के लक्ष्य पर ही स्थित कर उसके विस्तृत क्षेत्र को सीमित कर दिया है। कदाचित इसी कारण से विद्या जैसे अमूल्य रत्न व शिक्षण जैसे पुनीत कार्य का पूर्णतया व्यावसायीकरण होता जा रहा है। विद्यार्थी केवल उसी क्षेत्र की शिक्षा व विद्या पाना चाहता है जहाँ उसे अधिकाधिक धन प्राप्त हो सके और इसके लिए वह अधिकाधिक धन व्यय करते हुए विद्या व शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तथा अध्यापक भी अधिकाधिक धन प्राप्त करके ही विद्या व शिक्षा देना चाहता है। अर्थात् विद्यार्थी व अध्यापक (आचार्य) के मध्य क्रेता और विक्रेता का सा सम्बन्ध स्थापित होता जा रहा है। जबकि मनुस्मृति के माध्यम से महर्षि मनु जी का स्पष्ट निर्देश है :-

**य आवृणोत्यवितथं ब्रह्मणा श्रवणावुभौ।
समाता स पिता ज्ञेयस्तं न् द्रुह्येत्कदाचन्!!**

(जो गुरू (आचार्य) ज्ञान के द्वारा कानों को परिपूर्ण करता है, सुनाता और पढ़ाता है उसे माता व पिता समझना चाहिए और उससे द्रोह, ईर्ष्या कभी न करनी चाहिए उसका कभी भी अपमान न करना चाहिए) अत: सिद्ध होता है कि अध्यापक/अध्यापिका तथा विद्यार्थी/विद्यार्थिनी के मध्य पिता-पुत्र अथवा माता-पुत्री का सम्बन्ध होना चाहिए। इसी के साथ विद्या व शिक्षा के मूल व परम लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में कहा गया है '**विद्या अमृतश्नुते**' अर्थात् विद्या का परम लक्ष्य अमरत्व की प्राप्ति करना है। तथैव किसी भी व्यक्ति को अमरत्व की प्राप्ति तभी सम्भव है जब वह शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक रूप से पूर्ण स्वस्थ व उन्नत हो और यह तभी हो सकता है जब वह अथर्ववेद के निर्देश '**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाध्नत**' के अनुसार ब्रह्मचर्य व्रत का धारण, शुद्ध सात्विक शाकाहारी भोजन, सदाचरण का पालन, इन्द्रिय संयम व स्वाध्याय आदि का नियमित अभ्यास करते हुए संस्कार के रूप में आत्मस्थ कर ले। ऐसे व्यक्तियों को ही चरित्रवान की संज्ञा दी जाती है और इस विद्या को चरित्र निर्माण कहा जाता है। अत: यह बात पूर्णरूपेण सिद्ध हो जाती है कि विद्या व शिक्षा प्राप्ति का मूल व परम् लक्ष्य मात्र रोजी-रोटी तक ही सीमित न होते हुए सुसंस्कारित व चरित्रवान होना भी है।

अत: इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि विद्या व शिक्षा का रोजगार परक बनाते-बनाते उसके परम लक्ष्य चरित्र निर्माण को भूल न जायें। क्योंकि किसी भी समाज व राष्ट्र का निर्माण मात्र बहुखण्डीय भवनों, बाग-बगीचों, पार्कों, सड़कों व कल-कारखानों के निर्माण, ग्राम-ग्राम में विद्युतीकरण, दूरभाषीकरण व कम्प्यूटराइजेशन आदि से ही कदापि नहीं होता जब तक कि उसमें सुसंस्कारित व चरित्रवान नागरिकों का समावेश न हो। क्योंकि किसी भी समाज व राष्ट्र का सर्वांगीण विकास करना व उसे चिरस्थाई रख पाना तभी सम्भव होगा जब उस समाज व राष्ट्र के नागरिक आदर्श, सुसंस्कारित, चरित्रवान व सदाचारी होंगे। अत: यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि किसी भी समाज व राष्ट्र के निर्माण व विकास का मूल आधार वहां नागरिकों के चरित्र निर्माण पर ही निर्भर है।

ऋषियों ने मानव जीवन को चार भागों - ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास आश्रमों में इसीलिए विभक्त किया था कि जिससे व्यक्ति सर्वप्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्याध्ययन के द्वारा चरित्र निर्माण कर विद्वान् व सुसंस्कारित होकर जीवन की नींव सुदृढ़ करके परिपक्व बने, जिससे बाद के सभी आश्रम अर्थात् सम्पूर्ण जीवन व राष्ट्र का निर्माण हो सके।

आज श्रेष्ठ व उत्तम आचरण के व्यक्तित्व का अत्यन्त अभाव है, यही कारण है कि बच्चों को आदर्श मार्ग नहीं मिल पा रहा है मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान् बनता है।

मातृमान्, पितृमान, आचार्यवान् पुरूषों वेद-वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक प्रथम माता, द्वितीय पिता व तृतीय आचार्य उच्च कोटि के होंगे तभी बालक ज्ञानवान चरित्रवान व सदाचारी होगा। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कहा है कि **वह परिवार व कुल धन्य है, वह संतान बड़ी ही भाग्यवान है जिनके माता-पिता चरित्रवान, धार्मिक, विद्वान् व शिक्षित है।** विशेषतया बच्चों का मस्तिष्क प्रदूषण रहित अतिकोमल होता है, इस समय जो ज्ञान उन्हें दिया जाता है वह स्मृति पटल से होता हुआ उसके चित्त पर संस्कार के रूप में अपनी छवि अंकित कर आजीवन दृढ़ हो जाता है। **बच्चों की प्रथम पाठशाला घर ही है अत: माता-पिता का विद्वान्, शिक्षित, सदाचारी व चरित्रवान होना अति आवश्यक है** क्योंकि मानवीय गुण, धर्म सेवा, प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता,

thearyasamaj.org

भावी पीढ़ी का निर्माण मात्र उपदेश से नहीं अपितु स्वघटित सद्व्यवहार से

दान, तप, त्याग, सहानुभूति, अनुशासन, संयम, समय पालन, सद्व्यवहार आदि बच्चा अपने व आस-पास के परिवारों व समाज से ही सीखता है। जिस परिवार से बच्चों को ऐसा मार्गदर्शन नहीं मिल पाता वे पढ़ने व सुनने का लाभ न लेते हुए अपने जीवन उद्देश्य से भटक जाते हैं और आजीवन दुःखी रहते हैं।

विद्वानों ने कहा है, **जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा तन, जैसा बनेगा तन वैसा होगा मन, जैसा होगा मन वैसी होगी बुद्धि वैसे ही होंगे विचार, जैसे होंगे विचार वैसे ही होंगे कर्म, जैसे होंगे कर्म वैसा ही होगा फल** अर्थात् यदि शुद्ध सात्विक शाकाहारी व पौष्टिक भोजन किया जायेगा तो मन, बुद्धि व विचार भी शुद्ध सात्विक, पुष्ट व उन्नत होंगे और ऐसा होने पर निश्चित रूप से उत्तम कर्मों को ही जन्म मिलेगा और जब कर्म उत्तम होंगे तो फल तो उत्तम मिलना ही है और ऐसा होने पर हमारी अर्थात् आत्मा की निरन्तर उन्नति होकर सुख प्राप्त होगा, अन्यथा दुःख तो मिलना ही है। अतः प्रत्येक माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों को प्रारम्भ से ही शुद्ध सात्विक पौष्टिक व शाकाहारी भोजन जैसे गाय का दूध, दही, घी, मट्ठा, मिष्ठान्न, शहद, आंवला, सूखे मेवे, ऋतु फलों, रोटी, दाल, चावल, हरी सब्जियाँ व सलाद आदि का ही सेवन करायें, क्योंकि यह बुद्धि बल व ओज (आन्तरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता) बढ़ाने व शान्ति देने वाला है। इसके सेवन से बच्चे हृष्ट-पुष्ट, निरोगी व प्रसन्न रहेगें। उनकी नींव पूर्णतया दृढ़ हो जायेगी जिस पर उनका पूरा जीवन आधारित होगा।

आज माता-पिता व आचार्य जो बच्चों के उन्नत जीवन व चरित्र निर्माण का आधार है, अपनी प्राचीन उत्तमोत्तम संस्कृति व सभ्यता को छोड़कर पाश्चात्य सभ्यता पर आधारित चकाचौंध से परिपूर्ण रहन-सहन, खान-पान, आचार-व्यवहार, मनोरंजन व संगीत आदि की ओर अति तीव्र गति से दौड़े जा रहे हैं, किसी के पास भी बच्चों के चरित्र निर्माण कर उन्हें सुसंस्कारित करने का समय ही नहीं है समय है तो अधिकाधिक धन कमाने, भवन बनाने, विलासिता बढ़ाने, टेलीविजन देखने, निरर्थक राजनीतिक चर्चा करने, ऊँचे से ऊँचा पद प्राप्त करने हेतु साम्प्रदायिकता जातिगत विद्वेष एवं पाखण्ड फैलाते हुए अयोग्य संतति उत्पन्न करने का है। आज समाज में जो भी अपराध, हिंसा, अनाचार, बलात्कार, अनुशासनहीनता, दुर्गुण व दुर्व्यसन बढ़ रहे हैं इसका मूल कारण व्यक्ति का सुसंस्कारहीन व चरित्रहीन होना ही है। आर्यावर्त्तीय ऋषियों ने सोलह संस्कारों की श्रृंखला के साथ प्रेरणा दी कि इनके द्वारा बच्चों को क्रम से समयानुसार सुसंस्कारित अवश्य करो क्योंकि सुसंस्कारों से बालक का शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा उन्नत बनते हैं और उसके व्यक्तित्व का सापेक्ष विकास होता है।

बच्चा तो कुम्हार के कच्चे घड़े के समान है जिसे अति कोमलता से पीट-पीट कर संवार-संवार कर तपा-तपा कर जैसा चाहें सुन्दर व सुदृढ़ बनाया जा सकता है। आज का बच्चा कल का किशोर, परसों का युवक और भविष्य का कर्णधार है इसीलिए ऋषियों-मुनियों ने कहा है **जो माता-पिता व आचार्य बच्चों को विद्या द्वारा शिक्षित करने के उद्देश्य से उनकी ताड़ना करते हैं वे उन्हें अमृत पिला रहे हैं और जो इसके विपरीत अत्यधिक लाड-प्यार के कारण उन्हें अनुशासित नहीं रखते वे उन्हें विष पिला रहे हैं।**

विचारणीय प्रश्न है कि अधिकांशतः व्यक्ति ज्ञान व आदर्शवादिता का परिचय देते हुए बाते तो करते हैं **भगवान राम, कृष्ण, शंकर व दयानन्द, वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, माता-पिता व आचार्य की ओर कहते हैं कि हम इन्हें बहुत मानते हैं किन्तु व्यक्तिगत जीवन के प्रायोगिक व व्यवहारिक पक्ष में इनकी बतायी गयी बाते बिल्कुल नहीं मानते इनके दिखाये गये मार्ग पर कदापि नहीं चलते।** अतः माता-पिता, आचार्य (गुरू/ अध्यापक) व पुरोहित का विद्वान् व उत्तम शिक्षायुक्त होने के साथ-साथ उनका जीवन श्रेष्ठ आचरण, व्यवहार व सद्चरित्र से परिपूर्ण होना भी अति आवश्यक है। यदि माता-पिता चाहते है कि उनके बच्चे एक सम्मानित व श्रेष्ठ नागरिक बने और यशस्वी हो तो उन्हें चाहिए कि वे बच्चों को पान, तम्बाकू, पान मसाला (गुटखा), धुम्रपान, मदिरा सेवन व मांसाहार, अण्डा, मछली आदि अखाद्य पदार्थों से सदैव दूर रखें तथा दूर-दर्शन पर दिखायी जाने वाली अश्लील फिल्मों, अभद्र विज्ञापनों को न देखने दे, उन्हें आधुनिक फैशन की अश्लील वेशभूषा, पाश्चात्य सभ्यता पर आधारित अभद्र डान्स, व असांस्कृतिक कार्यक्रमों से भी बचायें। किन्तु इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि इन सब से माता-पिता भी अपने को दूर रखें। अध्यापक-अध्यापिकाओं को चाहिए कि विद्यालय में होने वाले किसी भी प्रकार के उत्सव आदि में भी इस प्रकार के कार्यक्रम न कराये। बच्चों को यह बताना व सिखाना भी अत्यन्त आवश्यक है कि वे अपने ऋषियों, मुनियों, महापुरूषों, माता-पिता व आचार्य के आदर्शों व मार्ग दर्शन का अनुकरण व अनुसरण अवश्य करें। बच्चों को सदैव सादा जीवन उच्च विचार की प्रेरणा दें।

माता-पिता को चाहिए कि घर पर निरर्थक चिलकथा (कामिक्स) व अश्लील साहित्य न रखे। बच्चों को महापुरूषों के जीवन चरित्र व देश प्रेम से सम्बन्धित साहित्य ही पढ़ने को दे, क्योंकि सद्साहित्य ही समाज का दर्पण होता है। **घर की दीवारों पर भी देशभक्तों, वैज्ञानिकों व महापुरूषों के वीरता व साहस से परिपूर्ण प्रेरणा दायक चित्रों को टांगे। बच्चों को तोता-मैना, परियों, व भूत प्रेत से सम्बन्धित काल्पनिक कहानियां न सुनाये बल्कि देश प्रेम, वीरता व साहस से युक्त निर्भयता, बुद्धिचातुर्य्य व आत्मबल बढ़ाने वाली कहानियां, कवितायें, गीत, भजन व श्लोक आदि सुनायें व याद करायें, इससे बच्चों को अच्छे संस्कार व आन्तरिक प्रेरणा मिलेगी।**

बच्चों को ब्रह्म मुहूर्त में जगाने की आदत डालें व नियमित रूप से शौच, स्नान आदि के बाद आसन, प्राणायाम, ध्यान, व्यायाम व ईश्वर प्राणीधान करने की प्रेरणा दे जिससे उनमें अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहते हुए शरीर को सुन्दर स्वस्थ व बलिष्ठ रखने के प्रति रूचि व चेतना जागृत होगी तथा आत्मबल भी बढ़ेगा। उन्हें सदैव ब्रह्मचर्य का पालन करना सिखायें। बच्चों को प्रेरित करे कि वे परिवार व समाज के सभी बड़े, सम्मानित व्यक्तियों व विद्वानों का सम्मान व आदर करें, उनको यथोचित अभिवादन चरण स्पर्श व नमस्ते करें। गलती होने पर नम्र होते हुए माफी मांगे, समय से विद्यालय जायें, समय से पढ़े, रात्रि में देर तक न पढ़े, समय से खेले तथा अल्पाहार व भोजन भी समय से ही ग्रहण करें। रात्रि में देर तक न जागते हुए जल्दी सो जाये और प्रातःकाल जल्दी उठे। जीवन में कठिनाइयों व परेशानियों से तनिक भी न घबरायें न ही विचलित हो बल्कि धैर्य से काम लें। सभी से प्रेम से बोले, स्वभाव से सदा नम्र रहें, भाई, बहिन, मित्र या अन्य किसी भी बड़े-छोटे व बराबर वाले से छोटी-छोटी बातों पर बहस व लड़ाई झगड़ा न करे। **माता-पिता व आचार्यों को चाहिए कि वे जो कुछ भी बच्चों को सिखाना**

शेष पृष्ठ २६ पर....

thearyasamaj.org

गतांक से आगे.....

जन्मपत्री तथा भविष्यवाणियाँ

-पं. मनसाराम वैदिक तोप
साभार-वेद प्रकाश

जाट के घर पर ज्योतिषी – कहते हैं कि एक जाट खेत में गया हुआ था। उसकी धर्मपत्नी घर पर ही थी। ज्योतिषी जी घर पर उसकी स्त्री के पास आया और उसका हाथ देखकर बतलाया कि तुम्हारे ऊपर ढाई वर्ष के लिए कठिन समय है। यह सुनकर उस जाटनी के तो होश ही उड़ गए। इतने में ही जाट भी अपने खेत का कार्य निपटाकर घर पर आ गया। जाटनी ने जाट को देखकर कहा कि **''देखो, हमारे ऊपर तो ढाई वर्ष के लिए बहुत विपत्ति है। यह पण्डित जी ने बतलाया है।''**

जाट ने पण्डित जी से पूछा – **''यह विपत्ति किसी प्रकार से टल भी सकती है क्या?''**

ज्योतिषी जी ने कहा – **''हाँ, गेहूँ वा घृत आदि के दान से विपदा दूर की जा सकती है।''**

यह सुनकर जाट ने जाटनी से कहा–**''भीतर से एक मन गेहूँ पण्डित जी को लाकर दान कर दो। यह बला तो दूर करनी ही पड़ेगी।''**

यह सुनकर जाटनी तो गेहूँ लेने भीतर चली गई। जाट ने भी अन्दर से घर का कुण्डा लगा दिया और एक छोटा–सा डण्डा लेकर ज्योतिषी जी की पिटाई आरम्भ कर दी और सिर से लेकर पाँव तक उसकी खूब पिटाई–कुटाई कर दी। तब ज्योतिषी जी ने करबद्ध विनती करके चौधरी से कहा – **''अब की बार मेरी जान छोड़ दो। मैं भविष्य में कभी ऐसा काम नहीं करूँगा।''**

इस पर जाट ने कहा कि **''पण्डित जी, मैं आपको छोड़ तो दूँगा, परन्तु एक बात बतलाएँ कि आपको हमारी तो ढाई वर्ष की विपत्ति का पूर्व से ही ज्ञान हो गया, परन्तु आपको अपनी विपदा का ढाई मिनट पहले भी पता नहीं लगा कि अभी कुण्डी बन्द करके आपकी पिटाई होगी!''**

जब बिहार में भूकम्प आया – जब बिहार में भूकम्प आया तो सैकड़ों जाने गई और लाखों रूपये की स म्पदा नष्ट हो गई। कोई भी ज्योतिषी एक मिनट पहले तक नही बतला सका कि भूकम्प आएगा। परन्तु जब भूकम्प आ चुका तो एक ज्योतिषी ने समाचारपत्रों में भविष्यवाणी प्रकाशित करवा दी कि २८ फरवरी की रात्रि पुनः वैसा ही भूकम्प आएगा। शरद् ऋतु थी, कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी, लोग अपने–अपने बिस्तर उठाए हुए भागे–भागे फिरे। न कुछ आया, न गया।

कोयटा में भगदड़ कैसे – अब देख लो, यह कोयटा का भूकम्प जिसमें पचास सहस्त्र जन समाप्त हो गए और करोडों की सम्पत्ति नष्ट हो गई, परन्तु कोई ज्योतिषी एक मिनट पूर्व तक नहीं बतला सका कि भूकम्प आने वाला है। परन्तु जब आ चुका तो अमृतसर में एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी कि आज रात को तीन बजे वैसा ही भूकम्प आएगा। गर्मियों के दिन थे। लोग मकानों की छतों पर सोए हुए थे। एक गृहस्थी के घर में चूहों ने रसोई के पात्रों में खट–खट कर दी। उसको तो पूर्व से भूकम्प का संस्कार था। **'भूकम्प–भूकम्प'** कहकर शोर मचा दिया। सारे मुहल्ले में भगदड़ मच गई और देखते–ही–देखते नगर भर में भागा–दौड़ी पड़ गई। न कुछ आया, न गया।

टर्की के भूकम्प के समय – अभी थोड़े दिन हुए टर्की में भूकम्प आया जिसमें तीस सहस्त्र व्यक्ति मारे गए और करोड़ों की सम्पदा का विनाश हो गया। परन्तु यूरोप का एक भी ज्योतिषी एक मिनट पहले तक नहीं बतला सकता कि भूकम्प आवेगा। परन्तु लाहौर के ज्योतिषियों ने समाचारपत्रों में प्रकाशित करवा दिया कि कश्मीर में भूकम्प आएगा। श्रीनगर के लोग रात को शीत में मैदानों में पड़े रहे। न कुछ आया न गया।

प्रथम विश्वयुद्ध के समय – आज से पच्चीस वर्ष पूर्व जब कि अंग्रेजों का जर्मनी से युद्ध छिड़ा हुआ था, उस समय टर्की जर्मनी के साथ था। मैंने स्वयं उस समय मुसलमानों को यह कहते हुए अपने कानों से सुना था कि हमारी हदीसों में लिखा है कि अमुक तिथि को टर्की का शासक जामा मस्जिद में आकर नमाज पढ़ेगा। और यह हमारे वाले भी भागवत का पोथा बगल में लिये फिरते थे कि बस इतना ही टोपी–राज रहना था। अब इनकी टोपी समाप्त होने वाली है। यदि शासन इन बातों को सुनकर हाथ–पाँव ढीले कर देता तो टर्की का शासक भी जामा मस्जिद में आकर नमाज पढ़ लेता और उनकी टोपी भी समाप्त हो जाती। परन्तु शासक तो जानता था कि ये सब अंधविश्वास की बातें हैं। ये बातें कभी व्यवहार में आने वाली नहीं है। सरकार पूर्ववत् अपने पुरूषार्थ में लगी रही। परिणाम यह निकला कि उनकी हदीसें धरी–धराई रह गई और इनका भागवत का पोथा धरा–धराया रह गया। अंग्रेजी राज्य पूर्ववत् भारत में दनदनाता रहा।

सेठों को दीवालिया कर दिया – इन ज्योतिषियों ने सैकड़ों सेठों का तो दीवाला ही निकलवा दिया। जब ये ज्योतिषी लोग बाजार में जाते तो दुकानदार लोग इनके पीछे, लग जाते–**'महाराज! गेहूँ का घाव घटेगा या चढ़ेगा? सोना मन्दा होगा अथवा तेज?' दस को मन्दा बता देंगे और दस को कहेंगे–भाव चढ़ेंगे। कोई मरे कोई जिये, सुथरा घोल बताशे पिये।'** यदि भाव चढ़े तो दस महँगे वालों को लूट लिया, यदि सस्ता हो गया तो दस मन्दे वालों को लूट लिया। इस ठगी का संसार में कहीं भी अन्त नहीं है।

कोई कुशल व्यापारी कहे तो – यदि कोई व्यापार में सुदक्ष व्यक्ति किसी वस्तु की उपज व खपत का अनुमान लगाकर कोई बात बतलावे, तो सम्भव है कि उसका कथन कुछ सीमा तक सत्य सिद्ध हो, परन्तु जिन लोगों का व्यापार से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है, उन लोगों से व्यापार के सम्बन्ध में परामर्श लेना स्वयं को डुबोने वाली बात नहीं तो क्या है? यदि इन लोगों को मन्दे व तेजी का पता लग जाता तो ये लोग स्वयं ही सौदे करके करोड़पति क्यों न बन जाते? परन्तु ये तो दूसरों को ही करोड़पति बनाते फिरते हैं। स्वयं तो दो–दो पैसे के लिए लोगों की दुकानों के चक्कर काटते हुए जूते घिसते रहते हैं।

लायलपुर में बाबू बर्बाद हो गए – महाशय केसरचन्द जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा ने बताया कि लायलपुर में एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि यह तोरिया जिसका तेल निकलता है, यह नौ रूपये मन हो जावेगा। उस समय तोरिया का भाव साढ़े चार रूपये मन था। बाबू लोगों ने जो सर्विस में थे, बैंकों व डाकघरों से अपनी–अपनी पूँजी निकलवाकर यथाशक्ति सहस्त्रों रूपये का तोरिया खरीद लिया। परन्तु तोरिया का भाव गिरकर ढाई रूपये मन हो गया। सर्विस करने वाले अनेक बाबू इस धंधे में बर्बाद हो गए। इनमें से कुछ एक मिलकर ज्योतिषी जी के पास गए और पूछा कि आपके ज्योतिष को क्या हुआ? वह बड़ी सरलता से बोले, **''मेरी गणना में एक बिन्दु का अंतर रह गया जो मुझे दिखाई न दिया।''** अब ज्योतिषी को तो केवल एक बिन्दु का पता न चला, परन्तु उसकी भूल से लोगों के सहस्त्रों डूब गए।

thearyasamaj.org

ज्योतिषी कैसे ठगते हैं - एक ज्योतिषी गलियों में जाता है तो ये हमारी माताएँ झट उसके आगे हाथ कर देती है कि देखना बाबा, मेरे क्या होगा? अब यदि बाबा कहे कि तुम्हारे कुछ नहीं होगा तो बाबे को क्या मिले? बाबा कहता है कि **''माई जी, लड़का होगा लड़का!''** माई बहुत प्रसन्न होती है और कुछ-न-कुछ राशि नौ मास पूर्व ही अग्रिम दे देती है। फिर वह पड़ोसन के पास जाकर कहता है कि **''होगी तो उसके यहाँ कन्या, परन्तु मैंने उसका मन प्रसन्न करने के लिए पुत्र कह दिया है।''** इतना कहकर ज्योतिषी जी तो चलते बने। अब आए एक वर्ष के पश्चात्। आप जानते ही हैं कि कोई ऊँट-घोड़ा तो होने से रहा! या लड़का होगा या लड़की होगी! यदि लड़का हुआ तो उसके पास पहुँचे कि देखा, हमने कहा था कि पुत्र का जन्म होगा! अब लाओ कुछ भेंट-पूजा! यदि कन्या का जन्म हुआ तो उसके पास न जाकर पड़ोसन के पास पहुँचे, हमने कहा था कि उसके कन्या होगी, हमने उसका मन प्रसन्न करने के लिए लड़का कह दिया था। अब लाओ कुछ भेंट-पूजा! यदि पुत्र हुआ तो उसको लूटा, यदि लड़की हुई तो दूसरे को लूटा! इस ठगी का जगत् में कोई अन्त ही नहीं।

माँ-बेटा दोनों ज्योतिषी - जिन दिनों हम स्कूलों में पढ़ा करते थे, उन दिनों हमने एक चुटकुला पढ़ा था। एक बालक ने कहा कि मैं बड़ा ज्योतिषी हूँ और मेरी माँ मेरे से भी बढ़कर ज्योतिषन है। लोगों ने पुछा कैसे? उसने कहा जब मेघ आते हैं तो मैं कहता हूँ वर्षा होगी, और मेरी माँ कहती है कि नहीं वर्षेगे। तो या तो वह होता है जो मैं कहता हूँ, या वो होता है जो मेरी माँ कहती है।

इस प्रकार का ज्योतिषी तो प्रत्येक व्यक्ति बन सकता है। ये हाथ में जो रेखाएँ होती हैं, ये तो हाथों में जोड़ों के निशान है। जो लोग हाथों से श्रम करते हैं उनके हाथों पर ये रेखाएँ कम होती है, और जो लोग हाथों से थोड़ा काम करते हैं उनके हाथों में रेखाएँ अधिक होती है। इन हाथों में कही पर भी धन, सम्पदा, आयु, सन्तान, विवाह आदि लिखा हुआ नहीं होता।

हाथ में क्या लिखा है? - कहते हैं कि एक आर्योपदेशक एक ग्राम में प्रचार करने के लिए गया। जब वह एक सज्जन के घर भोजन करने गया तो एक माता ने उसके आगे अपना हाथ करते हुए कहा, **''देखना पण्डित जी! मेरे हाथ में क्या है?''** पण्डित जी ने सहज रीति से कहा, **''माताजी! तुम्हारे हाथ में मुझको तो हड्डियाँ, लहू व चर्म दिखाई दे रहा है।''** माता ने कहा कि **''पण्डित जी! मैं यह बात नहीं पूछ रही। मैं तो यह पूछ रही हूँ कि मेरे इस हाथ में पुत्र कितने लिखे हैं और पुत्रियाँ कितनी लिखी है? इनमें से कितनों का जीवन लिखा है और कितनों का मरण लिखा है?''**-इस पर पण्डित जी ने उत्तर दिया -**''माताजी! यह हाथ है, नगरपालिका का कार्यालय नहीं है।''**

मौत का समय बताकर - ये ज्योतिषी लोग कितने ही व्यक्तियों की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी करके उनको झंझट में फँसा देते हैं और बहुत-से लोग तो ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करके स्वयं जनता के उपहास का कारण बन जाते हैं। उदाहरण के लिए अभी **''दैनिक प्रताप''** लाहौर के २५ अप्रैल सन् १९४० के पृष्ठ १८ पर कालम तीन में एक रोचक समाचार छपा है-

''ज्योतिष में अंधविश्वास की सीमा तक आस्था ने एक व्यक्ति को किस प्रकार समय से पूर्व मृत्यु-शय्या पर लिटा दिया, इस प्रकार की घटना अभी इन दिनों शेखूपुरा में घटी है। लाला दीवानचन्द मल्होत्रा, जो रिटायर्ड सरकारी अधिकारी हैं और रावलपिण्डी के हैल्थ आफीसर डॉ. हरबंसलाल के पिता है, ज्योतिष में बहुत विश्वास रखते हैं। उनकी आयु इस समय लगभग साठ वर्ष है। एक ज्योतिषी ने लालाजी को बताया कि वह अमुक दिन अमुक समय स्वर्गवासी हो जाएँगे। इस पर लालाजी ने अपने सब प्रेमियों, मित्रों व सम्बन्धियों को सूचित कर दिया। दान-पूण्य जो करना था, करके, मृत्यु की बाट देखने लगे। चारपाई छोड़कर धरती पर लेट गए। आप एक सप्ताह तक मृत्यु की प्रतीक्षा में रहे। चिन्ता से भार घटकर आधा रह गया। ज्योतिषी द्वारा बताई गई मौत की घड़ी निकल गई। मौत नहीं आई, नहीं आई। लालाजी ने अपने सब मित्रों सगे-सम्बन्धियों को क्षमा-याचना व धन्यवाद के पश्चात् लौट जाने को कहा। यह घटना सारे नगर की रूचि व मनोरंजन का विषय बनी हुई है।''

वह हरिद्वार मरने गया - एक सज्जन की ज्योतिषी ने जन्मपत्री बनाई और उसमें लालाजी की आयु ४७ वर्ष की लिखी थी। जब लालाजी की आयु ४६ वर्ष बीत गई तो ४७वें वर्ष आप अपनी आयु समाप्त करने के लिए हरिद्वार जा रहे थे तो मार्ग में पं. जनार्दन जोशीजी डिप्टी कलैक्टर अल्मोड़ा भी उसी डिब्बे में सवार हुए। लालाजी से वार्तालाप होने पर उनका प्रयोजन सुनकर पण्डित जी बहुत हँसे और उन्हें समझाने लगे कि **''परमात्मा के सिवा यह किसी को भी पता नहीं कि किसकी कितनी आयु है। फलित ज्योतिष केवल लोगों को ठगने का बहाना है। मैं भी ज्योतिष जानता हूँ और मुझे इस पर कतई विश्वास नहीं है।''** पण्डित जी की बात लालाजी की समझ में आ गई और वह हरिद्वार से स्नान करके गुरदासपुर लौट आए। अब उनकी आयु ६३ वर्ष है और स्वस्थ-नीरोग जीते जागते विच रहे हैं।

और वह न मरे - पं. नन्दलाल जी चौधरी बटाला आर्यसमाज में रहते हैं। उनकी जन्मपत्री ज्योतिषी ने बनाई और आयु ७० वर्ष लिखी है। इस समय पण्डित जी की आयु ८० वर्ष है और वह जीते-जागते स्वस्थ दिन बिता रहे हैं। यह बात उन्होंने स्वयं मुझे बताई।

एक महात्मा मरने बैठे तो - रावलपिण्डी में एक चरायते वाले सिख महात्मा प्रसिद्ध हैं जो कि सब तीर्थों को चरायते का जल पिलाते हैं गत दिनों तक ज्योतिषी ने उन्हें बतलाया कि आपका निधन आज से साठ दिन के पश्चात् हो जाएगा। महात्मा जी इस बात को सुनकर गुरूद्वारे में बैठ गए और अपनी मृत्यु का विज्ञापन देकर घोषणा कर दी। स्त्रियाँ, पुरूष व बालक सब दर्शनार्थ आने लगे। पर्याप्त भेंट-पुजापा चढ़ने लगा। सहस्त्रों रुपये चढ़ावा पाकर बाबाजी ने एक सौ रुपये बाजेवालों को, पचास रूपये मोटरवालों को और पचास रुपये फूलों वालों को दिए और कहा कि मृत्यु के पश्चात् मेरी शव-यात्रा निकालकर पंजा साहेब होते हुए मुझे अटक नदी में प्रवाहित कर देना। जब पंद्रह दिन शेष रह गए तो पुलिस को भी पता लगा और उसने महात्मा जी पर पहरा लगा दिया और एक डॉक्टर भी विधिवत् आकर बैठ गया। जब नियत समय समाप्त होने में दो घण्टे शेष रह गए तो एक मोटर को फूलों से सजाकर उसमें महात्मा जी को बिठाया गया और बाजा बजने लगा। निश्चित समय पर वह न मरे, तो लोगों ने महात्मा जी पर ईट-पत्थर की वर्षा आरम्भ कर दी और उच्च स्वरों में कहा, **''अब आप मरते क्यों नहीं? लोगों को इतना रूपया ठग लिया।''** पुलिस ने बहुत कठिनाई से लोगों से महात्मा की जान बचाई। मोटर को दौड़कर थाना में ले गए। जब पुलिस ने वास्तविकता की जाँच-पड़ताल की

शेष पृष्ठ ४२ पर....

thearyasamaj.org

अंधविश्वासों से भरा पुलिंदा - गरुड़ पुराण

प्रस्तोता -श्रीमती सुशीला वर्मा एडवोकेट
उर्वशी उन केन्द्र, नवलपुरा, बड़वानी (म.प्र.)
चलभाष-९४०७१७६०६३

भारतीय वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष अनुसंधान में इतनी उन्नति कर ली है कि आज अमेरिका जैसा देश इस का लोहा मानता है। वहीं, दूसरी तरफ देश का समाज अंतरिक्ष संबंधी अंधविश्वासों में उलझ कर अपना एक पैर गोबर में ही रखना चाहता है। हमारा समाज सदियों से अंधविश्वासों की बेड़ियों में जकड़ा है। इस समाज को पथभ्रष्ट करने वाली धार्मिक पोथियों में '**गरुड़ पुराण**' का नाम सब से ऊपर है।

गरुड़ पुराण ऐसा पाखण्ड पोथा है जिसमें आम आदमी की मौत का भय दिखाकर तरह-तरह के अंधविश्वासों व दान जैसी मिथ्या बातों में उलझाने का प्रयत्न किया गया है। यह विडम्बना ही है कि सदियों बाद भी समाज ने गरुड़ पुराण में वर्णित मृत्यु संबंधी कर्मकांडों का त्याग नहीं किया है, परिवारों में आज भी मृत्यु हो जाने पर गरुड़ पुराण का पाठ किया जाता है और पुत्र सिर मुंडवा कर आयुपर्यंत दानपुण्य के नाम पर लुटता है।

गरुड़ पुराण में १६ अध्याय है। हर अध्याय में मृत्यु के बाद मनुष्य की कथित यमलोक यात्रा का हास्यास्पद विवरण है आरंभ के अध्यायों में '**पाप**' विशेष की यातना, यातना देने के तरीकों, देवी-देवताओं, पुजारियों व पुरुषों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। जबकि अंतिम अध्यायों में तरह-तरह का दान करने की सलाह देकर पापों से मुक्ति प्राप्त करने की बात कही है।

आम धारणा है कि मनुष्यों को कथित यमदूत उनके पापों की सजा देते हैं लेकिन गरुड़ पुराण के अंतिम अध्यायों से तो यही जाहिर होता है कि मनुष्य पाप करके यदि गरुड़ पुराण में वर्णित तरीके से दान करे तो वह पापों से मुक्त हो जाता है।

अंधविश्वास कैसे-कैसे

गरुड़ पुराण में कहा गया है कि पापियों के प्राण गुदा जैसी नीचे की जननेंद्रियों से और पुण्य करने वाले व्यक्तियों के प्राण ऊपर के अंगों से निकलते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि मनुष्य की मौत श्वसन तंत्र फल हो जाने से होती है।

गरुड़ पुराण के प्रथम अध्याय के अनुसार, मृत्यु के बाद मनुष्य का कद एक अंगूठे के आकार जितना रह जाता है और उसको यमलोक की यात्रा करवाने के लिए निकले दूत भयानक होते हैं, पुस्तक के प्रथम अध्याय में कहा गया है कि यमदूत अंगूठे के आकार के मृत व्यक्ति को घसीटते हैं, जहरीले सांपों से डसवाते हैं तेज कांटों से बेधते हैं, शेर व बाघ जैसे हिंसक जानवरों के सामने आहार के रूप में परोसते हैं, आग में जलाते हैं, कुत्तों से कटवाते व बिच्छुओं से डसवाते हैं।

यहाँ प्रश्न उठता है कि इतनी यातनाएं देने के बाद भी अंगूठे के आकार का मनुष्य जीवित कैसे रह सकता है? और क्या विशालकाय यमदूतों को अंगूठे के आकार के व्यक्ति को घसीटने की जरूरत पड़ सकती है?

सजाएं यहीं समाप्त नहीं होती। इतने छोटे आकार के व्यक्ति को छूरी की धार पर चलाया जाता है। अंधेरे कुओं में फेंका जाता है। जोंकों भरे कीचड़ में फेंक कर जोंकों से कटवाया जाता है। उसे आग में गिराया जाता है। तपती रेत पर चलाया जाता है। उस पर आग, पत्थरों, हथियारों, गरम पानी व खून की वर्षा भी की जाती है। अंगूठे के आकार के व्यक्ति को वैतरणी नदी जिस का किनारा हड्डियों से जोड़ा गया है व जिस में रक्त, मांस व मवाद का कीचड़ भरा है, में डुबोया जाता है।

उस के बाद यमदूत उसे समय-समय पर भारी मुगदरों से भी पीटते हैं। मृतक की नाक व कानों में छेद कर के उसे घसीटते हैं और शरीर पर लोहे का भार लाद कर भी चलवाते हैं। इस तरह की कई कथित यातनाएं मृतक को दी जाती हैं। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से वह मरता नहीं! इस वैज्ञानिक युग में इस तरह की बातें अविश्वसनीय व हास्यास्पद नहीं है तो और क्या है?

गरुड़ पुराण में कई बातें परस्पर मेल नहीं खातीं। मसलन, प्रथम अध्याय के ३७वें श्लोक में कहा गया है कि यमलोक तक के मार्ग में कहीं वृक्षों की छाया व विश्राम का स्थल नहीं है जबकि इसी अध्याय के ४४वें श्लोक में मृतक को यमदूतों सहित एक वट वृक्ष के नीचे विश्राम करने की बात कही गई है।

दूसरे अध्याय के ७७वें श्लोक में कहा गया है कि शौतादय नाम के कथित नगर में हिमालय से १०० गुना अधिक सर्दी पड़ती है। जब हिमालय, जहाँ का तापमान शून्य से नीचे रहता है, में ही कोई मानव बस्ती नहीं है तो वहां से १०० गुणा अधिक सर्दी वाली जगह पर एक नगर कैसे बस सकता है? शून्य से नीचे के तापमान में खून जमना आरंभ हो जाता है। जहां शून्य से नीचे १०० डिग्री या उस से अधिक ठंडा तापमान होगा वहां से तो यमदूत भी जीवित नहीं गुजर सकते।

गरुड़ पुराण के चौथे अध्याय में तीर्थों, ग्रंथों व पुराणों पर विश्वास न करने वाले, नास्तिक व दान न देने वाले व्यक्तियों को पापी कहा गया है। मृत्यु के बाद उनको नरक भुगतना पड़ता है।

चौथे अध्याय के अनुसार, गुड़, चीनी, शहद, मिठाई, घी, दूध नमक व चमड़ा बेचना पाप है। ५वें अध्याय के मुताबिक गर्भ नष्ट करने वाला डॉक्टर म्लेच्छ जाति में जन्म लेता है तथा सदा रोगों से पीड़ित रहता है। इसी अध्याय के ५वें श्लोक के अनुसार जो व्यक्ति अकेला ही किसी स्वादिष्ट वस्तु को खाता है उसे गलगंड रोग हो जाता है। श्राद्ध में अपवित्र अन्न दान में देने वाले को कुछ रोग हो जाता है, पुस्तकें चुराने वाला जन्म

thearyasamaj.org

से ही अंधा व पानी चुराने वाला पपीहे के रूप में जन्म लेता है। क्या इन बातों पर विश्वास किया जा सकता है?

सामाजिक बुराइयों का पक्ष

गरुड़ पुराण में **जातिप्रथा व सतीप्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों का विरोध करने के स्थान पर खुलेआम इन का समर्थन किया गया है। इस पुस्तक के प्रथम अध्याय के ४०वें श्लोक में पति की मृत्यु पर सती न होने वाली पत्नियों को नरक भोगने की सजा देने की बात कही गई है। १०वें अध्याय के श्लोक संख्या ३४ से ४० तक सतीप्रथा के महत्व पर प्रकाश डालकर विधवाओं के लिए सती होने के तरीके सुझाए गए हैं।**

इसी अध्याय के श्लोक संख्या ४५ के अनुसार, पति के मरने पर जब तक स्त्री अपने पति के साथ सती नहीं होती तब तक उस का मृत पति उस शरीर से अलग नहीं होता। **श्लोक ४७ के मुताबिक, सती होने वाली पत्नी को स्वर्गलोक प्राप्त होता है।** श्लोक संख्या ५३ के अनुसार, पति के साथ सती न होने वाली पत्नियों को विरह की आग में जलने की यातना दी जाती है। देश के राजस्थान जैसे राज्यों में आज भी सतीप्रथा की बात होती रहती है। इस प्रथा को गरुड़ पुराण जैसे धार्मिक ग्रंथ ही बढ़ावा देते हैं जिन पर अंकुश लगाया जाना चाहिए।

इस **अंधविश्वास पुराण** के चौथे अध्याय की श्लोक संख्या २१ के अनुसार, **वेद के अक्षरों को पढ़ने वाले व गाय का दूध पीने वाले शूद्रों को यमराज द्वारा रक्त व मवाद की नदी में वैतरणी में डुबोने की सजा दी जाती है।** ७वें अध्याय के १२वें श्लोक के अनुसार, मनुष्य की छोटी जाति की कन्याओं से दूर रहना चाहिए क्योंकि केवल सवर्ण पुरुष महिलाओं के मिलने से उत्पन्न पुत्र ही दान के माध्यम से पुरखों को स्वर्ग पहुँचा सकता है। गरुड़ पुराण **छठे अध्याय के ३६वें श्लोक में ब्राह्मण समुदाय को सबसे ऊँचा माना गया है एक प्रकार से यह पुस्तक इस समुदाय के हितों को ध्यान में रख कर ही लिखी गई है।**

दान पर जोर

पहले अध्याय के ४२वें श्लोक के अनुसार, मनुष्य की मृत्यु के समय किया गया दान मृतक व्यक्ति खाता है। ५० वें श्लोक के अनुसार १० दिन तक पिंडदान करने से मृतक शरीर के विभिन्न अंग बनते हैं।

मृतक की यमलोक की पूरी यात्रा के दौरान तरह-तरह के भय दिखाकर उसके परिजनों को कुछ न कुछ दान करने की सलाह दी गई है। दूसरे अध्याय के ६७वें श्लोक में कहा गया है कि जो मनुष्य दान नहीं करता वह वैतरणी नदी में डूब जाता है।

चौथे अध्याय के १७वें श्लोक के मुताबिक, दान देते हुए व्यक्ति को रोकने वाला भी मवाद की ही नदी में गिरता है। ५वें अध्याय में लिखा है कि यदि आप से जीवन में भूलवश कई पाप हो भी गए है तो चिंता न करें, इससे बचने का उपाय ८वें अध्याय के ६७वें श्लोक में मौजूद है। काली या लाल गाय के सींगों को सोने व पैरों को चांदी का आवरण चढ़ाकर यदि उसे काले कपड़े से ढँक कर तांबे के पात्र, सोने से निर्मित यमराज की मूर्ति को कपास सहित दान करें तो समझिए आप की नैया पार लग गई। आप को वैतरणी पार कराने विशेष दूत आएंगे।

दानपुण्य लेने वालों का वर्ग विशेष जो 'चार्ज' नाम से जाना जाता है, मृतक के हाथ से दान ग्रहण करता है। आम लोगों का मानना है कि इस से मृतक के पाप धुलते हैं जबकि सच्चाई यह है कि इस से केवल दान ग्रहण करने वाले का ही कल्याण होता है। इसलिए ऐसे पुराण व ग्रंथ, जिनके माध्यम से समाज का एक वर्ग विशेष दूसरे वर्गों के हितों पर कुठाराघात कर, अंधविश्वासों के बल पर समाज को भयभीत करके अपने हित साधे, निश्चित रूप से सामाजिक उन्नति में बाधा है।

भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में की जा रही प्रगति तभी सार्थक साबित हो सकती है जब देश का समाज गरूड़ पुराण जैसे अंधविश्वास उत्पन्न करने वाले पुराणों व इन का पाठ करके उसे भयभीत करने वाले धर्म के ठेकेदारों का बहिष्कार करें।

(पुराणों द्वारा जनित अन्धविश्वासों और पाखण्डों की पोल खोलती वैदिक विद्वान् प. मनसाराम जी द्वारा रचयित पुस्तकें **पौराणिक पाल प्रकाश** व **पौराणिक पोप पर वैदिक तोप** अवश्य पढ़कर अन्धविश्वासों से मुक्ति और पाखण्ड की कद से मुक्ति प्राप्त करें - सम्पादक) ●

पृ. २२ का शेष **बच्चों का चरित्र निर्माण.....**

चाहते हैं उन सभी गुण कर्म व स्वभावों को स्वयं अपने आचरण व व्यवहार में अवश्य धारण करें और बच्चों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करते हुए प्रेरणा दे कि समाज में किसी भी व्यक्ति की पहचान व प्रतिष्ठा, पद, जाति, वर्ण, सम्प्रदाय व आर्थिक सम्पन्नता से नहीं होती बल्कि उसके उत्तमोत्तम व श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव से होती है।

बच्चों को स्वयं अपने-अपने परिवार, समाज, देश व राष्ट्र के गौरव को ऊँचा उठाने के लिए अधिकाधिक परिश्रम करते हुए बहुत अधिक आगे बढ़ना है, उन्हें अन्यों से श्रेष्ठ व महान् बनना है।

सत्य व धर्म परेशान तो हो सकता किन्तु पराजित कभी नहीं होता, इसीलिए कहा गया है **'सत्यमेव जयते'** सदा सत्य की ही विजय होती है और **'सुखस्य मूलम् धर्मः'** सुख (आनन्द), उन्नति एवं विजय का आधार धर्म है। अतः श्रेष्ठ व महान बनने के लिए असत्य व अधर्म का त्याग करते हुए सदैव धर्म व सत्य का अनुकरण, अनुसरण व सेवन करते हुए **विद्या ददादि विनयम्, विनयाद्याति पात्रताम्। पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद् धर्मम् ततः सुखम्** (विद्या के द्वारा विनय, विनय से पात्रता, पात्रता के द्वारा धन, धन से धर्म तथा धन के द्वारा सुख की प्राप्ति होती है) के लक्ष्य व संकल्प को साकार करते हुए निरन्तर अध्ययनशील प्रयत्नशील व कर्मशील रहना है, यही जीवन की सफलता का सोपान है।

सदाचारी व चरित्रवान बच्चे ही देश समाज व राष्ट्र की सुदृढ़ आधारशिला है। अतः बच्चों को ज्ञानवान, सुसंस्कारित, चरित्रवान व सुयोग्य नागरिक बनाकर राष्ट्र को देना ही सच्ची देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति व ईश्वर-भक्ति है। अतैव सभी लोगों को इस महत्वपूर्ण व पुनीत कार्य में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाते हुए निरन्तर प्रयत्नशील रहने का प्रयास करते हुए अपने मौलिक व नैतिक कर्तव्य व धर्म का पालन सुनिश्चित करना चाहिए।

सत्यं, रूपं, श्रुतं, विद्या, कौल्यं, शीलं, बलं, धनम्।
शौर्यं च चित्रभाष्यं च दशेम स्वर्गयोनयः।।

सत्य, सुन्दर रूप, शास्त्र श्रवण, कुलीनता, शील, बल, धन, शूरता और आश्चर्य भाषण का सामर्थ्य-ये दस स्वर्ण के साधन है। ●

thearyasamaj.org

मेरा विचार आप तक – वैचारिक खुराक की एक और खेप

हमारी जंग है – सदाचार बनाम भ्रष्टाचार

– सुभाषचन्दर यादव 'एड्वोकेट'
सीविल कोर्ट, रेवाड़ी, हरियाणा
चलभाष-९४१६३७७५९१

सदाचार :- धर्म के चार मूलाधारों में से एक है सदाचार। सदाचार-परम् धर्म है। आचरण ही श्रेष्ठ धर्म है। मनुष्य को आचारवान और धर्माचार से युक्त होना चाहिए। धर्माचरण से ही धर्म की प्राप्ति होती है, वृद्धि और सिद्धि होती है, और धर्म को गति मिलती है। अब अधिकाधिक लोग आचारहीन होते जा रहे हैं, इसलिए धर्म का पहिया रूकता जा रहा है। भौतिक विकास को ही, लोग जीवन का परम् लक्ष्य मान बैठे हैं। इसलिए चारो तरफ अनैतिकता और भ्रष्टाचार से त्राहि-त्राहि मच रही है। बड़ी विडम्बना की बात है कि लोग भ्रष्टाचार को तो खत्म करना चाहते हैं, परन्तु सदाचार को अपनाने और आचारवान बनने को कोई तैयार नहीं। लोगों की सोच, कथनी और करनी में बड़ा फर्क है। यही वजह है कि समाज और जगत् से भ्रष्टाचार का खात्मा होना एक कोरी कल्पना है। राज्य अगर राज्य शक्ति की दण्ड की ताकत पर भ्रष्टाचार खत्म करने के लिएं कानून भी बनाए तो भ्रामक कदम है। ऐसे में लोग भ्रष्ट आचरण को छोड़ने की बजाए भ्रष्ट आचरण के तौर तरीके बदलते रहेंगे। भ्रष्टाचार के एक रास्ते को कठोर कानून बनाकर बन्द कर दिया तो दूसरे रास्ते खोज निकाल लिए जाएंगे, परन्तु भ्रष्टाचार बन्द नहीं होगा।

भ्रष्टाचार समस्या :- सबको मालुम है कि भ्रष्टाचार कितनी गंभीर समस्या है। कैंसर और संक्रामक रोग की तरह इसने शासन-प्रशासन को जहाँ अन्दर से खोखला कर दिया, वहीं दूसरी तरफ राजनैतिक दलों और सरकारों से लेकर न्यायपालिका और मीडिया तक को, और कारोबार से लेकर खेलों तक को लील कर रख दिया है। राजनैतिक चोंचलेबाजी, कोरे नारेबाजी और खोखले वायदेबाजी से भ्रष्टाचार दूर होने वाला नहीं है। इससे लड़ने के लिए न सिर्फ बहुत ताकतवर जमात और जबरदस्त जागरूकता चाहिए, बल्कि राजनैतिक दलों को अपनी वोट की राजनीति से ऊपर उठकर भ्रष्टाचारियों के प्रति शून्य सहनशीलता, (जीरो टोलरेन्स) की नीति की घोषणा करनी होगी। इसके अलावा भ्रष्टाचार के उन मूल कारणों की तह तक भी जाना होगा जो इसे पैदा करने, पोषण करने, बढ़ावा देने और संरक्षण देने में ढाल बने हुए हैं। समाज और देश की सभी संस्थाओं और व्यवस्थाओं के बुनियादि ढांचों तक की गहराई में जाकर यह खोजना होगा कि इन संस्थाओं और व्यवस्थाओं के ढांचों की बुनियाद कहीं भ्रष्टाचार पर ही तो नहीं टिकी हुई है ? अगर ऐसा पाया जाता है तो फिर उन भ्रष्टाचार मूलक कारणों को ही जड़-मूल से उखाड़ फैंकना होगा, अन्यथा भ्रष्टाचार न व्यक्तियों से, न समाज से और न ही देश और विदेशों से मिट पायेगा फिर चाहे जितने भी भ्रष्टाचार उन्मूलन के नारे क्यों न दिए जाते रहे।

भ्रष्टाचार के मुख्य कारण

१. राजनैतिक दृष्टिकोण से :- भारत एक लोकतांत्रिक देश है। लोकतन्त्र अनेक तरह के होते हैं, परन्तु भारत में राजनीतिक लोकतांत्रिक प्रणाली को अपनाया गया है। इंग्लैण्ड की वैस्ट मिन्स्टर मॉडल की "**द्वि-संसदीय प्रणाली**" से मिलकर बना हुआ है। राजनीतिक लोकतांत्रिक संसदीय व्यवस्था में "**पूंजीवाद**" और "**नौकरशाही**" राजनीतिक लोकतन्त्र की बुनियाद है। परन्तु ये दोनों ही व्यवस्थाएं "**पूंजीवाद**" और "**नौकरशाही**" भ्रष्टाचार की जड़ है। इन भ्रष्टाचारी पूंजीवादी और नौकरशाही व्यवस्थाओं के बिना वैस्ट मिन्स्टर मॉडल की द्वि-संसदीय प्रणाली का "**राजनीतिक लोकतन्त्र**" एक कदम भी नहीं चल सकता। यही खामी है इस राजनीतिक लोकतन्त्र में। इस तरह, इन पूंजीवादी व नौकरशाही भ्रष्टाचार मूलक व्यवस्थाओं पर टिका होने के कारण, राजनीतिक लोकतन्त्र संस्था भ्रष्टाचारमूलक व्यवस्था बन जाती है। इस तरह राजनीतिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो राजनीतिक लोकतन्त्र, पूंजीवाद और नौकरशाही इन तीनों का गठबंधन ही भ्रष्टाचार मूलक महागठबंधन है। देश में जब तक "**राजनीतिक लोकतन्त्र**" इन भ्रष्टाचार मूलक-"**नौकरशाही**" और "**पूंजीवादी**" या "**याराना पूंजीवादी**" व्यवस्थाओं के साथ गठबंधन हो कर चलता रहेगा, तब तक देश से भ्रष्टाचार खत्म नहीं हो सकता।

२. नैतिकता और मनुष्य के मूल्यांकन के आधारों के दृष्टिकोण से :- आज समाज और मनुष्य के नैतिक मूल्य और मर्यादाएं बड़ी द्रुत गति से गिरते जा रहे हैं। समाज में मनुष्य की अहमियत और हैसियत के मूल्यांकन करने के आधार बदल गए हैं। मनुष्य का मूल्यांकन इस आधार पर नहीं आंका जाता कि वो कितना सदाचारी, ब्रह्मचारी, नैतिक, मर्यादित, आदर्शवान, और आचारवान, धर्मनिष्ठ, सत्यनिष्ठ, सत्यकर्मी, सत्यवादी, लोकलाजी, शर्मशील और ईमानदार है, बल्कि इस बात से आंका जाता है कि वो और उसका परिवार कितनी धन-दौलत-सम्पत्ति का मालिक है, और कि उसके नौकर होने और नौकरी के ओहदे और तनख्वाओं के वेतनमानों से आंका जाता है। समाज के नजरिये में ये बात कोई खास मायने और अहमियत नहीं रखती कि फलां आदमी के पास इतनी भारी धन दौलत आखिर कहां से और किस जरिये से आई है फिर चाहे उसकी धन दौलत की कमाई का पेशा कितना ही अनैतिक और गैर कानूनी ही क्यों न हो। अहमियत तो सिर्फ इस बात की होती है कि वो कितनी सारी धन-दौलत का मालिक है। कोई किसी भी तरीके से एक बार धन दौलत जुटा लेता है तो बस फिर अगर वह चुनाव भी लड़े तो अलबत्ता उसकी जीत निश्चित है, वरना जीतने वाले को टक्कर देने की पोजिशन में आ खड़ा होता है, दूसरी तरफ धन-बल विहीन गरीब आदमी चुनाव में अगर खड़ा हो जाये तो उसे वोट मिलना तो दूर की बात रही, उसके साथ कोई चलने तक को तैयार नहीं होता फिर चाहे वह कितना भी ज्ञानी-ध्यानी, विद्वान्, सदाचारी और मर्यादित आदि गुणातीत ही क्यों न हो। ठीक इसी तरह चाहे कोई युवक कितनी ही डिग्रियों की पोटली बांधे सिर पर लिए फिर रहा हो और चाहे कितना ही सदाचारी, धर्मचारी, ब्रह्मचारी, वैदिक, नैतिक, आचारवान व

thearyasamaj.org

आदर्शवान, मर्यादित और गुणातीत ही क्यों न हो परन्तु अगर नौकरी नहीं लगा है तो उसकी तमाम शैक्षिक योग्यताएं और डिग्रियां और चारित्रिक गुण और योग्यताएं सब धरी रह जाती है और फिजूल मानी जाती है। रिश्तों का आधार भी संस्कृति, मान्य मर्यादाओं की बजाये नौकरी और भौतिक धन-दौलत-सम्पत्ति होने लगा है। रिश्तों में ही देख लें, अगर कोई कुआरां युवक नौकरी पा लेता है फिर तो चाहे वह कितना ही ऐबी हो, अनाचारी हो, भ्रष्टाचारी हो, दुराचारी हो, अनैतिक हो और कितने ही उसमें व उसके घर परिवार में अवगुण और एब भरे पड़े हो और अगर घर परिवार में कोठी, प्लाट, धन-सम्पत्ति हो तो बस बात ही कुछ और होती है फिर तो उन सभी अवगुणों से आंख फेरकर उसके रिश्ते तक करने के लिए आगे-पीछे दुम हिंलाते हुए लोग चक्कर काटने लग जाते हैं। हद हो गई!!! नैतिक पतन की कोई हद भी हुआ करती है, परन्तु यहां तो अब हद भी पार हो चुकी है।

नैतिक पतन से गिरे समाज में जहां धन-दौलत और नौकरी ही मनुष्यों और नौजवानों युवकों के सामाजिक अहमियत और हैसियत मापने के मान-दण्ड के आधार बन गए हो, सो भला धन दौलत और नौकरी पाने की इस अंधी दौड़ में कौन पीछे रहना चाहेगा। धन दौलत बनाने और नौकरी पाने की होड़ में, आज समाज में, नैतिक, सदाचारी और मर्यादित मूल्यों की बलि चढ़ाकर व उनकी तिलांजलि देकर लोग भ्रष्ट आचरण को अपनाकर कुसंस्कृति को ही सभ्य संस्कृति मान बैठें हैं। हद है! अब जहाँ, आचरण ही भ्रष्ट हो गए हो और भ्रष्टाचार ही जहां जीवन शैली का अंग बन गया हो, भला ऐसे देश समाज से भ्रष्टाचार अब कैसे मिटेगा? जब तक समाज और जनता सदाचारी, मर्यादित और नैतिक नहीं बन जाती है तब तक भ्रष्टाचार मिट नहीं सकता। इसलिए देश और समाज की व्यवस्थाओं और संस्थाओं से अगर भ्रष्टाचार मिटाना चाहते हो तो जनता और समाज को अपनी जीवन शैली में **''आर्य वैदिक धर्म''** और इसकी **''आर्य वैदिक सभ्यता और संस्कृति के मर्यादित आदर्शों''** को अपनाना होगा और **''आर्य वैदिक सभ्यता और संस्कृति''** की तरफ लौटना होगा तब ही जाकर मनुष्य जाति, समाज, विश्व और देश का कल्याण हो पायेगा और साथ में भ्रष्टाचार मुक्त समाज और देश का सपना भी साकार हो पायेगा।

३. वैदिक त्यागवाद और भौतिक स्वार्थवाद के दृष्टिकोण से :- महाभारत हुए ५००० वर्ष हो चुके हैं। इससे भी १००० वर्ष पहले से वैदिक धर्म मर्यादाओं में गिरावट आनी चालू हो गई थी। वैदिक मर्यादाओं और नैतिक मूल्यों में पतन शुरू हो गया था। विषयभोग, विलासिता, ऐषणाओं और स्वार्थपन का विष जीवनशैली में घुल चुका था। वैदिक त्यागवाद का स्थान, भोगवाद और स्वार्थवाद ने लेना शुरु कर दिया था। इस तरह समाज में अनैतिकता, ऐषणाओं और स्वार्थपरता के बढ़ते-बढ़ते समाज का नैतिक पतन इतना बढ़ गया कि अन्ततः मानव जाति की दूर्दशा का जिम्मेदार महाभारत की घटना घटी। फिर **महाभारत के बाद वैदिक धर्म और आध्यात्मिक ज्ञान व शिक्षा का सूर्य अस्त हो गया।** इसके बाद कालान्तर में वेद विरूद्ध वाममार्गी, चारवाक मत चला जिसका प्रचारक बृहस्पति नाम का एक नास्तिक हुआ उसने उस समय की जनता में वेद विरूद्ध यह प्रचार किया कि न कोई परमात्मा है और न कोई आत्मा है और खाओ-पिओ तथा मौज मस्ती से विषय भोग विलासी जीवन जीओ जो सही मनुष्य का परम लक्ष्य बताया। उसके बाद वाममार्गी, चारवाक मत में अनेक मतों की शाखाएं निकलती रहीं परन्तु विषय भोग विलासी जीवन शैली में कोई बदलाव नहीं आया। भोग विलासी जीवन शैली की विषय भोग विलासिता की भौतिक सामग्रियों की आपूर्ति की मांग ने विश्व के समाज को उद्योग और बाजार की संस्कृति दी, और बाजार की छीना छपटी और स्पर्धा में दो विश्व युद्ध तक हो लिए। अगर वैदिक धर्म में गिरावट नहीं आती तो न महाभारत और न दोनों विश्व युद्ध होते। भारत ही नहीं, विश्वीय देशों के समाज की जीवन शैलियों की संस्कृतियां विषय भोग विलासिता के सिद्धान्त पर ही चलती आ रही है और वैदिक त्यागवाद की जगह भौतिक स्वार्थवाद ने ले ली। ऐषणाओं और विषय वासनाओं आदि ने मानव जाति को पूर्ण रूप से जकड़ लिया। विकसित देशों ने अपने-अपने देश की जनता की विषय भोग वस्तुओं की आपूर्ति के लिए कम्पनियों के माध्यम से बड़े-बड़े बाजार-कारोबार विकसित कर लिए और अब विकासशील देशों में इन्हीं कम्पनियों के निवेश के जरिए अपने बाजार स्थापित करने की आपस में गलाकाट होड़ चली हुई है और यह होड़ ही भविष्य में फिर तीसरे विश्व युद्ध के आसार बना सकती है। पश्चिम भौतिक भोगवादी संस्कृति हमारी बची-खुची परम्परागत भारतीय संस्कृति पर भारी पड़ती जा रही है। उच्च तथा शहरी मध्यम वर्ग तो पश्चिमी संस्कृति के रंग में तकरीबन रंग ही चुका है। इस भोगविलासी भौतिकवादी संस्कृति में भौतिक विलास करने के लिए और भोग विलासी सुख सुविधा से जीवन जीने के लिए धन दौलत और सम्पत्ति को ही इंसान भगवान् मान बैठा है। इसलिए आज हर देश और विश्व समाज की मानव जाति में इतना जबरदस्त स्वार्थवाद घर चुका है कि धन दौलत सम्पत्ति और भौतिक संसाधनों की छीना झपटी की अंधी दौड़ में हर कोई देश और उनके लोग अपने स्वार्थ के सामने दूसरों के हित और दुखों की परवाह तक नहीं करते। यहीं भ्रष्टाचार की मूल जड़ है जिसकी पैदाईश वहीं से हुई जब से वैदिक धर्म और मर्यादाएं गिरनी चालू हुई थी अब देखिए भ्रष्टाचार खत्म कैसे हो? विश्व समाज से भी अगर भ्रष्टाचार खत्म करना हो तो प्राचीन आर्य वैदिक धर्म और आर्य वैदिक सभ्यता और संस्कृति को और इसकी मर्यादाओं को विश्व समाज को अपनाना पड़ेगा इसी में मनुष्य जाति और विश्व का कल्याण है, अन्यथा अपने देश से ही नहीं बल्कि विश्व समाज में कहीं से भी भ्रष्टाचार खत्म नहीं हो सकता।

मेरी जनता जनार्दन से अपील है कि भ्रष्टाचार को समाज व देश से जड़मूल से खत्म करने के लिए अपनी प्राचीन गौरवमयी आर्यवैदिक धर्म और आर्यवैदिक सभ्यता एवं संस्कृति और उसकी मर्यादाओं को अपनी जीवनशैली में अपनाए और राजनीतिक लोकतंत्र-पूंजीवाद या याराना पूंजीवाद नौकरशाही के गठबंधन के बुनियादी ढांचे में बदलाव के बारे में सोच विचार करें ताकि भ्रष्टाचार को जड़मूल से समाप्त किया जा सके और राष्ट्र के सामने खड़ी भ्रष्टाचार चुनौती की आंच से देश की एकता और अखण्डता को बचाया जा सके जिसके लिए अपनी आदिम गौरवशाली आर्यवैदिक सभ्यता और संस्कृति को अपनाना ही राष्ट्र हित में एक सकारात्मक कारगर कदम सिद्ध व सहायक होगा। ●

thearyasamaj.org

मानव जीवन को सफल बनाने के स्वर्णिम सूत्र

- स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
एम.ए., दर्शनाचार्य, वैदिक गुरुकुल
भवानीपुर, जिला-कच्छ, गुजरात
चलभाष- ०९९९८५९४८१०

१. सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, ईश्वर की उपासना, भजन, जप-चिन्तन में अधिकाधिक समय लगाना और जीवन को ईश्वरमय बनाना।

२. वेद, दर्शन, उपनिषद् मनुस्मृति आदि वैदिक-धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करना एवं तदनुसार आचरण करना।

३. धार्मिक-परोपकारी कर्मों का अनुष्ठान करना तथा सामाजिक सर्वहितकारी कार्यों में सहयोग करना। संस्थारस्थ जड़-चेतन पदार्थों यथा धन-सम्पत्ति, मकान, गाड़ी, बंगला, पति/पत्नी, पुत्र-पुत्री तथा परिवारजनों से आशक्ति (ममत्व) को हटाना।

४. संसार रथ जड़-चेतन पदार्थों यथा धन-सम्पति, मकान, गाड़ी, बंगला, पति/पत्नी, पुत्र-पुत्री तथा परिवारजनों से आसक्ति (ममत्व) को हटाना।

५. स्व-स्वामी सम्बन्ध (मैं और मेरापन), अधिकार की भावना को समाप्त करना।

६. सांसारिक सुखों के प्रति आकर्षण को समाप्त कर ईश्वर के प्रति श्रद्धा, प्रेम, विश्वास को बढ़ाना।

७. निर्मलता, निस्पृहता, निरभिमानता, नि:स्वार्थता, नियमितता आदि गुणों को जीवन का अंग बनाना।

८. श्रम, सेवा, संतोष, संयम, सदाचार तथा सादगीपूर्वक जवीन रथ को आगे बढ़ाना।

९. त्याग-तपस्या, दयालुता, विनम्रता, सहनशीलता, सात्विकता आदि गुणों को धारण करना।

१०. काम-क्रोध राग-द्वेष, छल-कपट, असत्य आदि विद्या जनित कुसंस्कारों का नाश करना।

११. ईश्वर प्रणिधान बनाये रखते हुए निष्कामतापूर्वक ईश्वर को प्राप्त करने व कराने के लिए ही समस्त क्रियाकलाप (दिनचर्या आदि) करना।

केवल अपार धन-सम्पत्ति अर्जित कर लौकिक सुख-सुविधाओं का संग्रह करना एवं उपभोग करना जीवन की सफलता नहीं है क्योंकि इससे कभी किसी को पूर्ण सुख, शान्ति, तृप्ति तथा सम्पूर्ण दु:खों से निवृत्ति नहीं मिली है। अपितु ईश्वर का साक्षात्कार कर राग-द्वेष आदि समस्त क्लेशों को विनष्ट करने पर ही परम शान्ति, परम आनन्द तथा समस्त दु:खों से निवृत्ति मिलती है। अत: जीवन की सफलता ईश्वर को प्राप्त करने में ही है अन्य किसी भी प्रकार से नहीं। ●

आज देश का प्रत्येक नेता दु:शासन नजर आता है

-डॉ. लक्ष्मी निधि
निधि विहार, न्यू बाराद्वारी,
साकची, जमशेदपुर, झारखण्ड
चलभाष-०९९३४५२१९५४

नेताओं के दुष्कर्मों से, दूषित हुआ है शासन,
इसीलिए तो सब कहते हैं, हर नेता है दु:शासन।
धृतराष्ट्र गद्दी पर बैठे, कब तक राज करेगा?
दुर्योधन, दु:शासन तब तक सचमुच नहीं मरेगा।
खेलेगा वह खेल जीत का, पासा फेंक सकेगा,
शकुनि के बल पर स्वार्थ की, रोटी सेंक सकेगा।
वहीं द्रौपदी नंगी होगी, सब होंगे निरूपाय,
बड़े-बड़े बलशाली होंगे, बैठे शीश झुकाय।
द्रोणाचार्य और भीष्म पितामह, धर्म से बंधे हुए हैं,
बोल नहीं सकते कुछ, सबके गले रूंधे हुए हैं।
खूँटों से बँधी बकरी भी, ऐसे में मिमियाती,
खूँटा तोड़ने की खातिर तो वह भी जोर लगाती।
कैसे थे वे वीर बली, जो कुछ न बोल-सके थे।
सिर को नीचे किये हुए थे, तनिक न डोल सके थे।
ऐसे महारथी से देश का, नहीं चलेगा काम,
आता क्रोध बहुत है हमको, सुनकर ऐसे नाम।
दाव लगाओं, जुआ खेलो, धर्मराज कहलाओ,
अरे पंडितो! नहीं हमें अब, ऐसा पाठ पढ़ाओ।
ऐसा क्या एकलव्य जो कर दे, अँगूठा निज दान,
ऐसे गुरुओं को हरगिज हम, कहते नहीं महान्।
सूत पुत्र कह कर कर्ण का, किया बड़ा अपमान,
आज बढ़ाना है हम सबको, ऐसे वीरों का मान।
ऐसा भीष्म पितामह क्या जो, बिलख-बिलख रह जाये,
वही पूज्य है, वही महान् जो, काम समय पर आये।
दु:शासन की रोटी खाने वाले, सचमुच वीर नहीं थे,
उनके तूणीर में जुल्म से लड़ने वाले, तीर नहीं थे।
झूठे थे वे महारथी सब, झूठे थे बलवान,
धर्मराज का धर्म नहीं था, सचमुच धर्म समान।
अन्धे राजा की नगरी में ऐसे होते खेल,
धर्मराज बन झेल सको तो, जीवन ऐसा झेल।
और अंत में, कुन्ती के संग, स्वग लोक में जाना,
देवलोक में जाकर तुम भी, धर्मराज कहलाना।
देवलोक में जाकर हम भी, धर्मराज कहलायें,
या घर-घर जाकर, नये कर्ण को, कुरूक्षेत्र में लायें?
अग्निपथी के गीत, हमारे नवयुग की गीता है,
लंका भस्म कराने वाली नवयुग की सीता है। ●

thearyasamaj.org

संविधान लागू होने की ६५वीं वर्षगाठ दिनांक २६ जनवरी २०१५

-शैलेन्द्र जौहरी, एडवोकेट
साठा, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष - ०९८९७०३३३५८

(१) स्वतन्त्र एवं खंडित भारत का संविधान बनाने के लिए २८९ सदस्यों की संविधान सभा बनाई गई थी जिसमें नेहरू की सोच-चिन्तन व मानसिकता के समर्थकों का प्रचण्ड बहुमत था।

(२) संविधान सभा के अध्यक्ष डा. राजेन्द्र प्रसाद बने और प्रारूप समिति के अध्यक्ष डा. भीमराव अम्बेडकर बनाए गए।

(३) २६/११/१९४९ को संविधान सभा ने संविधान स्वीकार किया और २६ जनवरी १९५० से संविधान लागू हुआ।

(४) २१ देशों के संविधानों को पढ़ने और समझने के बाद यह संविधान तैयार किया गया।

(५) इसमें ३९५ धाराएँ हैं, ८ अनुसूचियाँ है। यह विश्व में सबसे बड़ा लिखित संविधान है। मूल संविधान अंग्रेजी में है। अब अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

(६) इसे बनाने में २ वर्ष ११ महीने और १८ दिन लगे। इस दौरान ७६३५ सूचनाओं पर चर्चा की गई।

(७) इसे बनाने में छः करोड़ उनतालीस लाख छः हजार सात सौ उनतीस (रू. ६३९६७२९.००) रूपये व्यय हुए।

(८) इसमें लगभग १२५ संशोधन हो चुके हैं।

(९) डॉ. आम्बेडकर वास्तव में सांवरकरवादी विचारधारा के थे लेकिन पं. नेहरू और उनके समर्थकों ने प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से दबाव डालकर-समझाकर उनसे हिन्दू विरोधी संविधान बनवा लिया।

(१०) हिन्दू महासभा एवं हिन्दूवादी संगठन इस संविधान को कतई पसन्द नहीं करते हैं।

(११) गांधीवादी - तुष्टीकरणवादी - कुर्सीवादी इस संविधान की प्रशंसा करते हैं और डॉ. आम्बेडकर की जयन्ती जोर-शोर से मनाते हैं।

(१२) डॉ. आम्बेडकर ने संविधान सौंपते समय स्पष्ट रूप से कहा था कि यह संविधान उत्तम नहीं है। ऐसा संविधान मुझ से बनवाया गया है जबकि मेरी विचारधारा इसके अनुकूल नहीं है।

(१३) इस संविधान से अनुसूचत जाति (जाटव-वाल्मीक-धोबी आदि) तथा अनुसूचित जनजाति (आदिवासी-जंगलों में रहने वालों-पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वालों आदि) को वास्तव में लाभ पहुँचा है क्योंकि उन्हें शिक्षा - नौकरी - कार्यपालिका - न्यायपालिका में आरक्षण दिया गया है जो अभी तक जारी है।

सांवरकरवादी सोच का संविधान

(१४) देश का नाम सभी भाषाओं में हिन्दू देश-हिन्दू राष्ट्र या हिन्दुस्तान रखा जाता।

(१५) हिन्दू धर्म (सनातन धर्म - वैदिक धर्म - सिख धर्म - बौद्ध धर्म - जैन धर्म) को राजकीय/सरकारी धर्म घोषित किया जाता।

(१६) अहिन्दुओं (मुस्लिम - ईसाई - पारसी - यहूदी) को मताधिकार नहीं देने की, वीर सांवरकर की उचित मांग, अवश्य मानी जाती।

(१७) अहिन्दुओं के पर्वों पर सरकारी अवकाश बन्द कर दिया जाता।

(१८) अनुसूचित जाति/जनजाति को आरक्षण आर्थिक आधार पर दिया जाता न कि जाति के आधार पर।

(१९) जनगणना के फार्म में जाति में आर्य और धर्म में वैदिक धर्म का कॉलम रखने की महर्षि दयानन्द की उचित मांग अवश्य पूरी की जाती।

(२०) पूरे देश में गोहत्या बन्दी - शराब बन्दी लागू की जाती और ७५६ वर्षों के मुस्लिम शासन काल में भ्रष्ट किए गए ३०३२ छोटे बड़े मन्दिरों का जीर्णोद्धार पुनर्निर्माण करने का प्रावधान किया जाता। उपरोक्त कार्य करने से हिन्दुओं के घावों पर मरहम लगता और उसके चेहरों पर मुस्कान दिखाई देती। ●

मौहल्ला

अहंकार
की चादर ओढ़ने वाले
निन्दा
की दरी बिछाने वाले
मजाक
हर किसी की मजाक
उडाने वाले
लोग रहने आये हैं
मेरे मोहल्ले में

कपटी मुख पर
चेहरे पर चेहरा
लगाने वाले
लोग रहने आये हैं
मेरे मोहल्ले में
नकली चेहरा
छुपाने वाले, मुखौटा को
लगाने वाले
सत्य को झूठ

बताने वाले लोग
रहने आये हैं
मेरे मौहल्ले में
ऊँच नीच की भावना
वस्वार्थ की कामना

बदमाशी का दामन
अपनाने वाले
लोग-रहने आये हैं
मेरे मौहल्ले में

-डॉ. सुभाष नारायण भालेराव 'गोविन्द'
'अवन्तिका' ए-३८, न्य नेहरु कॉलोनी,
ठाठीपुर, मुरार, ग्वालियर

thearyasamaj.org

सुरेन्द्र द्वारा नरेन्द्र का राज्याभिषेक

– देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-२०२००२(उ.प्र.)
दूरभाष – ०५७१-२७४२०६१

किसी भी यज्ञ, संस्कार या धार्मिक उपासनात्मक कृत्यों के उपरान्त यजमान को आशीर्वाद दिया जाता है तो पुरोहित उसके ऊपर फूलों की तथा जल की बौछार या वृष्टि करता है, इसी को अभिसिंचन या अभिषेक कहते हैं। जब किसी युवराज को राज्य सिंहासन पर राजा के रूप में विराजमान किया जाता है, तब भी यह क्रिया की जाती है, जब उसका सम्मानित व्यक्ति के द्वारा तिलक करने के बाद जल के छींटे लगाये जाते हैं, तब इसे राजतिलक और राज्याभिषेक की संज्ञा दी जाती है। संसार की असंख्य योनियों में मनुष्य ही वह श्रेष्ठ योनि होती है, जिसे राजा, नायक या शासक बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है। परमात्मा की ओर से बिना किसी भेद के हर मनुष्य को यह क्षमता प्राप्त होती है, साथ ही वह अपने जन्म-जन्मान्तर के संचित कर्मों के फल को भी साथ लाता है। यदि वास्तव में, वह वेद के इस शब्द **'मनुर्भव'** (ऋग्वेद १०/५३/६) को समझ लेता है कि मुझे परमात्मा ने मनुष्य की योनि प्रदान की है, तो निश्चित पूर्वकृत शुभ कर्मों के आधार पर ही प्रदान की है और अब मुझे मनुष्य बने रहना है, और यह तभी सम्भव होगा जब वह मनुष्य मनन करेगा कि मैं मनुष्य हूँ-अन्य योनियों से पृथक हूँ। वह यह भी मनन करेगा कि मैं अनेकश: ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों एवं अन्त:करण का स्वामी हूँ। इन्हीं इन्द्रियों को रखने के कारण मैं **'इन्द्र'** हूँ। परमपिता परमात्मा भी इन्द्र है-वह अखण्ड ब्रह्माण्ड का इन्द्र है और मैं अपने इस पिण्ड (शरीर) का इन्द्र हूँ उस परमपिता ने इसीलिए मुझे अपना नाम भी प्रदान कर दिया है-इन्द्र। लोक में भी प्रपितामह-पितामह-पिता के माध्यम से यही परिपाटी चली आती है कि हर व्यक्ति अपनी सन्तान को अपनी पहचान देता है-गोत्र या उपाधि नाम से यह परम्परा सर्वत्र देखने को मिलती है।

हर सन्तान को अपनी उपाधि के आधार पर अपने हंस-वंश को समुज्जवल बनाने का प्रयत्न करना पड़ता है। एक किसान परिश्रमी तो था किन्तु बुद्धिमान नहीं। राजा ने उसके परिश्रम के योगदान से प्रभावित होकर उसे चन्दन का बड़ा भाग भेंट कर दिया। कुछ वर्षों के बाद जब वह भ्रमण पर निकला, तो उसे यह देखकर बड़ा धक्का लगा, कि उसका उपहार में दिया गया अधिकांश बाग-आग की भेंट चढ़ गया है। किसान ने वृक्षों को काट-काट कर कोयले बनाये और बाजार में बेंच दिए। राजा ने किसान को बुलाया तो किसान करबद्ध उसके सामने खड़ा होकर बोला-श्रीमान! मैं तो आपके पास आने ही वाला था-कि आपका दिया हुआ बाग समाप्त होने वाला है, मुझे कोई और बाग दीजिए। राजा ने किसान को उसकी मूर्खता के लिए लताड़ा और बोला यह चन्दन का बाग तूने कोयला बना दिया। अब सावधान हो जा, जो वृक्ष बचे हैं, उनके बीज और कोंपल से नया बाग बना और शुष्क काष्ठ को बाजार में बेच कर धन कमा। चन्दन तो अमूल्य था-इससे ही उसे पर्याप्त धन मिला।

अब आप इसकी विपरित कहानी सुनिये। काशी से विद्या-पारंगत होकर ब्रह्मचारी जी अपने नगर आ गये। एक विदुषी युवती से उनका विवाह भी हो गया। वे अब भी पुस्तकों के ढ़ेर में डूबे रहते थे, बाहर निकलने को उनका मन ही नहीं करता था। ब्रह्मचारी जी पण्डित जी तो बन गये, किन्तु शिक्षक न होकर भिक्षुक बनकर रह गये। पत्नी के आग्रह पर वे बाहर निकलते थे – परिवारों को उपदेश व शुभकामना देकर जो भी शिक्षा मिलती थी, उसी को लेकर घर आ जाते थे – दम्पति का निर्वाह हो जाता था। पण्डित बुद्धिमान थे, पत्नी विवेकवती पूर्ण सरस्वती स्वरूपा थी। उसने फिर एक दिन पण्डित जी को झोली पकड़ा कर बाहर भिक्षाटन हेतु भेज दिया। उस दिन देर से जाने के कारण उनकी झोली में कुछ मुट्ठी अनाज के दाने पड़े थे। वे अपने घर की ओर लौट रहे थे, मार्ग में उन्हें स्वर्ण रथ पर सवार देदीप्यमान दिव्यमूर्ति अर्थात् हीरक मुकुट, रत्न जड़ित वस्त्र और दमकते हुए मुख मण्डल वाले इन्द्र तुल्य व्यक्तित्व के दर्शन हुए। भिक्षुक पण्डित जी उनसे बचकर निकलना चाहते थे, कि देखते क्या हैं कि वह दिव्य व्यक्तित्व कुछ ही क्षण में अपने रथ से उतरकर भिक्षुक महोदय के समक्ष अपनी झोली फैलाकर खड़ा हो गया। भिक्षुक के पास देने को क्या था? चन्द अनाज के दाने। मरता क्या न करता। भिक्षुक जी उस ज्योतिर्मय पुरूष की उपेक्षा करके आगे जा भी नहीं सकते थे और वह पुरूष भिक्षुक से बिना कुछ लिये आगे बढ़ भी नहीं सकता था। भिक्षुक जी ने अपनी झोली में हाथ डाला और एक मुट्ठी अनाज भर लिया, फिर सोचा हमारे पास क्या बचेगा! उन्होंने अपनी मुट्ठी को खाली करना आरम्भ कर दिया। पूरी मुट्ठी खाली हो गई-उसके दाने झोली के अनाज में मिल गये, फिर उन्होंने गिनते हुए एक-दो-तीन दाने उस ऐश्वर्यवान पुरूष की झोली में डाल दिए और वह दिव्यमूर्ति पुरूष अपने स्वर्णिम रथ पर बैठकर चलता बना और भिक्षुक भी झींकते हुए अपने घर पहुँचे और आवेश में झोली खोलकर अपनी पत्नी के सम्मुख खाली कर दी। भिक्षुक जी तो देख नहीं पाये, किन्तु उसकी सरस्वती पत्नी ने देखा कि भिक्षाटन के अनाज में तीन बड़े-बड़े चमकते हुए दाने भी पड़े हैं। उसने उन्हें उठाया और अपने भिक्षुक पतिदेव को दिखाया-अरे! देखो, यह तीन मूल्यवान रत्न तुम्हारी झोली में से ही निकले हैं। भिक्षुक ने सारी कहानी दिव्य पुरूष से मिलने वाली बतायी और दम्पति के विद्या व विवेक ने उन्हीं तीन दानों के बल पर इन्द्र के तुल्य अपने जीवन को ऐश्वर्यवान बना लिया, मानो उनका राज्याभिषेक हो गया हो। जितना समर्पण उतना अलंकरण होता है।

वेद भगवान के अथर्वा ऋषि ने प्रजापति देवता के इस कृत्य को देखा और वे बोल पड़े-**''इन्द्रस्थ वा इन्द्रियेणासिंचत्''** (अथर्ववेद १६/१/९)

thearyasamaj.org

अर्थात् इन्द्र प्रजापति परमात्मा ने तुझमें अखिल ब्रह्माण्ड की शक्तियाँ इन्द्रियों के रूप में प्रदान कर दी है। तुझे भी इन्द्र बनाया है। मानों तेरा उन इन्द्रियों के माध्यम से राज्याभिषेक ही कर दिया है। इनके सदुपयोग से तू राजा बन, सम्राट बन, शासक बन और हाँ, यदि तूने इनका दुरूपयोग किया तो तुझे भिखारी ही नहीं पशुओं की अँधियारी योनियों में भी जाना पड़ सकता है। ये दृश्य आपको रोज देखने को मिलते हैं। नाम से क्या काम - कोई अपनी नकली उपाधियों के बल पर उच्च नियन्त्रक पदाधिकारी बनता है, कोई देश का विभागी अधिष्ठाता मंत्री बनता है और भ्रष्टाचार में लिप्त होता है, कोई साधु-सन्त बनकर अपार धनार्जन के द्वारा महत्ता प्राप्त कर लेता है, किन्तु समय आने पर यह सभी अपने उच्चासनों से तो धराशायी हो ही जाते हैं - सीधे ले जाये जाते हैं - कारागार की अन्धेरी कोठरी में। देश प्रसिद्ध विधि-वेत्ता भी करोड़ों रूपयों का शुल्क लेकर भी उन्हें कारागार से बाहर नहीं निकाल पाते हैं। ऐसी ही दुरावस्था को देखकर हिन्दी के महान् कवि बोल पड़े -

कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय है वा पाये बौराय।।

धतूरा, गेहूँ और स्वर्ण ये तीनों ही कनक हैं। धतूरे को खाकर मनुष्य मदहोश हो जाता है, जो भूखा रहता हो, उसे गेहूँ की रोटी खाने को मिलने लगे, तो वह भी इतराकर बौरा जाते हैं, और जिसने कभी सोना न देखा हो, उसे स्वर्ण राशि मिल जाती है, तो वह बिना खाये ही मदहोश हो जाता है। ऐसी दशा में जो स्वयं को सावधानीपूर्वक सन्तुलित कर लेता है, वह कभी पतन को प्राप्त नहीं होता है, उसका यश-ऐश्वर्य बढ़ता ही रहता है।

प्रभु इन्द्र का ऐश्वर्य वर्षा की भाँति सर्वत्र बरसता है। कवियों का कथन है कि स्वाँति नक्षत्र में बरसी वर्षा की बूँद-यदि सीप में पड़ती है तो मोती बनती है, यदि बाँस में पड़ती है तो वंशलोचन बनती है और यदि केले के पेड़ पर पड़ती है तो कपूर बन जाती है। ये सभी वस्तुऐं कितनी मूल्यवान हैं, हम सब जानते हैं और यदि वही बूँद किसी गर्म तवे पर पड़ जाती है तो जल-भूनकर समाप्त हो जाती है। दलित वर्ग के एक बालक को विद्यार्थियों ने कक्षा में बैठने नहीं दिया। उसे विद्या से प्रेम था। कक्षा के द्वार पर ही बैठकर पढ़ता रहा। शिक्षक द्वारा पुँछे गये प्रश्नों के उत्तर अन्दर बैठे छात्रों से पहले, वह देने लगता था। मीलों दूर से चलकर आने वाला वह बालक अपने गुरू के आशीर्वाद को प्राप्त करने में सफल हुआ और एक दिन वह भारतवर्ष के महामहिम राष्ट्रपति के. आर. नारायणन के रूप में सर्वोच्च सम्मान का अधिकारी बना। एक और दलित बालक जो इसी दमघोंटू वातावरण में पढ़ने गया। उसकी योग्यता को देखकर - अपमान से बचाने हेतु ब्राह्मण गुरू ने उसे अपनी ही उपाधि प्रदान कर प्रतिष्ठित आम्बेडकर बना दिया और वे भारत-रत्न के सर्वोच्च अलंकरण से अभिनन्दित हुए।

हर वह घड़ी स्वाँति है जिस घड़ी में मानव अपनी सकारात्मक सद्गुणी भावनाओं से ओत-प्रोत रहता है। अपनी पात्रता के बल पर अनाज में छिपे पड़े हीरक दानों की भाँति वह दमक उठता है। अत्यन्त निर्धन परिवार में जन्मा बालक चाय वाला बना। वन-पर्वत सर्वत्र भटकता रहा। विवाह किया - उसके सुख को नहीं जाना। अपनी धर्म-पत्नी को भी तपस्या के लिए छोड़ दिया। उस नर की दिशा जब इन्द्र की ओर मुड़ी तो इसी इन्द्र ने उसे अपने साथ जोड़ लिया - वह नर + इन्द्र = नरेन्द्र बन गया। वह भारत जैसे पुण्य पुरातन महादेश भारत का प्रधानमंत्री बना। उसे सिंहासन पर आरूढ़ करने के लिए राष्ट्रपति के रूप में स्वयं प्रकट हुए प्रजापति प्रणव मुखर्जी। उसकी इस राज्याभिषेक के शुभावसर पर उसके सिर पर सद्भाव सिंचन के लिए उपस्थित हुए सभी निकटवर्ती राष्ट्रों के शासनाध्यक्ष। सिंहासन पर आरूढ़ होने से अधिक महत्वपूर्ण है, उसकी गरिमा बनाये रखना। अपने कृतित्व से व्यक्तित्व का विकास करना, न कि उसका ह्रास करना। इसके लिए उसे चाहे अपना बलिदान ही क्यों न करना पड़े। मुकुट का मान रहना चाहिये, जान रहे या जाये। आज राजस्थान के महानगर उदयपुर के समीप स्थित उस ऐतिहासिक संग्रहालय को देखने जाइये, जिसके प्रवेश द्वार से आगे बढ़ते ही तीन महाप्रतिमायें दिखाई देगी। वे हैं - महाराणा प्रताप, महाराजा भामाशाह और वीरवर झालापति मान्ना। राणा की सहायता के लिए शाह ने अपना कोष-भण्डार अर्पित कर सेना को बनाये रखा, भीलवीर झालापति ने राणा की प्राण रक्षा के लिए उनकी पगड़ी का ताज अपने सिर पर रख लिया और अपनी जान देकर महाराणा को बचा लिया। महाराणा की रक्षा हुई और उनके ताज का मान नहीं जाने पाया। महान वीर कवि पण्डित श्याम नारायण पाण्डेय ने अपने महाकाव्य - '**हल्दीघाटी**' - में यही तो लिखा है -

''राणा तू इसकी रक्षा कर - यह सिंहासन अभिमानी है''

अस्तु, वर्तमान परिवेश में यों कहिये-मोदी। तू इसका मान बढ़ा, तेरी भी अतुल कहनी है। आइये प्रस्तुत वेद मन्त्र **''इन्द्रस्य व इन्द्रियेणामिसिंचत्''** की अपनी राष्ट्रभाषा में गीत गायें:-

कर राज तिलक जलांजलि फेंक।
नर का करें इन्द्र अभिषेक
ईश इन्द्र ऐश्वर्यवान है।
शक्ति स्त्रोत वे धैर्यवान है।
अपनी विद्युत धार बहाकर,
करते जग ज्योतिर्मय विहान है।
देकर अंश यही प्रत्येक।
नर का करें इन्द्र अभिषेक।।
लोक भुवन जल थल नभ ठहरे।
अतिशय उथले अतिशय गहरे।
सभी ओर है तेरा शासन,
दिशा दिशान्तर रहते पहरे।
यही जगाकर विशद विवेक।
नर का करे इन्द्र अभिषेक।।
प्रभु का यह ब्रह्माण्ड निहारो।
इससे अपना पिण्ड संवारो।
इन्द्रिय मनस नियन्त्रण द्वारा,
पुरूस्कार या दण्ड विचारो।
देकर उत्साह ऊर्जा उद्रेक।
नर का करें इन्द्र अभिषेक।। ●

thearyasamaj.org

गतांक का शेष.....

हिन्दू वशंज यजदी जमात मिटने के कगार पर

- चंद्रशेखर लोखण्ड
सीताराम नगर, लातूर (महा.)
चलभाष-९९२२२५५५९७

पुराणोत्तर संस्कृति :- मध्यपूर्व एशिया में प्रमुख तीन तथाकथित धर्म किश्चन, यहूदी और इस्लाम की स्थापना से पूर्व यहाँ कौन सा धर्म और संस्कृति रही होगी यह जानना कोई कठिन नहीं है। हडप्पा मोहन जोदड़ो के उत्खनन में उपरोक्त तीनों मतों का नामो निशां भी नहीं था। जो अवशेष प्राप्त हुए थे उसमें हिन्दू संस्कृति के ही चिन्ह और अवशेष पाये गये हैं। सिन्ध प्रान्त की इस परम्परा और अवशेष चिन्हों का तुर्क, ईरान, ईराक और सीरिया तक पाया जाना पुराणोत्तर संस्कृति का प्रसार दर्शाता है। इससे पूर्व के लेख में जैसे मैंने उल्लेख किया है कि यज्ञ संस्कृति का उत्तरार्ध और मूर्तिपूजा का प्रारम्भ इन प्रदेशों में दिखाई देता है। इस अरब भूमि में हुबल, सफा, नाईला, और इगज्जा (यज्ञ - यग्यज्ञा) आदि वैदिक देवताओं के परिवर्तित रूप तथा अर्धनारी नटेश्वर की पूजा की परम्परा आज भी चली आ रही है। इस्लाम की स्थापना महाभारत के ३५०० वर्ष के पश्चात् इस क्षेत्र में हुई थी, तब तक यहाँ वैदिक धर्म और पौराणिक संस्कृति का ही बोल बाला था। इराक और सीरिया के सीमा प्रान्तों में उत्तर दिशा की ओर आज भी इस मान्यता को मानने वाले यजदी जमात के लोग रहते हैं।

यजदी महिलाओं का संघर्ष :- इस समय शिया और सुन्नी का संघर्ष इराक और सीरिया में बढ़ गया है। अबू बकर अल बगदादी ने हजारों **''यजदी''** लोगों की हत्या करनी शुरू कर दी तो इसी समाज की महिलाओं ने भी बगदादी के विरूद्ध जंग का ऐलान कर दिया। उन्होंने सीरिया सैनिकों के साथ मिलकर बगदादी की फौज का खात्मा करना शुरू कर दिया। इससे चिढ़कर अल बगदादी ने यजदी कन्याओं और महिलाओं को बंधक बनाना प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिनों से हजारों यजदी कन्याओं और स्त्रियों को उसने अपने तहखानों में कैद कर रखा है। ९ वर्ष से ३२ वर्ष की इन कन्याओं को आतंकियों में जिस्म फरोशी के लिए बांटा जाता है। कईयों को बाजार में बेचा जाता है, उनकी बोली लगायी जाती है। अब तक ५००० हजार से अधिक यजदी पुरूषों की हत्याएँ की जा चुकी है। उनकी विधवा, बहु-बेटियों को उत्तरी इराक से अगुवा कर लिया गया है। उन्हें जबरन शादियाँ, बलात्कार, बिक्री और जिस्म परोसने के लिए मजबूर करना आदि अत्याचार बगदादी और उनके लड़ाके करते आ रहे हैं, फिर भी अल्पसंख्यक यजदी कन्याएँ बगदादी की आतंकी सेना से मुकाबला कर रही है। कुछ दिन पूर्व सीरिया के एक गाँव पर हमला किया गया जहाँ ७००० यजदी महिलाओं को गिरफ्तार कर २७ दिन तक बगदादी ने अपने कब्जे में रखा। तीन मास के अन्दर उनके पति भाई तथा रिश्तेदारों को गोलीयों से भून दिया गया। यजदी कन्याओं और महिलाओं को सीरिया से लगे अनेक देशों में भाग कर शरण लेनी पड़ रही है।

बगदादी के कब्जे में रह रही कन्याओं को १००० हजार से ३०,०००/- रूपयों में बेचा जा रहा है। नीली और हरी आँखों वाली लड़कियों को साधारण लड़कियों से अधिक कीमत में बेचा जाता है। स्वयं बगदादी के कब्जे में ८० यजदी लड़कियाँ है। अन्य लड़कियों को आतंकियों के साथ जबरदस्ती निकाह करवाये जा रहे हैं। ये है अबू बकर अल बगदादी का इस्लामी साम्राज्य। इस तरह का खिलाफत साम्राज्य इराक और सीरिया के सीमा प्रान्त में लाना चाहता है बगदादी।

भू भाग हड़पना चाहते हैं :- सद्दाम हुसैन के हुकूमत में आने से पहले सीरिया और ईराक के सीमावर्ती प्रान्तों में यजदी जमात की संख्या करीब १.५ करोड़ थी। सिंजर प्रान्त की पहाड़ियों में ये लोग रहते थे, सद्दाम हुसैन इनको यहाँ से हटाकर यह भूमि अपने कब्जे में लेना चाहता था। इसके लिए उसने इस जमात पर अनेकों बार हमले करवाये थे। इनको हटते न देखकर सद्दाम हुसैन ने इन लोगों को समूल नष्ट करने की ठानी थी।

इन पर अब तक ७४ बार खूनी हमले हुए हैं, जो जमात २०-२५ वर्ष पहले १.५ करोड़ के करीब थी, वह आज सिर्फ ८ लाख बची हुई है। ये लोग स्वयं को न ईसाई, यहूदी अथवा मुस्लिम मानते हैं बल्कि इनकी संस्कृति हिन्दुओं से मिलती जुलती है। ये लोग नाग की पूजा करते हैं और इन्हें इसका अभिमान है। ये पुनर्जन्म को मानते हैं इनकी भाषा में संस्कृत और पंजाबी शब्द है। इस समय सिंजर की पहाड़ियों में ५००० यजीदियों को आई.एस.आई.एस. के आतंकवादियों ने घेर रखा है।

एक १५ साल की लड़की जो उनकी पकड़ से छूटकर भाग आयी है, वह बतलाती है कि हमारे जमात की महिलाओं पर भयंकर अत्याचार हो रहे हैं तथा बलात् धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। उस लड़की ने आपबीती सुनाते हुए कहा कि मुझ पर भी इस तरह का दबाव डाला गया पर मैंने बेखौफ होकर कहां कि मैं मर जाऊंगी मगर इस्लाम कुबूल नहीं करूंगी। इन लड़कियों को अरब के अलग-अलग इलाकों में ५०-६० डॉलर में बेचा जा रहा है। सुन्नी और शिया दोनों हुकुमतें इस कौम को मिटा देना चाहती है। जिससे कि इस भाग को इस्लामिक स्टेट में शामिल किया जा सके श्री. श्री. रविशंकर अभी हाल ही में इस जमात को बचाने के इरादे से वहाँ गये थे इस बारे में उन्होंने अच्छी पहल की है।

कल परसों ही इस प्रान्त के **''रामादि''** (राम नाम से सम्बन्धित) चेक पॉइंट पर आई.एस.आई.एस. के आतंकियों ने आत्मघाती हमला कर ३३ शियाओं को मृत्यु के घाट उतार दिया। **क्या इस तरह से अल बगदादी अल्लाह का राज्य लाना चाहता है? क्या अल्लाह ऐसा करने की इजाजत देता है?**

शायद उसका यह जानवरों जैसा व्यवहार अल्लाह को पसंद न आया हो और इसलिए अमेरिका के हवाई हमले में उसका खात्मा हो गया। इन इस्लामिक सोच वाले आतंकियों को कौन बतलाए कि अमानवीय बर्बरता ज्यादा दिनों तक नहीं चलती कभी न कभी उसका फल भुगतना ही पड़ता है।

लेकिन मजहब के अन्धे ये इस्लामिक आतंकी मानवीय सोच को कब अपनाएंगे? कब दुनिया के सारे इन्सान एक है एक ही ईश्वर ने अलग अलग रूप बुद्धि और सोच देकर पैदा किया है, ऐसा मानेंगे।

अभी चालीस देशों ने आई.एस.आई.एस. के विरूद्ध संगठित होकर खिलाफत के साम्राज्य को नष्ट करने का दृढ़ संकल्प किया है। उन्हीं के साथ मिलकर भारत ने भी इस हिन्दू जाति कि अवशिष्ट यजदी जमात को बचाने का प्रयत्न करना चाहिए। अपने ऑस्ट्रेलिया दौरे पर प्रधान मंत्री मोदी ने आतंकवाद के खिलाफ साझा संघर्ष किया जाना आवश्यक है यह कहकर बतलाने की कोशिश की है की आतंकवाद का यह कैंसर सारे विश्व को कभी भी नष्ट कर सकता है। उनका इशारा सारी दुनिया के गैर इस्लामी देश और उनकी संस्कृतियों को नष्ट होने से बचाने के सम्बन्ध में ही है। ●

thearyasamaj.org

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी

सबसे बड़ी राष्ट्रभक्ति याद करो उन बलिदानीयों को जिन्होंने राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर किये

– गोविन्दराम आर्य
अध्यक्ष-वेद प्रचार समिति, मध्यप्रदेश
तह. रोड़, देपालपुर, जिला-इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष-०९४२४०१२४७१

जन्म देने वाली माता और जहां हमारा जन्म हुआ है वह मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है राष्ट्रभक्ति का उदाहरण जापान और इजरायल से लिया जा सकता है। जापान के विद्यालयों में प्रत्येक बच्चे को यह पढ़ाया जाता है, जापान हमारा देश है, बौद्ध हमारा राष्ट्रीय धर्म है, महात्मा बुद्ध हमारे आराध्य देव है जो हमारे धर्म का अपमान करेगा हम उसे दण्डित करेंगे जो महात्मा बुद्ध का तिरस्कार करेगा हम उसे भी सजा देंगे परन्तु यदि स्वयं महात्मा बुद्ध सेना लेकर जापान पर आक्रमण करे तो हम उसका भी सिर काट लेंगे, आज यही पाठ भारत के प्रत्येक बच्चे को पढ़ाया जाना चाहिए लेकिन भारत का धर्म है ही नहीं और न ही भारत का एक आराध्य देव भी है, भारत बगैर धर्म का, बगैर आराध्य देव का है इसलिये बच्चों को पढ़ायें तो पढ़ायें क्या? अगर यह पढ़ाया जाने लगे की हमारा सबका एक धर्म है- मानवता व हमारा सब का एक ईश्वर है – निराकार, अजन्मा, अविनाशी, न्यायकारी, दयालु, सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वशक्तिमान्, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामि, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करना योग्य है तो अपने ही वाले बहुत लोग इस सत्य का विरोध करेंगे।

देश के बच्चों को देश के सही इतिहास से अवगत करवाने की आवश्यकता है, हममें क्या कमी थी कि देश गुलाम हुआ? गुलाम देश आजाद कैसे हुआ? कितने देशभक्त वीरों ने अपना बलिदान दिया उन बलिदानियों ने कितनी त्रास झेली उनके नाम क्या हैं, वे कैसे थे? यह तो बच्चों को बताया जा सकता है।

जहां देश के लिए दुश्मनों से लड़ने वाले बलिदानियों की प्रतिमाओं की जगह हमने हमारे वालों की प्रतिमाओं से देश के चौराहे भर दिये हैं।

ऐसे लोगों की प्रतिमाओं को लगाने से क्या लाभ देश के आजाद कराने में जिन देशभक्तों ने अपना बलिदान देश के लिए किया आज उनकी मूर्ति दिखाई देना तो दूर उनके नामों से भावी पीढ़ी अनभिज्ञ है।

इन नेताओं की मूर्ति की जगह उन देशभक्त बलिदानियों की मूर्ति लगना चाहिए क्योंकि उन देशभक्त बलिदानियों की मूर्ति लगाओ तो आने वाली सन्तती को ज्ञात होगा राष्ट्र के लिए मर मिटने का तथा उनमें जज्बा पैदा होगा, जोश होगा, उमंग होगी, आजादी की किमत को सही मायने में समझ सकेंगे तो वे राष्ट्र भक्त बनेंगे उन बलिदानियों को तो भुला दिया देश में देश के चौराहों पर जितने भी अपने वालों के पुतलों का कब्जा जनता के पैसे से करा दिया गया है। उनको स-सम्मान हटाकर उन पुतलों वाले परिवारों को भेज देवे व उन पुतलों के निर्माण से लगाकर स्थापित करने व चौराहे से हटाकर उनके घर तक स-सम्मान भेजने का खर्च भी उन परिवारों से लेना चाहिए व इनकी जगह देश आजाद कराने में जिन्होंने अपना बलिदान दिया और सत्ता सुख भी नहीं भोगा ऐसे बलिदानियों को इन हटाई गई मूर्तियों की जगह शासकीय खर्च से स्थापित की जावें व उन नेताओं के नाम की जगह चौराहों, अस्पताल, विद्यालय, सड़क मार्ग, स्टेशन, मॉल, नगर आदि का नामकरण भी बलिदानियों के नाम पर किया जावें। जैसे महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी ने मुगलों से लोहा लिया सन् १८५७ के क्रान्तिकारियों ने माता के बन्धनों को काटने के लिए अपने प्राणों की भेंट चढ़ा दी चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, सुखदेव, पं. रामप्रसाद बिस्मिल आदि वीरों ने हंसते हुए फांसी का फन्दा चुमा, रानी दुर्गावती, महारानी लक्ष्मीबाई, छत्रसाल बुन्देला, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम योगीराज श्री कृष्ण, वीर बजरंग बली हनुमान जिन्हें हम भगवान भी कहते हैं।

अर्जुन, भीम, बालक भरत, चाणक्य, चन्द्रगुप्त, बन्दा बैरागी, वीर सावरकर, हकीकत राय, नाना फड़नवीस, तात्या टोपे, भागीरथ सीलावट, महर्षि दयानन्द स्वतन्त्रता के प्रथम प्रणेता, रोशनलाल, राजेन्द्र लाहिड़ी, राजगुरु, शचीन्द्रनाथ सान्याल, शहीद उधमसिंह, मंगल पाण्डे, पृथ्वीराज चौहान, अहिल्याबाई जिन्होंने पुरे भारत में जन कल्याण के कार्य किये, गुरू गोविन्दसिंह, अजीतसिंह, श्रद्धानन्द, लेखराज, जुझारसिंह, फतहसिंह, दुर्गा भाभी, पद्मावती ऐसी अनेक विरांगनाये व अनेक बलिदानी है अगर मूर्ति लगाना ही है, तो इनकी मूर्ति लगाओं।

हमने हमारे खानदान की मूर्ति लगा दी क्या बलिदान किया इन्होंने देश के लिये इनकी मूर्ति की जगह इन बलिदानियों राष्ट्रभक्तों की मूर्ति लगना चाहिए व इन्हीं के नाम से सड़क, मार्ग, चौराहा, अस्पताल, ट्रेन एक्सप्रेस स्टेशन, विद्यालय, नगर आदि नाम रखना चाहिए इसके लिए सख्त कानून बने व उस पर अमल होवें ताकि आने वाली पीढ़ी उन बलिदानी देशभक्तों से कुछ शिक्षा ग्रहण करे। ऐसे देशभक्त जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया है उन्होंने देश आजाद होने पर सत्ता सुख भी नहीं भोगा है। हम तो केवल वर्ष में एक बार १५ अगस्त व २६ जनवरी को कुछेक का नाम लेकर इति श्री कर लेते हैं आने वाली पीढ़ी को क्या मालुम किन वीरों ने बलिदान देकर यह आजादी हमें दिलाई है।

आज हमारे सामने वीर सावरकर तो नहीं है, जो हमें बता सके कि काला पानी क्या होता है? जिन्हें काला पानी की यातना भरी सजा दी गई थी। आज अनेक लोग काला पानी की सजा को महज मामूली घटना तो दूर काला पानी के विषय में जानते भी नहीं है।

भारत माता की जय के नारे लगाते हुए भगतसिंह, सुखदेव, अशफाक उल्ला खाँ हंसते हुए फांसी का फन्दा चुमने वाले व एक-एक कौड़े पर इन्कलाब के नारे लगाने वाले बलिदानी कैसे थे नई पीढ़ी को कौन बताये? जिससे आज की पीढ़ी आजादी की कीमत क्या होती है समझ सके भारत। के चौराहों पर तो हमारे नेताओं ने कब्जा कर रखा है, अपने नाम से चौराहा, वार्ड, नगर, कालेज, बांध, ट्रेन, स्टेशन, स्मारक आदि में कब्जा कर रखा है। बन्धुओं शीघ्र आज की युवा पीढ़ी को इस पर विचार करने की आवश्यकता है और बलात् कब्जाधारियों का कब्जा अलग हटा कर असली हकदारों को स्थान दिलवाना होगा जिससे हमारी भावी पीढ़ी आजादी की कीमत को समझ सके। ●

thearyasamaj.org

लूट का अनोखा अन्दाज

-प्रो. चन्द्रगोपाल खले
अग्रवाल कॉलोनी, सेंधवा (म.प्र.)
चलभाष-९९२६८६७१५४

हम इतिहास उठाकर देखे तो पढ़ने को मिलेगा कि सरे राह लूट-खसौट का, हींग लगे न फिटकरी वाला नायाब धंधा सदियों से फूलता-फलता चला आ रहा है। अंग्रेजों के जमाने में राहजनी की घटनाऐं सुनने और पढ़ने को मिलती है, जिसके अनुसार सुनसान रास्तों पर निकलने वाले राहगीरों पर पेड़ पर बैठे लुटेरे अचानक हमला कर सारा माल लूटकर रफू-चक्कर हो जाते थे। बेचारा राहगीर मनमसोस कर रह जाता था, क्योंकि तब न तो मिड़िया था और न ही ऐसा तंत्र, जो तुरन्त कार्रवाई कर अभियुक्तों को पकड़ सकें।

आज हम सभ्य हो जाने के भले ही लाख दावे करें लेकिन **''राह चलते लूट लेने का ये धंधा जिसे भले ही मानते हो गंदा, किन्तु तब से लेकर अब तक यह कभी न पड़ा मंदा, अपनाने वाला चाहे नेत्रवान हो या अंधा। न पुलिस रिपोर्ट का डर, न फँसने का फंदा। इसलिए हींग लगे न फिटकरी वाला वर्तमान का यही है सबसे चोखा धंधा।''**

मेरे एक मित्र रोज स्कूटर से अपनी फेक्ट्री पर जाते थे, किन्तु आजकल वे पैदल ही जाने लगे हैं। बार-बार पूछने पर पहले तो एक्सरसाईज की साईड ली, किन्तु फिर भी बात जब गले नहीं उतरी, तो उन्होंने बड़े मार्मिक शब्दों में अपनी व्यथा बयान की कि, जब भी मैं मोहल्ले विशेष से गुजरता हूँ तो किसी अनहोनी की आशंका से ''अपना स्कूटर अत्यंत धीमा कर लेता था, बल्कि यो कहिए कि पांव घसीटता हुआ निकलने की कोशिश करता था। फिर भी उस मोहल्ले के लोग लगता था मेरी ताक में ही रहते थे। अत: जैसे ही वे मुझे देखते अपने बच्चों को जो पहले से ही सीखाए पढ़ाए होते थे, मेरे स्कूटर से चिपका नहीं कि पूरे मोहल्ले वाले इस नारे के साथ दौड़ पड़ते थे कि मार डाला रे मासूम को इस पैसे वाले ने। बड़ी जद्दो जहद के बाद हजार-पांच सौ देकर जान छुड़ाना पड़ती थी। इस तरीके को अपनाकर वे आराम से आज भी जब चाहे तब रूपयों की उगाही का जुगाड़ कर लेते हैं।

बड़वानी-बड़ौदा राजमार्ग पर कुक्षी टोल नाके के कुछ किमी. आगे एक बहुत लम्बा ढलान है, शायद इसलिए उस गांव का नाम ढोल्या है वहां ढलान में दोनों किनारों पर चरवाहे अपनी भैंसे चराते रहते हैं। जैसे ही कोई फोर व्हीलर (कार) आते दिखती है, वे फौरन अपनी अपनी भैसों को डंडा मारते हैं, जिससे वे भड़ककर वाहन की तरफ दौड़ती और ब्रेक लगाते-लगाते उनमें से एक दो गाड़ी से चिपक भी जाए तो उनका काम पक्का समझो। पलक झपकते ही सारे ग्रामवासी लट्ठ लेकर गाड़ी को घेर लेते हैं। मरियल भैंस जिसे बिलकुल भी चोंट नहीं लगी, फिर भी उसे मरणासन्न बताकर पन्द्रह हजार के हर्जाने से बात शुरू करेंगे। यदि साथ में परिवार भी हो तो बहुत हाथ-पांव जोड़कर भी पांच हजार से कम में मामला नहीं सुलटता। है ना चोखा धंधा।

तीस-चालीस साल पहले हास्य अभिनेता मेहमूद की एक फिल्म आयी थी। इसमें वह मरी हुई मुर्गी को सामने से आती हुई कार के नीचे फेंक देता और **''मार डाला रे मार डाला, एक धनवान ने बेजुबान को मार डाला।''** ऐसा कहकर भीड़ इकट्ठी कर लेता और छाती कूटकर स्वांग रचते हुए मनचाहे पैसे ऐंठ लेता था।

आज वह फिल्मी दृश्य हकीकत में बदल गया है। शहरों में तो यह हिंकमत दिन दूनी रात चौगुनी गति से फल-फूल रही है। लूट की घात में बैठे युवक अक्सर भीड़भाड़ वाले इलाके को ही चुनते हैं। जैसे ही कोई कार से अकेला ड्राईव करता हुए निकलता दिखता है, इनमें से एक पैदल चलता हुआ टकरा जाने का स्वांग रचता है। उसके चिल्लाकर गिरते ही उसके अन्य मुस्टंडे साथी आकर कार को घेरकर धमकाने लगते हैं कि, जब गाड़ी चलाना ही नहीं आती तो चलाते ही क्यों हो? चलो निकलो बाहर। कार वाले हो तो क्या पैदल वालों की जान लोगे। आपकी उम्र का ख्याल कर रहे हैं, वरना अब तक तो आपकी कार का कचूमर कर देते।

जरा नीचे उतरकर देखों तो कैसे कराह रहा है। लगता है अंदरूनी चोंटे लगी है। दो-तीन महीने के लिए गया काम से बेचारा। दस-बीस हजार का फटका लगना तो बहुत मामूली है। शराफत इसी में है अंकल आप जल्दी से कार से बाहर आ जाईये। आरोप-प्रत्यारोप के इस दौर में वे कार मालिक की हैसियत का अनुमान लगा लेते हैं। इस बीच कार से टकराने वाला ढोंगी कार के सामने लेटकर तरह-तरह के करतब दिखाने लगता है, जिससे ये लगे कि वह बहुत सिरीयस है। मसलन आँखे न खोलना, मुँह से लम्बी लम्बी साँस लेना और हाथ-पाँव पटकना।

घबराहट में कार वाले अंकल बाहर निकलकर सफाई भी देते हैं कि मेरा कोई कसूर नहीं है, किन्तु उगाही के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ कहाँ मानने वाले थे। अत: थाने कचहरी आदि का डर और गुंडागर्दी का रोब दिखाकर पच्चीस हजार का चूना लगवाकर कार मालिक बिना मार खाये उनके चंगुल से मुक्त हो पाता है। मजे की बात ये कि इस सारे घटनाक्रम में भीड़ तो बनी रहती है, किन्तु उसमें से कोई माई का लाल ऐसा नहीं निकलता जो बेगुनाह का साथ देने को तैयार हो। गुंडों के हौसले बुलंद होने का यह भी बहुत बड़ा कारण है।

कभी-कभी कार मालिक की जगह ड्रायवर धरा जाता है, अब उसके पास इतने पैसे तो रहते नहीं। अत: दो-चार सौ लेकर भी इसलिए छोड़ देते हैं कि चलो आज की दारू का इंतजाम तो हो गया, कल की कल देखेंगे।

रास्ता चलते यदि कोई राहगीर किसी वाहन से टकरा जाता है, तो इसलिए कपड़े झटक कर खड़ा हो जाता है कि गलती तो उसी की थी किन्तु घात में बैठे मुस्टंडे इसका भी फायदा उठा लेते हैं। वे राहगीर के पास आते हैं और उसे फटकारते है कि वो तेरे को टक्कर मारकर चला गया और तू यहाँ धूल झाड़ रहा है। चल बैठ पीछे और उसका पीछा करने में मदद कर हमारी। बस तू तो कराहते रहना और ऐसा दिखावा करना जैसे हाथ-पैर टूट गये। तेरी ऐक्टिंग से जो भी वसूली होगी उसमें से आधा तेरा। बस तू यह बताना कि हम तेरे पड़ौसी है।

चाहे बस का सफर हो या ट्रेन का चंद गुण्डे सबको धमकाकर सारा माल असवाब लूटकर ले जाते हैं और हम एक दूसरे को मुँह देखते हुए कि कोई तो निबटने की पहल करेगा, घटना को बड़े आराम से घटित हो जाने देते हैं। सिर्फ इतना ही नहीं सरे बाजार चेन स्नेचिंग, बैंक से पैसे लाने और जमा करने वालों से सरे आम लूट और दूर से खड़े हुए दृश्य देखते हुए लोग इतिहास के इसी राज को उजाकर करते हैं कि आखिर हम सैकड़ों वर्षो तक गुलाम क्यों बने रहे। क्योंकि मुट्ठी भर आक्रमणकारियों के समक्ष पूरे

thearyasamaj.org

देश का नतमस्तक होना किस बात का सूचक है? यकीन जानिए यदि ऐसा ही चलन चलता रहा तो दिन दहाड़े लूट की यह बेखौफ छूट हमें कहीं का नहीं छोड़ेगी।

फिक्र अभी बाकी है मेरे दोस्त कि, **वर्तमान पीढ़ी की यह विडंबना है कि इसने राष्ट्रीय ढोंग और ढकोसले के बीच में जन्म लिया है, जहाँ शुरू से आज तक कथनी और करनी में जमीन आसमान का अन्तर रहा है। हाथी के दाँतों तरह, खाने के अलग और दिखाने के अलग। यही इसने सीखा भी है। अतः लूट-खसोट और बेईमानी के माहौल में पला बढ़ा व्यक्ति पहले पहल तो मुफ्त में माल बटोरने वाला लुटेरा और देश को चूना लगाने वाला लुच्चा और बेईमान ही बनेगा।** बाद में कुछ अच्छे लोगों के सम्पर्क और माता-पिता से प्राप्त संस्कार से बदलाव आ जाए तो इसे चमत्कार ही समझना चाहिए। ●

जांगिड समाज के ताम्रपत्रधारी स्वतंत्रता सेनानी – श्री रामसहाय जी शर्मा 'जांगिड'

-नरेन्द्र कुमार शर्मा
उद्योग विहार, जैतपुरा, जयपुर (राज.)
चलभाष-९४१४४०८५६४

महासभा के सम्पोषक सदस्य, स्वतंत्रता सेनानी स्मृति शेष श्री रामसहाय जी शर्मा। आपका जन्म सन् १९१६ में श्री महादेव जी मिस्त्री के यहाँ दौलतपुरा (बैनाड़), तह.-आमेर, जयपुर में हुआ। श्री महादेव जी सोना-चाँदी, लोहा के गर्म काम के कुशल शिल्पीथे। आपकी प्राथमिक शिक्षा गाँव के मंदिर में जोशी जी के यहाँ हुई। घर में पिताजी के पास गांव के किसानों के लकड़ी के काम की प्रारंभिक शिक्षा के बाद उपार्जन के लिये १६ वर्ष की उम्र में अहमदाबाद चले गये। वहाँ पर तीन वर्ष तक काम किया। अहमदाबाद में १९३६ से १९३९ के मध्य महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आये और उनके प्रतिदिन प्रवचन, भाषण सुनने, स्वदेशी के विचार सुनने से प्रभावित हुए। देश को आजाद करने के उनके द्वारा चलाये आन्दोलन में भाग लिया। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन और गाँधी जी के असहयोग आंदोलन में विदेशी मिलों के कपड़ों की खोराबींसल में श्री खोरा जी के साथ होली जलाकर खादी पहनना शुरू किया। १९३९ में जयपुर आकर रेल्वे का ठेके में लकड़ी के स्लीपर खीचने का कार्य किया इस काम के पूरा होने के बाद बम्बई में साझेदारी से व्यवसाय शुरू किया जो ६-७ वर्ष यहाँ-वहाँ कमाई ठीक-ठाक चल रही थी कि दूसरे विश्व युद्ध की मार बम्बई में आ जाने की अफवाह से बम्बई छोड़कर वापस जयपुर में आकर काम शुरू किया। सर्वप्रथम बम्बई में साझेदार श्री बन्नालाल जी जाटॉलीवाले के साथ जाटोवाली में ही बिजली न होने और डीजल इंजनों से अनभिज्ञ होने के कारण स्टीम इंजन लगाकर वाबिन फैक्ट्री चलायी। इसके बाद अपने गाँव दौलतपुरा में सहकारी समिति संस्था १९५२ में बनाकर चर्खा, पेटी चर्खा, अम्बर चर्खा, तेल घाणी आदि गाँव में ही उद्योग लगाकर बनाने लगे। इसके बाद डीजल इंजिनों से चक्की और कुतर मशीने १९५५ में चालू की तथा ट्रेक्टरों पर मशीन लगाकर गाँव-गाँव कुतर कार्य किया। लड़कों को सबको शिक्षा पाने के लिये प्रेरित किया उन्हें पढ़ाया और गाँव में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए शाला खुलवाई, भवन बनवाया। इस समय क्षेत्र में प्रजा मण्डल की स्थापना हुई थी तो उसमें बढ़-चढ़ कर भाग लिया। गाँव में सभायें की तथा जागीरदारों के खिलाफ वातावरण तैयार किया। गाँव के तात्कालीन जागीरदार से बैठ-बैगार के लिये मुआफी करवाई और लगान कम करने के लिये मुकदमा लड़ा और जीत कर जनता को राहत दिलाई यह वाकया दरबार मानसिंह के राज में रावल संग्राम सिंह जी को कोर्ट में जीता गया। बाद में दूसरी आम जनता को छान छाप्पर वास्ते पूला-पानि फ्र ी में के लिये मुकदमा जीता। इस तरह जनता के लिए अनेक बार जागीरदारों से लड़ाई लड़ी सार्वजनिक सम्पर्क में रहते आजादी के बाद आमेर मण्डल में सक्रियता से कार्य किया। पंचायत राज की स्थापना से ही पहले पंच फिर उपसरपंच निर्विरोध और १९६५ से सरपंच पद पर लगातार १३ वर्ष रहे और जनता की निःस्वार्थ सेवा की। पंचायत समिति से कभी यात्रा भत्ता या स्वतंत्रता सेनानी पेंशन नहीं ली थी। आपके परिवार में पाँच पुत्र व दो पुत्रियाँ, पोते-पड़पोते भरा-पूरा परिवार है। श्री रामसहाय जी शर्मा जांगिड जिले में वयोवृद्ध सेनानी थे तथा इनको २६ जनवरी २००९ को राज्य सरकार ने

ताम्रपत्र प्रदान कर सम्मानित किया। चलने-फिरने में असमर्थता के कारण राज्य शासन के उच्चाधिकारियों द्वारा आपके निवास पर पहुँचकर आपको ताम्रपत्र ससम्मान प्रदान किया गया। ०४/१०/२०११ को ९८ वर्ष की आयु में आपका निधन होने पर राजकीय सम्मान में तिरंगा झण्डा ओढ़ाकर सलामी गार्ड ने गार्ड आफ ऑनर किया। राज्य सरकार की ओर से कलेक्टर साहब श्री नवीन महाजन ने पुष्प चक्र अर्पित किया। एस.डी.डी. आमेर. ए.सी.पी. साहब, क्षेत्रीय विधायक, परिजन तथा गणमान्य व्यक्तियों ने पुष्प चक्र चढ़ाये। मुखाग्नि के समय जवानों ने ३१ राउंड फायर से अन्तिम विदाई दी। दैनिक भास्कर और राजस्थान पत्रिका के संवाददाता में उपस्थित रहे व समाचार प्रकाशित किये।

जब शहिदों की अर्थी उठे धुम से, तो देश वालों तुम आँसू बहाना नहीं।
पर मनाओं, आजाद भारत का दिन, उस घड़ी हमें भूल जाना नहीं।।●

आर्य समाज, भिलाई का ५५वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, सेक्टर-६ भिलाई का त्रिदिवसीय ५५वाँ वार्षिकोत्सव १९ से २१ दिसम्बर २०१४ को सम्पन्न हुआ। इसके साथ ही इस अथर्ववेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहूति भी सम्पन्न हुई। इस कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर हवन भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम सियान सदन, नेहरू नगर में भी आयोजित किया गया था।

भारत के ख्याति प्राप्त विद्वानों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इनमें १६ गुरूकुल आश्रमों के संचालक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव जी, सहारनपुर से आचार्य शिव कुमार शास्त्री एवं दिल्ली से भजनोपदेशक पं. सहदेव 'सरस' प्रमुख थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ १९ दिसम्बर २०१४ को झण्डा फहराकर आचार्य शिवकुमार शास्त्री के कर कमलों से हुआ। रोज प्रातः हवन, भजन व प्रवचन तथा सायं भजन व प्रवचन दो सत्रों में आयोजित किए गये। दोपहर में शालेय छात्रों के लिए विशेष भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। अंतिम दिन यज्ञ की पूर्णाहुति दी गई। अंत में ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री रवि आर्य एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रधान श्री अवनी भूषण पुरंग द्वारा किया गया। **-रवि आर्य, मंत्री**

thearyasamaj.org

आर्य समाज बेरछा द्वारा

यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वैदिक सत्संग

दिनांक २८ से ३० अप्रैल २०१५ तक

म.प्र. के ख्यातनाम भजनोपदेशक

पं. हीरालाल आर्य ग्रहण करेंगे वानप्रस्थ

आर्य समाज बेरछा, जिला-शाजापुर (म.प्र.) द्वारा यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन **यज्ञ ब्रह्मा स्वामी डॉ. ओमानन्द जी सरस्वती चन्दूखेड़ी** के ब्रह्मत्व में आयोजित किया जा रहा है। भजन-उपदेश के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों के दुदुंभी बजायेंगी **आर्य जगत् की प्रखर वक्त्रि सुश्री अंजलि आर्या तथा वेदपाठी होंगे पं. सत्यपाल शास्त्री बेरछा तथा पं. सत्यपाल शर्मा देहरीं**-युवा भजनोपदेशक एवं पुरोहित।

इस अवसर पर मध्य भारतीय प्रतिनिधि सभा के पूर्व भजनोपदेशक जिनके द्वारा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शान्ति देवी के साथ स्थान-स्थान पर वैदिक धर्म प्रचार हेतु अपना जीवन समर्पित रहा जिनकी प्रेरणा से म.प्र. के अनेक स्थानों पर आर्य समाजों की स्थापना हुई और अनेक बंधु वैदिक धर्म की मुख्यधारा से जुड़े जिन्होंने अपने द्वारा क्रय की गई भूमि में से आर्य समाज बेरछा के लिये भूमि दान में ही नहीं दी किन्तु अपने सुपुत्र को गुरूकुल में शिक्षा दिलवा कर विरासत में अपने कार्य को और गति प्रदान की। **सरल, मृदुभाषी, सौम्य व्यक्तित्व के धनी पं. हीरालाल जी आर्य वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर अपने मानव जीवन को तो कृतार्थ करेंग**। साथ ही इस आयोजन की गरीमा में वृद्धि भी प्रदान करेंगे। धर्मनिष्ठ महानुभावों से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होने का अनुरोध आर्य समाज बेरछा द्वारा किया गया है।

वैदिक संसार प्रचुर मात्रा में साहित्य लेकर उपरोक्त आयोजन में उपस्थित होने का प्रयास करेगा।

निवेदक एवं सम्पर्क - सत्यपाल शास्त्री, ०९३००९६२२६४

सम्पन्न होगा १५६ दिवसीय चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं योग साधना शिविर

दिनांक ८ मार्च २०१५

गुरूकुल यमुनातट मंझावली, फरीदाबाद (हरियाणा) के **२१वें वार्षिकोत्सव उपलक्ष्य में स्वामी चित्तैश्वरानन्द जी की अध्यक्षता में** गुरूकुल परिसर में सात विशाल यज्ञ शालाओं की विशाल यज्ञ बेदियों पर **आचार्य विद्यादेव जी के यज्ञ ब्रह्मत्व में दिनांक ४ अक्टूबर २०१४ से प्रारम्भ हुए १५६दिवसीय चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं सवा करोड़ गायत्री मन्त्रों की आहुतियों के यज्ञ की पूर्णाहुति एवं योग साधना शिविर का समापन दिनांक ८ मार्च २०१५ को होने जा रहा है।**

गुरूकुल मंझावली हेतु बल्लभगढ़ रेल्वे स्टेशन के बाहर तिगाँव के टेम्पो मिलते हैं तथा तिगाँव से मंझावली ग्राम के टेम्पो मिलते हैं। मंझावली ग्राम से करीब 1 किलो मीटर की दूरी पर गुरूकुल स्थित है अपने निजी वाहनों से आने वाले यात्री पुराना फरीदाबाद होकर भी आ सकते हैं।

आर्य समाज् के इस भव्य आयोजन में देश के दूरस्थ स्थानों के ख्यातनाम संन्यासियों, गणमान्य पदाधिकारियों तथा बृहद संख्या में श्रद्धालुओं के पहुँचने तथा **वैदिक संसार मासिक पत्रिका के प्रकाशक की उपस्थिति** की प्रबल संभावना है।

सम्पर्क-जगतसिंह आर्य ०९८९११९७६६४

वैदिक सत्संग का आयोजन

दिनांक १ से ४ मार्च २०१५ तक

आर्य समाज हरनावदा, जिला-सिहोर (म.प्र.) द्वारा वैदिक सत्संग का आयोजन दिनांक १ से ४ मार्च २०१५ तक ग्राम हरनावदा में आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा के पद पर प्रतिष्ठित होगे **होशंगाबाद गुरूकुल के आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक** तथा भजनों के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों की प्रस्तुति देंगे **श्री श्यामवीर जी राघव-दिल्ली** सिहोर जिले के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र के हरनावदा ग्राम में ऋषि भक्तों की सक्रियता सराहनीय है देश के ख्यातनाम् संन्यासियों एवँ वैदिक सिद्धान्तों के उपदेश-भजन के आयोजन प्रवचन पूर्व में कई बार हो चुके हैं।

इस आयोजन का लाभ लेने का विनम्र अनुरोध आर्य समाज हरनावदा की कार्यकारिणी के द्वारा किया गया है। **ग्राम हरनावदा इन्दौर-भोपाल मार्ग पर ग्राम डोड़ी से लगभग १० किलोमीटर पर स्थित है।**

सम्पर्क - मांगीलाल आर्य (प्रधान) ७४८९३०५७८७

बाबूलाल जी आर्य ८४३५५४५११४

गुरूकुल गोमत (अलीगढ़) का वार्षिकोत्सव

दिनांक १३ से १५ मार्च २०१५ तक

श्री कृष्ण आर्ष गुरूकुल गोमत (अलीगढ़) का वार्षिकोत्सव दिनांक १३ से १५ मार्च २०१५ (शुक्र, शनि, रविवार) को धूम-धाम से मनाया जायेगा। त्यागी, तपस्वी व **गुरूकुलीय आन्दोलन के पुरोधा स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती के पावन सान्निध्य में** सामवेद पारायण महायज्ञ का अनुष्ठान किया जायेगा। उत्सव में उच्च कोटि के वैदिक विद्वान, भजनोंपदेशक व संन्यासी भाग लेंगे। **वैदिक संसार मासिक पत्रिका के प्रकाशक श्री सुखदेव शर्मा के उपस्थित होने की प्रबल संभावना है। आप भी इष्ट मित्रों सहित उत्सव में सादर आमन्त्रित है।**

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती - ८८५९८२७९१०, ८०५३३५५४९६

यज्ञ से निकलने वाली ऊर्जा पर शोध

महेश्वर (म.प्र.) के नर्मदा तट स्थित होम्योथैरेपी गोशाला में ३ फरवरी से पाँच दिनी अतिरात्र सोमयज्ञ होगा। इसमें देश-विदेश के लोग शामिल होंगे। विदेशी वैज्ञानिक यज्ञ से निकलने वाली ऊर्जा पर शोध करेंगे। उपकरणों के जरिये अलग-अलग क्षेत्रों में वायु और पानी में हुए बदलाव का आकलन करेंगे। इन आंकड़ों की मदद से निष्कर्ष निकाले जाएंगे। यज्ञ की तैयारियां शुरू हो गई है।

बुधवार को **ऑस्ट्रेलिया से दो और जर्मनी-पौलेंड से एक-एक विदेशी मेहमान आ गए है।** ऑस्ट्रेलिया के एरीन कीड बाउंड्रीवाल का निर्माण कर रहे हैं। उन्होंने बताया पेशे से वह कारीगार है और १५ साल से महेश्वर आ रहे हैं। यज्ञशाला बनाने में स्थानीय कारीगर भी सहयोग कर रहे हैं। गोशाला के सर्वजीत अभय परांजपे ने बताया यह छठा सोमयज्ञ है। सोमयज्ञ सात प्रकार के होते हैं। इस साल होने वाले सोमयज्ञ में यज्ञावार्मयचल हरिभाई आप्टे होंगे। साथ ही अन्य २३ ब्राह्मण गोवा से भी आ रहे हैं। **यज्ञों से वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। वहीं ईश्वर के गुणों का वर्णन भी गाया जाता है। यज्ञ के आयोजन से ऊर्जा का संचार होता है। इसकी जाँच विदेशी वैज्ञानिक करेंगे।** अतिरात्र सोमयज्ञ में मंत्रों से आहुतियाँ डाली जाएंगी। अलग-अलग स्थानों पर पानी रखकर और नर्मदा में ऑक्सीजन का स्तर जाँचा जाएगा।

thearyasamaj.org

टी.वी. चेनलों पर वैदिक प्रवचनों के प्रसारण

अपने आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ाने तथा अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिये टेलीविजन पर दिखाये जाने वाले निम्न कार्यक्रमों को देख कर लाभ प्राप्त करना न भूलें।

प्रसारण का कार्यक्रम

आस्था चैनल पर

समय	प्रवक्ता	उपदेश विषय
प्रातः ५ से ६ बजे तक	स्वामी रामदेव जी	योग-आसन प्राणायाम
प्रातः ६ से ७ बजे तक	आचार्य बालकृष्ण जी	संध्या (ब्रह्मयज्ञ)
	स्वामी रामदेव जी	अग्निहोत्र (देवयज्ञ)
रात्रि ८ से ९ बजे तक	स्वामी रामदेव जी	योग आसन या अन्य समारोह कार्यक्रम
रात्रि ९ से ९:३० तक	आचार्य बालकृष्ण जी	रोग रोगोपचार जड़ी बूटी
रात्रि ९:३० से १० बजे	आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी	दर्शन शास्त्रों एवं
	आचार्य आशिष जी	उपनिषदों पर उपदेश आत्म चिन्तन

आस्था भजन चैनल पर

सायं ७ से ७:२० तक	आचार्य धर्मवीर जी	वेद विज्ञान
सायं ७:२० से ७:३०	विभिन्न भजनोपदेशकों के	भजन वैदिक
सायं ७:३० से ७:५० तक	स्वामी विष्वङ् जी	योग दर्शन पर उपदेश
सायं ७:५० से ८:०० तक	भजनोपदेशकों के	भजन
सायं ८ से ८:३० तक	विचार टी.वी. की ओर से	वैदिक शिक्षा नाटक धारावाहिक
सायं ८:३० से ८:५० तक	आचार्य सत्यजित जी	दर्शन शास्त्रों पर उपदेश व प्रश्नोत्तर
सायं ८:५० से ९:०० तक	भजनोपदेशकों के	भजन
सायं ९ से ९:३० तक	आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी	उपदेश दर्शनों पर
	डॉ. वागीश जी आदि	उपदेश संस्कारों पर

संस्कार चैनल पर

रात्रि ८ से १० बजे के मध्य बीच-बीच में विभिन्न आचार्यों द्वारा उपदेश।

प्रस्तोता - शंकरलाल शर्मा (जांगिड), जयपुर (राज.)
चलभाष-९४१३२३६८४८

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

प्रवेश सूचना-सत्र २०१५-१६

छठी कक्षा (आयु ९ से ११ वर्ष) से कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल १००/-) भरकर ३१/०३/२०१५ तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं)

कन्याओं की लिखित प्रवेश-परिक्षा ५ अप्रैल २०१५ दिन रविवार को प्रातः ८:०० बजे होगी।

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

-सत्यानन्द मुंजाल, कुलपति-आर्य कन्या गुरुकुल, लुधियाना
दूरभाष - ०१६१-२४५९५६३

अंग्रेजी दवाओं से रोगों की नहीं मिटती जड़

भयानक रोगों से लड़ता है एक्यूप्रेशर : पपेन्द्र आर्य

अलीगढ़। एक्यूप्रेशर हैल्थ, प्रशिक्षण एवं उपचार संस्थान द्वारा आयोजित दीक्षांत समारोह में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय नई दिल्ली से प्रमाणित एक्यूप्रेशर कोर्स में ५३ छात्रों ने डिप्लोमा व डिग्री की उपाधियां तथा महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय जयपुर से १७ लोगों ने सर्टीफिकेट व डिप्लोमा कोर्स की उपाधियां प्राप्त की। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के निदेशक डॉ. पपेन्द्र आर्य द्वारा तथा आर्य जगत् के प्रख्यात महा उपदेशक आचार्य ब्रजेश जी महाराज व आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री जी के कर कमलों से ७० अभ्यर्थियों को उपाधि प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य ब्रजेश जी ने वेद मंत्रों के पाठ से प्रारम्भ किया। जे.एन. मेडिकल कॉलेज से पधारे डॉ. नूर अहमद ने चिकित्सा के चमत्कारी व प्रभारी परिणाम अपने अनुभव के आधार पर बताये। आगरा से डॉ. जुगेन्द्र सिंह ने कहा कि एक्यूप्रेशर से सटीक व प्रभावी सर्जरी भी की जा सकती है। दीक्षांत समारोह में सभी लोग अपने प्रमाण पत्र और डिग्री पाकर गद्-गद् हो गये। समारोह में उपस्थित अतिथियों ने भी चिकित्सा को पवित्र होने के कारण सराहा और जन सामान्य के लिए भी उपयोगी बताया। इस अवसर पर रामदीन आर्य, डॉ. सी. एल. वार्ष्णेय, इंजी. के.सी. वार्ष्णेय, देवनार भारद्वाज, पं. शिव स्वरूप शर्मा, चन्द्रपाल सिंह सिरोही, वैद्य चन्द्रकिशोर आर्य, डॉ. सुखपाल आर्य, डॉ. आर.के. गौड़, डॉ. वी.के. टन्टेला, विवेक यादव, सुरेश कुमार शर्मा, अनिल शेरसिंह आर्य, उपस्थित रहे।

वेद प्रचार का विशाल आयोजन जबलपुर में सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा जबलपुर के द्वारा जबलपुर के द्वारा वेद प्रचार का विशाल आयोजन दिनांक १४-१५ एवं १६ नवम्बर २०१४ को आदर्श नगर के मैदान में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के अंतर्गत ५१ कुण्डीय सर्वकल्याण महायज्ञ, सुमधुर भजन तथा माननीय गहन चिंतन परक वैदिक सिद्धांतमय प्रवचन प्रातः सायं दोनों समय आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् विचारक, प्रवक्ता, स्वनामधन्य आचार्य डॉ. वागीश जी शर्मा यज्ञतीर्थ एटा के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुआ। जबलपुर के सभी समाजों से पधारे सदस्यों व शहर के सैकड़ों गणमान्य जनसमूह के मध्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री सुधीर मेहता ने किया एवं आभार सभा के अध्यक्ष श्री बी.एम. नेहरा ने किया।

इस कार्यक्रम में आर्य समाज के धर्माचार्य पं. धीरेन्द्र पाण्डेय जी का अमूल्य योगदान रहा श्री अशोक रोहाणी (विधायक), श्री कैलाश गुप्ता (उद्योगपति) व डॉ. जितेन्द्र जामदार (प्रसिद्ध समाज सेवी), श्री गोपाल हरि सिंघल (N.R.I.), श्री अश्वनी सहगल (कटनी), श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव (खण्डवा), श्री अमरनाथ शर्मा (प्रसिद्ध समाज सेवी) इंजी. हृदय स्वरूप गुप्ता, श्री के. डी. कौशल, श्री रामविशाल पाण्डेय, श्री नरेन्द्र धमीजा, इंजी. अशोक नेहरा, डॉ. प्रकाश चन्द्र मिनोचा, श्री बैजनाथ मलिक, श्री सुरेश ग्रोवर, श्री नरेश ग्रोवर, श्री बी. आर. खेर, श्री प्रतीक नेहरा, श्री वीरेन्द्र धमीजा, डॉ. विमल अरोरा, श्री पी.सी. सोनी, श्री राजेन्द्र पटेल, श्री अरूण वासुदेव, श्री देवेन्द्र माहेश्वरी, श्री देवेन्द्र भाटिया (कुक्कू), श्री श्रवण कोचर, श्री समीर कोचर आदि सैकड़ों विशिष्टजनों की गरिमामयी उपस्थिति प्रत्येक कार्यक्रम में रही।

- पं. धीरेन्द्र पाण्डेय, धर्माचार्य, जबलपुर

thearyasamaj.org

आर्य जगत् की गतिविधियों का वैदिक संसार साक्षी बना

पौराणिकवाद के गढ़ में वैदिक संसार ने ओ३म् पताका फहराई

माता मोहिनी देवी मेमोरियल ट्रस्ट, गान्धीधाम के संस्थापक श्री नेमीचन्द जी शर्मा वरिष्ठ समाजसेवी एवं उद्योगपति द्वारा अपने गृहग्राम लाड़पुरा जिला-नागौर (राज.) में भव्य मन्दिर का निर्माण कर दिनांक - १२ से १६ जनवरी २०१५ तक प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया। श्री नेमीचन्द जी शर्मा ने अपने पिता श्री जँवरमल जी जांगिड तथा माता मोहिनी देवी शर्मा की स्मृति एवं पितृऋण को समर्पित उपरोक्त विशाल मन्दिर का निर्माण करवाया जिसका नामकरण **'मोहिनेश्वर महादेव'** के रूप में किया गया जिसमें शिव परिवार की मूर्तियों के साथ ही श्री जँवरमल जी एवं माता मोहिनीदेवी की भी मूर्तियाँ स्थापित की गई इस अवसर पर मन्दिर के समीप बस स्टेण्ड पर बने जल मन्दिर (प्याऊ) तथा विद्यालय में बनवाये गये कमरे व बरामदें का भी लोकार्पण किया गया।

देश के दूरस्थ स्थानों से ख्याति प्राप्त समाजसेवी, उद्योगपति, अधिकारीगण, स्नेहीजनों तथां समीपवर्ती ग्रामों की जनता का बृहद संख्या में आगमन ग्राम लाड़पुरा में हुआ। श्री नेमीचन्द जी द्वारा अतिथियों के विश्राम हेतु पुष्कर स्थित **'जगत पैलेस'** तथा अजमेर-नागौर मुख्य मार्ग पर स्थित ग्राम-थावला स्थित **मिनाक्षी होटल** तथा ग्राम-लाड़पुरा में विश्राम व्यवस्था एवं अतिथियों के आवागमन हेतु पर्याप्त वाहन व्यवस्था के साथ जल-पान, भोजनादि की सुव्यवस्थित उत्कृष्ट व्यवस्था सुदूर छोटे से ग्राम लाड़पुरा में जुटाई गई। पाँच दिवसीय इस आयोजन में भजन संध्या, कवि सम्मेलन तथा हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वर्षा सामान्य जन को आकर्षित करने वाले रहे।

पौराणिकवाद की अन्ध श्रद्धा में जकड़े इस आयोजन में **वैदिक संसार द्वारा ओउम् पताका लगे वेद प्रचार वाहन जो कि उपरोक्त आयोजन कर्ता श्री नेमीचन्द जी शर्मा द्वारा ही वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु वैदिक संसार इन्दौर को दान स्वरूप भेंट किया गया है के साथ बृहद शृंखला में वेदादि शास्त्र एवं वैदिक साहित्य तथा परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव पर आधारित १०० नाम, त्रैतवाद, ब्रह्मचक्र वैदिक संध्या विज्ञान, यज्ञ विज्ञान, तैतिक कोटि (प्रकार) के देवता, स्वामी दयानन्द सरस्वती के द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के अनमोल वचन सहित तथा स्वामी दयानन्द के विषय में देश के महापुरूषों द्वारा व्यक्त की गई सम्मतियाँ (एक ही बैनर में) उनके नाम व चित्र सहित श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्णचन्द्र जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा 'चित्र की नहीं चरित्र की पूजा करें' आदि अनेक बैनरों के साथ पहुँचकर बैनरों को प्रदर्शित करते हुए साहित्य का ३० फुट लम्बा विक्रय केन्द्र ठीक नवनिर्मित मन्दिर के सामने लगाया जाना सर्वाधिक विस्मयकारी एवं आकर्षित करने वाला रहा।** जिसके विषय में कवि सम्मेलन के एक कवि ने अपनी ओजस्वी वाणी में हिन्दुओं के विभिन्नता में भी समन्वय क्षमता से जोड़कर प्रस्तुत करते हुए कहा कि यहाँ इस आयोजन में भी देखिये कि एक ओर तो मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा हो रही है और दूसरी ओर जड़ मूर्ति पूजा के घोर विरोधी महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज द्वारा प्रकाशित साहित्य उपस्थितों को सुलभ करवाया जा रहा है।

आयोजन में वैदिक संसार इन्दौर के अतिरिक्त जोधपुर से आचार्य रामनिवास जी गुणग्राहक, सोजत सीटी से गीता स्वाध्याय पत्रिका के सम्पादक डॉ. श्रीलाल जी, श्री नरेन्द्र जी अल्पज्ञ, बहादुरगढ़ (हरियाणा) से सत्यपाल वत्स, अहमदाबाद से श्री घेवरराम जी आर्य, आर्यसमाज गान्धीधाम के पदाधिकारी श्री गुरूदत्त जी शर्मा, श्री मोहनलाल जी जांगिड, श्री खेमचन्द जी जांगिड, हरिद्वार से योगाचार्य श्री लोकपाल जी, वेद विद्या मन्दिर धरमपुरी के संयोजक श्री मोहनलाल जी शर्मा आदि ऋषि भक्तों ने पहुँचकर आपसी चर्चाओं के माध्यम से वैदिक धर्म सिद्धांतों को आगे बढ़ाया तथा वैदिक साहित्य को पढ़ने की प्रेरणा प्रदान की फलस्वरूप २० सत्यार्थ प्रकाश सहित करीब ८ हजार मूल्य का वैदिक साहित्य वैदिक ज्ञान से अनभिज्ञ बन्धुओं के हाथों में पहुँचा तथा वैदिक धर्म एवं साहित्य के विषय में लोगों ने जाना।

मन्दिर निर्माणकर्ता श्री नेमीचन्द जी शर्मा भी वैदिक सिद्धान्तों तथा आर्यसमाज से अनभिज्ञ नहीं है आर्य समाज गान्धीधाम की गतिविधियों में सक्रिय रूप से सहयोग करते हुए भाग लेते हैं तथा दैनिक अग्निहोत्र परिवार में होता है किन्तु कुछ पारिवारिक सदस्यों की भावनाओं का सम्मान रखने के कारण एवं परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त अत्यधिक उदारमन के होने से किसी को भी नहीं कहने की आदत न होने के कारण उपरोक्त मन्दिर का निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा आयोजन विवशतावश किन्तु खुले हाथों और मन से किया गया उपस्थित समस्त अतिथियों का पितवस्त्र गले में पहनाकर, शाल ओढ़ाकर व स्मृति चिन्ह प्रदान कर भाव भीना अभिनन्दन किया गया। वैदिक संसार पत्रिका के प्रकाशनार्थ विपुल सहयोग करते हुए उपस्थित अन्य पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के संवाददाताओं को भी सहयोग किया गया।

पिपलिया मण्डी में सम्पन्न हुआ यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वेद कथा

आर्य समाज पिपलिया मण्डी के द्वारा सप्त दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ तथा संगीतमयी वेद कथा का बृहद आयोजन दिनांक २९ दिसम्बर से ४ जनवरी २०१५ तक सम्पन्न किया गया।

इस आयोजन का शुभारम्भ समीपवर्ती ग्राम लूनाहेड़ा से होकर बालागुढ़ा में दो दिवस, नैनोरा में एक दिवस तथा समापन पिपलिया मण्डी में किया गया, समापन दिवस को रात्रि सत्र में कनघट्टी ग्राम में भी प्रवचन आयोजन रखा गया। ग्राम लूनाहेड़ा एवं कनघट्टी में आयोजन की व्यवस्था का भार युवा शक्ति ने वहन किया। दोनों जगह युवाओं का उत्साह प्रशंसनीय और धर्म-संस्कृति के उज्जवल भविष्य का शुभ संकेतक था। यजुर्वेद पारायण की यज्ञ ब्रह्मा आर्य जगत् की वेद विदुषी वैदिक प्रवक्ता सुश्री अंजलि आर्या, भजनोपदेशक पं. सत्यपाल सरल-देहरादून व पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया (भोपाल) थे यज्ञ की पूर्णाहुति ५१ कुण्डीय यज्ञ वेदी के माध्यम से २०४ यजमान दम्पतियों द्वारा प्रदान की गई आहुतियों से हुई। असमय वृष्टि से ऐसा प्रतित हुआ जैसे देवताओं द्वारा अमृत वर्षा की जा रही हो असमय हुई वर्षा से वातावरण में ठण्डक बढ़ जाने से आयोजन में कुछ व्यवधान अवश्य उत्पन्न हुआ किन्तु ईश्वरीय कृपा से समापन के पूर्व दिवस से वातावरण अनुकूल होकर समीपवर्ती ग्रामों एवं नगर से बृहद संख्या में उपस्थित धर्मनिष्ठ जनों ने एक इतिहास रच दिया। इस आयोजन की योजना से लेकर व्यवस्था आदि का सम्पूर्ण भार शारीरिक रूप से वयोवृद्ध किंतु आत्मिक बल से एक युवा को भी पीछे छोड़ देने वाले जिन्हें पिपलिया मण्डी के निवासी महात्माजी के नाम से सम्बोधित करते हैं पं. सत्येन्द्र जी आर्य के कन्धों पर था जिनके मजबूत कन्धे बन कर सहयोग कर रहे थे सर्वश्री शिवनारायण जी पाटीदार, वेदप्रकाश आर्य (प्रधान), गोपाल पाटीदार (उपप्रधान), भोलाराम जी (मन्त्री), रामगोपाल लोहार (कोषाध्यक्ष), रमेश पाटीदार, अर्जुन चावड़ा, श्री नरेश पाटीदार, बरखेड़ा पन्थ वाले मास्टर सा. श्री बन्शीलाल जी आर्य **(प्रतिनिधि वैदिक संसार)** हरिशंकर जी तथा समीपवर्ती ग्राम लूनाहेड़ा, नैनोरा, कनघट्टी, बालागुढ़ा, नारायणगढ़, कजाडा, बूढ़ा, टकरावद आदि के कार्यकर्ताओं का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। सैलाना, धार, देहरी, नागदा, नीमच, मन्दसौर, रतलाम, धामनोद (रतलाम), राजस्थान के प्रतापगढ़, छोटी सादड़ी, आदि स्थानों के आर्य समाज के पदाधिकारी गणों की तथा शासकीय चिकित्सालय शामगढ़-मेलखेड़ा के सर्वश्री नवीन जी सेठिया, श्री घनश्याम जी, श्री संदीप जी फरक्या, श्री निलेश जी शर्मा की साथियों सहित

thearyasamaj.org

गरिमामयी उपस्थित ने आयोजन की गरिमा में वृद्धि की।

वैदिक संसार इन्दौर द्वारा बृहद श्रृंखला में वैदिक साहित्य, चित्रपट्ट, हवन-सुर्वे आदि का विशाल विक्रय केन्द्र स्थापित कर वैदिक ज्ञान को घर-घर पहुँचाने हेतु प्रयास किया गया आर्य समाज पिपलिया मण्डी की ओर से साहित्य क्रेताओं को प्रोत्साहित करते हुए २५% राशि का छूट लाभ क्रय किये गये साहित्य पर स्वयं वहन कर दिया गया जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आये और लगभग ३५०००/- मूल्य का सहित्य विक्रय हुआ।

सुखद स्मृतियों को संजोए आयोजन का भव्यता पूर्ण समापन हुआ।

आर्यसमाज नीमच द्वारा अल्पकालिक आकस्मिक वैदिक सत्संग आयोजन सम्पन्न

आर्य समाज नीमच के जुझारू एवं कर्मठ मन्त्री मनोज सोनी तथा सहयोगी साथियों के प्रयासों से पिपलिया मण्डी पधारी आर्य जगत् की प्रखर वक्त्रि सुश्री अंजलि आर्या के व्यस्त कार्यक्रमों में से एक दिवस की स्वीकृति प्राप्त कर ५ जनवरी २०१५ को नीमच शहर में वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया।

अल्प काल में निर्धारित होने के बावजूद आयोजन के प्रचार-प्रसार एवं व्यवस्थाओं में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रही तथा सुन्दर आयोजन सोनी धर्मशाला नीमच में सम्पन्न हुआ तथा **आर्य समाज नीमच का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सुश्री अंजलि आर्या के मुख्य आतिथ्य में दिनांक २१ से २३ अप्रैल २०१५ तक मनाये जाने का निर्धारण किया गया।**

इस अवसर पर आर्य समाज नीमच के सौजन्य से २५% छूट का लाभ देते हुए वैदिक संसार इन्दौर द्वारा उपस्थितों को वैदिक साहित्य सुलभ करवाया गया।

पंच दिवसीय वैदिक ज्ञान गंगा सम्पन्न

दिनांक १५ से १९ जनवरी २०१५ तक पंच दिवसीय संगीतमयी वैदिक ज्ञान गंगा महोत्सव का आयोजन आर्य समाज आक्याँकलां के तत्वावधान में ग्राम-आक्याँकलां (चम्बल नदी के तट पर) तह.-ताल, जिला-रतलाम (म.प्र.) में पूर्ण हर्षोल्लास के साथ आर्य जगत् की प्रखर वक्त्रि सुश्री अंजलि आर्या के यज्ञ ब्रह्मत्व में तथा पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया (भोपाल) के मुखारविन्द से भजन-उपदेश की वैदिक ज्ञान गंगा प्रवाहित हुई।

इस अवसर पर **'वैदिक संसार'** द्वारा वैदिक साहित्य उपस्थितों को सुलभ करवाया गया। आर्य समाज आक्याँकलां के सौजन्य से साहित्य पर ३० प्रतिशत की छूट प्रदान की गई करीब दस हजार का साहित्य विक्रय हुआ।

आर्य समाज आक्याँकलां के प्रधान नन्दकिशोर जी जायसवाल, मंत्री-डॉ. रामलाल जी पांचाल, कोषाध्यक्ष-सूरपाल सिंह डोडिया, सदस्य-श्री गोरधनलाल जी पाटीदार, श्री मोतीलाल जी आंजना, श्री रामनिवास जी पाटीदार, श्री श्यामलाल जी पाटीदार, श्री गुलाबसिंह जी डोडिया, रघुसिंह डोडिया, सोहनभाई पाटीदार, परसराम जी पाटीदार तथा युवा कार्यकर्ताओं एवं ग्रामवासियों के सराहनीय सहयोग से आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ तथा इस दूरस्थ ग्रामीण अंचल वासियों द्वारा वैदिक धर्म ज्ञान लाभ प्राप्त किया गया। समापन दिवस पर लगभग करीब ४००० सदस्यों की उपस्थिति होकर भोजन प्रसादी की भी व्यवस्था आयोजकों द्वारा की गई।

आयोजन की सफलता एवं ग्रामवासियों के उत्साह को देखते हुए **आगामी आयोजन का निर्धारण दिनांक १५ जनवरी से २१ जनवरी २०१६ तक ७ दिवस का अभी से किया गया जो सुश्री अंजलि आर्या की उपस्थिति में सम्पन्न होगा।**

गायत्री महायज्ञ का द्वितीय आयोजन सम्पन्न

राजाभोज की धारा नगरी वर्तमान धार नगर के आर्यसमाज द्वारा नगर से १० किलोमीटर दूरी पर स्थित ग्राम दिलावरा में दूसरे वर्ष गायत्री महायज्ञ आयोजित किया गया। सुश्री अंजलि आर्या तथा बिजनौर उ.प्र. से पधारे पं. भिष्म जी के द्वारा वैदिक सिद्धान्तों को सरल रूप में प्रस्तुत किया गया। जिसका लाभ दिलावरा व समीपवर्ती ग्रामवासियों ने प्राप्त किया।

आर्य समाज धार के प्रधान लाखनसिंह जी, मंत्री-महेश जी आर्य, विक्रम जी जाट, सुनिल जी एवं अन्य युवा साथियों के सहयोग से आयोजन का व्यापक प्रचार-प्रसार तथा उत्कृष्ट व्यवस्थाए इस दूरस्थ ग्रामीण वनवासी अंचल में की जाकर वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज धार के सौजन्य से ३०% छूट का लाभ देते हुए वैदिक संसार इन्दौर द्वारा लगभग बीस हजार मूल्य का साहित्य विक्रय कर जन-सामान्य को वैदिक साहित्य सुलभ करवाया गया।

आयोजन में संभाग प्रभारी एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री गोविन्द राम जी आर्य, आर्य समाज देपालपुर की प्रधान श्रीमती सुमन आर्य, प्रभात आयुर्वेदिक फार्मेसी देवास के डॉ. प्रेमनारायण जी पाटीदार, वेद विद्या मन्दिर धरमपुरी के संयोजक श्री मोहनलाल जी शर्मा की गरीमामयी उपस्थिति रही।

यजुर्वेद व सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा (रजि.) के तत्वावधान में १६ दिसम्बर से २१ दिसम्बर तक पलवल (हरियाणा) में यजुर्वेद व सामवेद पारायण महायज्ञ व वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रदेव जी ने यज्ञ ब्रह्मा की भूमिका निभाई श्री कृष्ण आर्ष गुरूकुल गौमत (देवालय) जिला अलीगढ़ के विद्यार्थियों ने सस्वर वेद पाठ किया। यज्ञ के माध्यम से पाखण्डवाद, कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी आदि बुराईयों के खिलाफ जन जागरण किया गया। पूर्णाहुति के पावन अवसर पर **''आध्यात्मिक चिन्तन सम्मेलन''** का आयोजन किया। इस अवसर पर **''वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा''** के प्रवक्ता व गुरूकुल गौमत के आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने कहा यज्ञ की समस्त क्रियाऐं हमें यह संकेत करती है कि अपने जीवन के व्यवहार व विचारों में त्याग भावनाओं को जगाओं अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु दूसरों के पदार्थो का प्रयोग मत करो बल्कि दूसरों की भलाई के लिए अपने पदार्थो का त्याग कर दो क्योंकि लेने की वृत्ति स्वार्थ वृत्ति है और देने की प्रवृत्ति त्याग वृत्ति है। लेने की वृत्ति (भावना) राक्षसी वृत्ति कहलाती है। देने की वृत्ति देववृत्ति कहलाती है। पहले अन्यों की आवश्यकताओं की ओर देखो फिर अपनी ओर देखो, बस यही से अध्यात्मवाद का प्रारम्भ होता है। पाप का त्याग व पुण्यों का अर्जन करते-करते अपना लोक भी सुधार लीजिए और परलोक भी। कर्म में उसका फल, पुरूषार्थ में उसका प्रारब्ध (भाग्य) छिपा हुआ होता है। ईश्वर को पाने के लिए हृदय में तड़प एवं दर्द उत्पन्न करना अत्यन्त आवश्यक है तब तक विरह की अग्नि नहीं जलती और प्रेम की प्यास नहीं लगती, जब तक प्रभु मिलन की आशा नहीं की जा सकती।

यजुर्वेद-सामवेद पारायण महायज्ञ अमरशहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल व अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को समर्पितसभा प्रधान सुमेर सिंह चौहान, श्री चन्द्रपाल आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री पूर्णा सिंह राणा, श्री तुलाराम शर्मा, श्री राजपाल दहिया, श्री रामप्रसाद फोरमैन, श्री देवीसिंह आर्य, श्री मेघराज आर्य, श्री कृष्ण चन्द्र खेत्रपाल, श्री वी.के. आर्य, श्री रविन्द्र छाबड़ा प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा पलवल, प्रो. जय प्रकाश आर्य श्री चन्द्रपाल वर्मा आदि का कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा स्वामी यज्ञेश्वरानन्द जी सरस्वती, स्वामी कवितानन्द जी, स्वामी निर्भयानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी मथुरा, स्वामी राममुनी, स्वामी प्रकाशानन्द जी, स्वामी ब्रह्ममुनि जी, श्री सोममुनि जी, वानप्रस्थी, स्वामी महानन्द जी आदि सन्तों की गरिमामयी उपस्थिति में यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। इस अवसर पर इक्कीस कुण्डीय यज्ञ व ऋषि लंगर भी किया गया।-**डॉ. धर्म प्रकाश आर्य**

thearyasamaj.org

गृह प्रवेश के साथ वैदिक सत्संग कार्यक्रम का आयोजन सम्पन्न

दिनांक १८/०१/१५ को मन्त्री आर्य समाज रावतभाटा, श्री ओमप्रकाश आर्य का चारभुजा, बरकत नगर में निर्मित आवास **''आर्य निलयम''** में वैदिक रीति से गृह प्रवेश हुआ। श्री मोहनलाल जी द्वारा अग्निहोत्र सम्पन्न करवाया गया। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा से पधारे श्री अर्जुनदेव जी चड्ढ़ा श्री शोभाराम जी आर्य व आर्यसमाज रावतभाटा के रेशमपाल सिंह, नरदेव आर्य, शैलेष, रमेशचन्द्र भाट, विनोद त्यागी व सभी पधारे अतिथियों के सानिध्य में वेद मन्त्रों के साथ गृह प्रवेश सम्पन्न हुआ।

श्री अर्जुनदेव जी चड्ढ़ा की अध्यक्षता में वैदिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संरक्षक आर्य समाज रावतभाटा श्री रेशमपाल सिंह ने कहा कि हमें यह दुर्लभ मानव जीवन मिला है, अपने जीवन का निश्चित उद्देश्य बनायें, ईश्वरीय वेद ज्ञान को अपने आचरण में उतार कर यज्ञमय जीवन जियें। अपने मधुर स्वर में भजन **''कण-कण में बसा प्रभु देख रहा, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो''** प्रस्तुत किया। लस्सानी से पधारे श्री मोहनलाल जी ने बताया की गुरूजी ओम प्रकाश आर्य के सानिध्य में वेद ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा मिली व जाना की मानव जीवन गणित की संख्या रेखा के शून्य स्तर पर होता है, पन्च महायज्ञों को अपने जीवन में अपना कर शून्य से धनात्मक यानि ईश्वर की ओर बढ़े। पाप कर्मो से ऋणात्मक यानि अधम योनी का जीवन प्राप्त होगा।

श्री अर्जुनदेव जी चड्ढ़ा ने अपने अध्यक्षिय संबोधन में कहा कि जिस घर में बुजुर्गों का वास व सम्मान होता है वही सच्चा तीर्थ है। मन के मन्दिर को अच्छे विचारों से पवित्र रखें तो घर में स्वर्गिक आनन्द प्राप्त हो सकता है। अपनी कर्मभूमि आर्य समाज रावतभाटा के विकास को देखकर हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। उन्होंने बताया की समाज का उपकार करना आर्य समाज का एक प्रमुख नियम है व मानवता की भलाई के लिये संघर्ष करना मेरे जीवन का प्रमुख उद्देश्य है। कोटा से पधारे शोभाराम जी आर्य, श्री रामप्रसाद जी याज्ञिक ने भी उद्बोधन दिया तथा रावतभाटा के युवा साथी आकाश ने भजन की तथा शारदा साहित्य मन्च रावतभाटा के कविगण श्री दिनेश जी छाजेड़, श्री आर. सी. वर्मा, श्री गोविन्द प्रसाद, श्री अरूण भट्ट, श्री मदनलाल आदि ने सुन्दर काव्य रचनाओं की प्रस्तुति से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

कोटा आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य समाज रावतभाटा द्वारा ओमप्रकाश आर्य का सम्मान किया गया। आर्य समाज परिसर, रावतभाटा में निर्माण कार्य में आर्थिक सहयोग के लिये श्री रेशमपाल सिंह का सम्मान किया गया। श्री योगेश आर्य ने मन्च का संचालन किया और बताया की हम वैदिक संस्कारों को अपनाकर ही समाज व देश की एकता को अक्षुण बनाये रख सकते हैं। प्रधान श्री नरदेव जी आर्य द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ व भोजन मंत्र के बाद सहभोज हुआ।

सरल व सहज व्यक्तित्व के धनी श्री ओमप्रकाश जी आर्य की पहचान समाज में एक आदर्श आर्य समाजी के रूप में है व उनके ज्ञान से प्रभावित व्यक्ति उन्हें **'गुरूजी'** के संबोधन से संबोधित करते है। आवास पर वैदिक कलैंडरों का प्रदर्शन किया गया व रास्ते में ओम ध्वजा को कतार में लगा कर अतिथियों का मार्गदर्शन किया गया। इस प्रकार गृह प्रवेश के माध्यम से समाज में वैदिक विचारधारा के प्रसार का कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

सघन साधना शिविर – प्रथम त्रैमासिक गतिविधियाँ व उपलब्धियाँ

दिनांक ०१ अक्टूबर २०१४ से ३० सितम्बर २०१५ तक

दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़ के आचार्य श्रद्धेय स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में शुरू हुआ एक वर्षीय सघन साधना शिविर ईश्वर की असीम कृपा गुरूजनों के आशीर्वाद से निर्विघ्न रूप से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है। शिविर के प्रारम्भिक काल में ही साधकों को पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज द्वारा आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

साधकों को एक वर्ष में से तीन माह कम होने की वेदना होती है तो दूसरी ओर दोषों की न्यूनता देख मन में प्रसन्नता एवं उत्साह की अनुभूति होती है। शिविर को एक विशेष गति देने में **''मौन साधना''** साधकों के लिए अंतर्मुखी होने में एवं प्रत्येक विषय को पूर्ण धारण करने में अत्यन्त सहयोगी सिद्ध हो रही है। सुव्यस्थित दिनचर्या प्राकृतिक वातावरण एवं अनुकूल जलवायु भी साधकों में वैराग्य एवं ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य को प्रोत्साहित कर रही है।

प्रत्येक साधक प्रात: काल की ब्रह्मवेला में उठकर मंत्रोच्चारण भ्रमण व्यायामादि नित्यकर्मों से निवृत्त होकर ईश्वर उपासना से मन को स्थिर एवं प्रसन्नचित्त करके यज्ञानुष्ठान के द्वारा पर्यावरण को शुद्ध एवं पवित्र करता है। तत्पश्चात् वेदपाठ इसी क्रम को आगे बढ़ाता है भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा भी ज्ञान की गंगा का प्रवाह आरम्भ होता है। ध्यान प्रशिक्षण द्वारा आत्मा-परमात्मा के मिलन का शाब्दिक एवं प्रायोगिक अभ्यास का प्रशिक्षण दिया जाता है। विवेक वैराग्य के सत्र में ईश्वर-जीव-प्रकृति आदि अनेक विषयों की चर्चा की जा चुकी है। वर्तमान में निदिध्यासन के अनित्यता के विषय की प्रमुखता है। न्यायदर्शन की कक्षा का भी सम्पादन किया जाता है।

सायं भोजन पश्चात् विवेक-वैराग्य के श्लोकों का उच्चारण के उपरान्त आत्मनिरीक्षण का सत्र होता है। जिसमें साधक अपनी सम्पूर्ण दिनचर्या एवं उनमें हुई उपलब्धियों व त्रुटियों को सभी के समक्ष प्रस्तुत करता है। तत्पश्चात् गुरू के द्वारा उनका मार्गदर्शन किया जाता है। इसी सत्र में जीवन सम्बन्धित विषयों को अत्यन्त रूचिकर ढंग से रखा जाता है और अन्त में इन विषयों को श्रद्धेय स्वामी जी ईश्वर से जोड़ देते हैं। **''सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है''** इस कथन की पुष्टि स्वामी जी के द्वारा की जाती है।

साधकों के मन में जो भी जिज्ञासा उत्पन्न होती है उनका सामूहिक एवं व्यक्तिगत समाधान गुरूजनों के द्वारा किया जाता है। शयनकालीन मंत्रोच्चारण द्वारा ईश्वर का धन्यवाद एवं गुरूजी का भी धन्यवाद कर सभी शयन के लिए प्रस्थान करते हैं। आशा है सभी साधकगण स्वस्थ रहते हुए विद्वानजनों की संगत एवं ज्ञानपूर्ण प्रवचनों के माध्यम से अपने ज्ञान को आलोकित कर परम लक्ष्य को प्राप्त कर पायेंगे।

अनाथ ललनाओं को नाथ मिले, आर्यसमाज ने दिया सुखमय जीवन का आशीर्वाद

कोटा, 7 दिसम्बर। कोटा की राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित श्री करणीनगर विकास समिति में पल-बढ़कर बड़ी हुई दो लड़कियों के विवाह समारोह में आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढ़ा, आर्य विद्वान डॉ. के. एल. दिवाकर, आर्य समाज विज्ञाननगर के प्रधान जे. एस.

thearyasamaj.org

दुबे, गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय व राजीव आर्य ने वेदमन्त्रों के उच्चारण के साथ नव दम्पत्ति को आशीर्वाद दिया तथा कम्बल, शॉल, स्वेटर, कार्डीगन, साड़ी आदि उपहार स्वरूप भेंट किए।

लक्ष्मी व रानी तीन वर्ष की उम्र से ही इस संस्थान में रह रही थीं जिनकी आयु १८ वर्ष से ऊपर होने के पश्चात् लक्ष्मी का विवाह जयपुर निवासी जितेन्द्र जैन एवं रानी का विवाह कोटा निवासी विनोद पोरवास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कोटा की विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि, प्रतिष्ठित गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। संस्थान की संचालिका राष्ट्रपति पुरूस्कार प्राप्त श्रीमती प्रसन्ना भण्डारी ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया तथा संस्थान के अध्यक्ष सी. एम. सक्सेना ने सभी का आभार व्यक्त किया।

-अरविन्द पाण्डेय

पृ. २४ का शेष **जन्मपत्री तथा भविष्य वाणियां....**

तो महात्मा जी ने बताया कि मुझे तो यह बात ज्योतिषी ने बतलाई थी। इस घटना ने एक मास तक लोगों को आश्चर्य में डाले रखा।

लतालेवाले महात्मा बिशनदास - पं. बिशनदास जी लताले वालों को ज्योतिषियों ने बतलाया था कि आपकी आयु ६९ वर्ष है, परन्तु आप ४७ वर्ष की आयु में परलोक सिधारे।

लाला सालिगराम जी जाखल मण्डी हरियाणा को पं. नन्दकिशोर मेरठ के भृगुसंहितावाले ज्योतिषी जी ने यह बतलाया था कि तुम विक्रम सम्वत् १९८२ में स्वर्गवासी हो जाओगे। परन्तु वह आज-पर्यन्त (सम्वत् १९९७ में भी) ठीक-ठीक जीवित है।

भृगुसंहितावालों की गप्प - महाशय हंसराज जी आर्य, मन्त्री आर्यसमाज जाखल को इन्हीं पं. नन्दकिशोर जी भृगुसंहितावालों के सुपुत्र ने सुनाम के निकट गुजराँ ग्राम में बतलाया था कि तुम्हारे तीन पुत्र होंगे और तीनों जीवित रहेंगे। परन्तु अब तक दो पुत्रों का जन्म हुआ है और दोनों ही मर गए हैं, वे भी ज्योतिषी जी के बतलाने से पहले ही। यह बात ग्यारह वर्ष पूर्व गुजराँ में ज्योतिषी जी ने महाशय जी को भी बताई थी।

ज्योतिषी का पुत्र - पिण्ड दादन खाँ के ज्योतिषी पं. अमरचन्द का पुत्र पाँच वर्ष से गुम है, परन्तु वह अब तक अपने पुत्र का पता नहीं लगा सके।

जन्म का समय व भोग - ये ज्योतिषी लोग जो जन्मपत्री बनाते हैं, यह उस समय को ध्यान में रखकर बनाई जाती है कि जिस समय में किसी मनुष्य का जन्म होता है, और लोगों को आगे चलकर जो दुःख व सुख प्राप्त होने हैं, वे बतलाते हैं। वे प्रत्येक व्यक्ति के नाम के प्रथम अक्षर के अनुसार उसके वर्ग व राशि को निकालकर उस राशि का सुख व दुःख बतलाते हैं।

एक क्षण में अनेक का जन्म अब यह बात विचारणीय है कि संसार में जिस क्षण एक राजा के घर पुत्र का जन्म होता है, उसी क्षण एक रंक के घर भी एक बालक का जन्म होता है। भाव यह है कि उसी एक क्षण में इस सृष्टि से अनेक जीवन विभिन्न योनियों में जन्म लेते हैं। यदि जन्म का समय ही किसी जीव के सुखी-दुःखी होने का कारण है तो ऐसे सब बच्चों का भाग्य एक समान होना चाहिए, परन्तु संसार में हमें ऐसा दिखाई नहीं देता।

राशि से भोग का शुद्ध भ्रम - यदि संसार में किसी के नाम के प्रथम अक्षर से ही उसके भविष्य के सुख-दुःख का चल सकता है तो क्या जिन मनुष्यों के नाम के प्रथम अक्षर एक-से हैं, उनके सुख-दुःख आदि भोग क्या एक समान होते हैं? कदापि नहीं, कदापि नहीं। ●

वेदकथा एवं राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति आर्य समाज कोटा द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार कार्यक्रम के तहत कोटा जिले के इटावा कस्बे में संगीतमय वेदकथा तथा ग्यारह कुण्डीय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ का आयोजन किया गया। २७ एवं २८ दिसम्बर २०१४ को कोटा शहर से ८० किलोमीटर दूर आयोजित वेदकथा में आचार्य अग्निमित्र शास्त्री द्वारा अपने प्रवचन में वेद, ईश्वर, जीव, प्रकृति, यज्ञ, धर्म, तथा आध्यात्म सम्बन्धी वैदिक सिद्धान्तों की सरलतम रीति से जानकारी दी तथा वेदानुकूल धर्ममार्ग पर चलने का आव्हान किया।

वेदकथा में अलीगढ़ (उ.प्र.) से पधारे आर्य समाज के ख्याति प्राप्त भजनोपदेश पं. भूपेन्द्र सिंह आर्य एवं लेखराज शर्मा ने अपने सुमधुर भजनों एवं गीत के माध्यम से आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों तथा कार्यों से अवगत कराया। अग्निमित्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में ११ कुण्डीय राष्ट्रसमृद्धि महायज्ञ में उपस्थित यजामानों ने विश्व शांति के निमित्त अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त की विशेष आहूतियाँ दी। पं. क्षेत्रपाल आर्य तथा पं. श्योराज वशिष्ठ ने यज्ञ में ऋत्विक कार्यों का निर्वहन किया।

जिला आर्य सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढ़ा ने कहा कि गाँवों में वेद का प्रचार अत्यन्त जरूरी है। समाज में व्याप्त अन्धकार वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञान से ही दूर होगा। आर्य समाज द्वारा वैदिक साहित्य की स्टॉल लगाई गई। जिसमें लोगों ने बड़ी संख्या में सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक साहित्य खरीदा। कथा पाण्डाल में पर्यावरण संरक्षण, जल बचाओ, भूमि बचाओ, यज्ञ तथा ऋषि के जीवन की जानकारी देने वाले चित्र, बैनर तथा पोस्टर लगाये गये थे।

आयोजन में उल्लेखनीय सहयोग करने के लिए इटावा के श्री नरेन्द्र नागर, राजेन्द्र गौड़ एवं सुनील सोनी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट देकर तथा दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। समिति के संगठन मंत्री एडवोकेट चन्द्रमोहन कुशवाह ने विद्वानों, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं तथा श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया।

-अरविन्द पाण्डेय

शोक-सूचना

श्रीमती केसर देवी जांगिड (बरनेला) धर्मपत्नि श्री रामेश्वर जी जांगिड (रोसांवा) का दिनांक ४ नवम्बर २०१४ को सरदारपुरा खुर्द, जि.-नागौर में ७३ वर्ष की आयु में दुःखद निधन हो गया। आप हंसमुख, मिलनसार, धर्मनिष्ठ कर्तव्य परायण, मृदुभाषी महिला थी, आप अपने परिवार में श्री बाबूलाल - श्रीमती सन्तोष, श्री बिरदीचन्द - श्रीमती कमला, श्री बालकृष्ण - श्रीमती मैना - पुत्र एवं पुत्रवधु - श्रीमती प्रेमलता - श्री महावीर जी, श्रीमती हेमलता - श्री अशोक जी पुत्री - दामाद एवं पौत्र, पौत्रियाँ, पड़पौत्र, पड़पौत्रिया दोहते-दोहतियों का भरा पुरा परिवार छोड़ गई, आपके शुद्धि दिवस पर आपके भान्जे **आर्यसमाज उदयपुर के पुरोहित पं. अनन्त देव शर्मा बरवाड़िया द्वारा शुद्धि एवं शान्ति यज्ञ सम्पन्न किया गया,** इस अवसर पर समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर रोसावा परिवार की ओर से सामाजिक संस्थाओं को दानस्वरूप राशि भेंट की गई।

-पं. अनन्तदेव इन्द्रदेव बरवाड़िया, उदयपुर

thearyasamaj.org

आर्य जगत् की सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों की चित्रावली

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ के निर्देशक स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक द्वारा दि. 17–18 एवं 31 दिस. को सावरकांठा एवं भड़ूच जिले में विद्यार्थियों को जीवन निर्माण संबंधी उपदेशों से विभूषित किया गया

श्री ओमप्रकाश जी आर्य मंत्री आर्य समाज रावतभाटा के नवनिर्मित गृह आर्य निलयम्, का वैदिक रीति से गृह प्रवेश सम्पन्न

विस्तृत विवरण पृष्ठ 41 पर

चि. नवदीप संग सौ.कां. रिया परिणय सूत्र में बंधे

कहा जाता है कि देश–काल अनुसार परिस्थितियाँ भिन्न होती है। यह बिल्कुल सत्य है वर्तमान में अर्थ के पीछे भागम–भाग के युग में हरियाणा तथा समीपवर्ती दिल्ली, राजस्थान जैसे प्रांतों में सर्वाधिक दहेज प्रथा का प्रचलन है ऐसे स्थान पर एकमात्र संस्कारवान, रोजगाररत्, बलिष्ठ, सुंदर सुशिक्षित, इंजीनियर पुत्र के शासकीय सेवानिवृत्त पेंशनधारी पिता मात्र 1 रुपया सम्मान प्रतीक स्वीकार कर कन्या पक्ष को उपकृत करें यह साहस वैदिक आध्यात्मिक ज्ञान से दृढ़ कोई दिव्यात्मा ही कर सकती है। ऐसा ही एक विवाह संस्कार ऋषि दयानन्द भक्त सेवा निवृत्त प्राचार्य, वैदिक रचनाओं के सृजनकर्ता, जांगिड ब्राह्मण प्रादेशिक सभा हरियाणा के सांस्कृतिक मंत्री श्री देशराज जी आर्य, रेवाड़ी (हरि.) के पुत्र चि. नवदीप का विवाह संस्कार दि. 17–1–2015 को सतनाली मण्डी, जिला– महेन्द्रगढ़ (हरि.) निवासी छाजूराम जी जांगिड की सुपुत्री सौ.कां. रिया से पूर्ण वैदिक अनुसार स्वामी जीवानन्दजी, गोशाला नांगलिया रणमोख, जिला–रेवाड़ी तथा पं. सुखदेव जी आर्य, रेवाड़ी द्वारा सम्पन्न करवाया गया।

विवाह संस्कार एवं आशीर्वाद समारोह पर बृहद् संख्या में आर्य जगत् के विद्वान्, संन्यासीगण, समाजसेवी, उद्योगपति, अधिकारीगण तथा स्नेहीजनों ने उपस्थित होकर नवयुगल को आशीर्वाद प्रदान किया। महेन्द्रगढ़ से स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, श्री सूरजभान ठेकेदार जिला गुड़गांव से श्री सोहनलाल शर्मा, श्री तुलसीराम शर्मा, दिल्ली से कैप्टन ओमप्रकाश, जुणायताकला आश्रम से महंत रामदेव जी, जिला रेवाड़ी के श्री आसाराम शर्मा, महाशय सुखराम आर्य, श्री रोशनलाल आर्य, श्री गजानन्द आर्य, श्री दयाराम जांगिड, हांसी के श्री तेलूराम जांगडा, मुण्ढालखुर्द से श्री महावीर जागिड, भिवानी से श्रीराम जांगिड, खण्डेला से श्री नंदलाल जांगिड, सिरसा से डॉ. कंवरसिंह, इन्दौर से वैदिक संसार पत्रिका के प्रकाशक श्री सुखदेव शर्मा प्रमुख रुप से उपस्थित रहे।

विस्तृत विवरण पृष्ठ 42 पर

कोटा की अनाथ युवतियों को मिले नाथ

इटावा (कोटा) में वेद कथा एवं राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ में मंचस्थ विद्वान एवं आहुतियाँ प्रदान करते यजमान दम्पतियाँ

विस्तृत विवरण पृष्ठ 42 पर

thearyasamaj.org

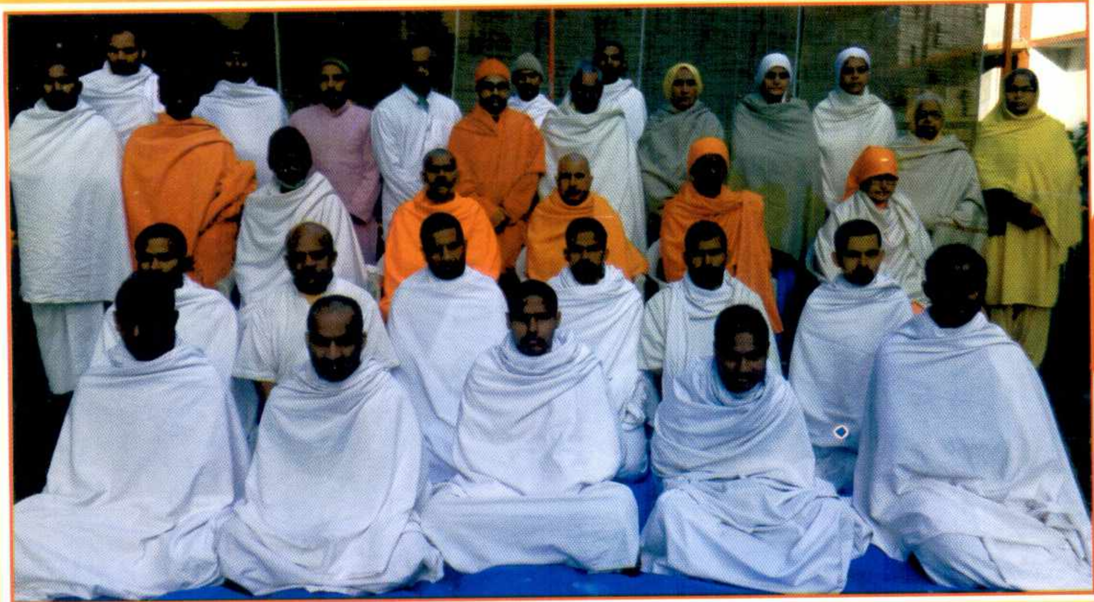

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ द्वारा संचालित सघन साधना शिविर के आचार्यगण एवं शिविरार्थी साधकगण

गुरुकुल प्रभात आश्रम , भोला की झाल(मेरठ) के वार्षिकोत्सव पर आयोजित वैदिक वांगमय संगोष्ठी

आर्य समाज पिपलिया मण्डी, जिला –मन्दसौर (म.प्र.) द्वारा आयोजित वेदकथा एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति

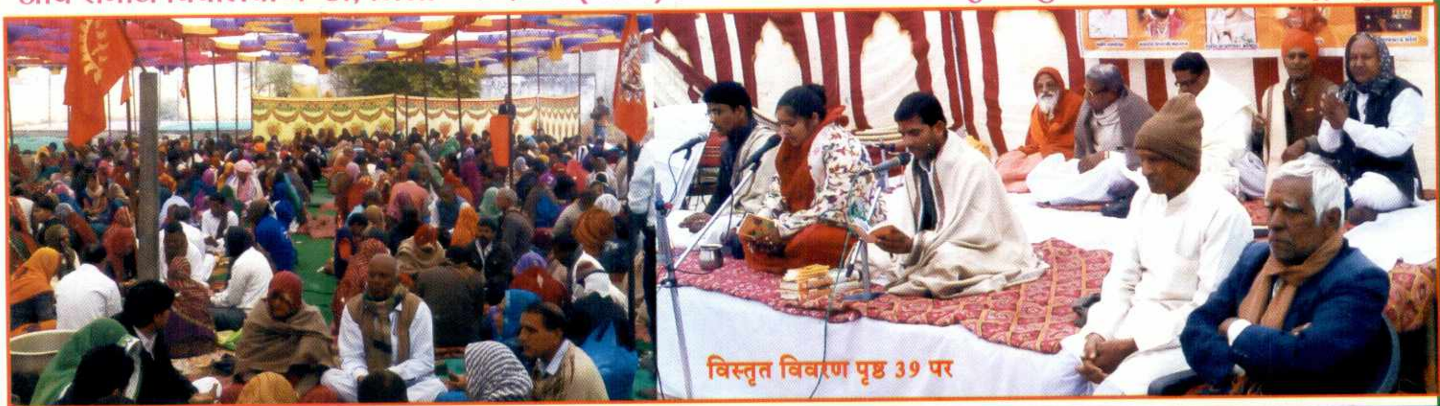

विस्तृत विवरण पृष्ठ 39 पर

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित, १२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित, संपादक - गजेश शास्त्री, चलभाष - ०९९९३७६५०३१, कार्यालय - ०७३१-४०५७०१६